

एस्ट्रोसेज पत्रिका

कार्तिक पूर्णिमा
पर महापुण्य
क्रमाएं

सूर्य उपासना का
पर्व छठ

नवंबर के
गोचर जिंदगी
बदलेंगे ?

पर्यटन की
दृष्टि से अद्भुत
है अयोध्या



भाग्य के आइने में 'कर्मयोगी'



हर मर्ज़ का इलाज़ रुद्राक्ष



जानिए 'इस्कॉन' आंदोलन

एस्ट्रोसेज पत्रिका

नवम्बर, 2019

वर्ष : 1 अंक : 2

प्रधान सम्पादक
पुनीत पाण्डे

सहायक सम्पादक - मृगांक शर्मा

सलाहकार सम्पादक - पीयूष पाण्डे

डिजाइनर - शान्तनु निगम
कोमल सक्सेना

संयोजक - विजय पाठक
रवि ठाकुर
लीशा चौहान

मार्केटिंग प्रमुख - हरीश नेगी
विशाल भारद्वाज

सम्पादक से पत्राचार हेतु पता

सम्पादक, एस्ट्रोसेज पत्रिका

A -139, सैक्टर 63, नोएडा - 201307.(India)

Phone : +91 9560670006

Mail : info@astrosage.com

Website : www.astrosage.com



संपादकीय



मित्रों,

एस्ट्रोसेज डॉट कॉम ऑनलाइन संसार में आपकी विशिष्ट साथी है, और आपके इसी प्रेम के कारण हमने अक्टूबर माह में एक प्रयोग किया 'एस्ट्रोसेज पत्रिका' के रूप में। पहले ही अंक का जिस तरह सुधि पाठकों ने स्वागत किया, वो आनंद से भर देने वाला है। ज्योतिष, धर्म और आध्यात्म से जुड़े गुणवत्तापूर्ण आलेखों को न केवल आप सभी ने पढ़ा बल्कि शानदार प्रतिक्रिया भी दी। ज्योतिष पत्रिकाओं की भेड़चाल के बीच एस्ट्रोसेज अपनी प्रतिष्ठा के अनुसार इस पत्रिका स्थापित करने को आतुर है। आप सभी का सहयोग अपेक्षित है। पत्रिका का दूसरा अंक भी निःशुल्क और प्रयोगात्मक है। आप सभी की प्रतिक्रियाएं ही इसके भविष्य का निर्धारण करेंगी। आप हमें

magazine@ojassoft.com

पर अपनी प्रतिक्रियाएं भेज सकते हैं

छठ की शुभकामनाओं के साथ
आपका

पुनीत पाण्डे (प्रधान सम्पादक)

विषय सूची

विषय	पृष्ठ संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
1. एक बूढ़ा कर्मयोगी	01	19. कैसे करवाता है राजकीय सेवा में नियुक्ति परम तेजस्वी सूर्य ग्रह	64
2. सूर्य उपासना का पर्व 'छठ पूजा'	06	20. राशिफल, नवम्बर 2019	66
3. बृहस्पति का धनु राशि में गोचर	09	21. नाम के अक्षर से जाने भविष्यफल 2020	69
4. बुध तुला में वक्री, जानिए प्रभाव	16	22. ज्योतिष विशुद्ध ज्ञान है : इमरान हसनी	81
5. देवउठनी एकादशी व्रत	22	23. फिल्म भांगड़ा पा ले	83
6. क्या कहती हैं हाथों की रेखाएं ?	24	24. ज्योतिष सीखें भाग-2 सभी 'पापी' बुरे नहीं	85
7. अयोध्या जाते समय इन प्राचीन धार्मिक धरोहरों के भी करें दर्शन	27		
8. कार्तिक पूर्णिमा व्रत	31		
9. कई मर्ज का इलाज करता है रुद्राक्ष	33		
10. काल भैरव बिंगड़े काम बनाएं	40		
11. सिद्ध कुंजिका स्तोत्र से पाए दुर्गा जी की कृपा	42		
12. नीलांचल पर बसा अद्भुत मंदिर	44		
13. सभी परेशानियों का रामबाण इलाज	47		
14. जाने दुनिया भर में प्रसिद्ध "इस्कॉन" मंदिर से जुड़े इन रोचक तथ्यों	53		
15. बहुत स्वास है शिव का त्रिलोकीनाथ मंदिर	55		
16. राहुकाल का रहस्य	57		
17. देश के वो अनोखे मंदिर जो चमत्कारी रूप से एक रात में ही बनकर हुए थे तैयार ।	60		
18. डाउजिंग - सुशियों का खजाना, हर ताले की चाबी	62		

एक वृद्ध कर्मयोगी



एस्ट्रो गुरु
मुगारंक

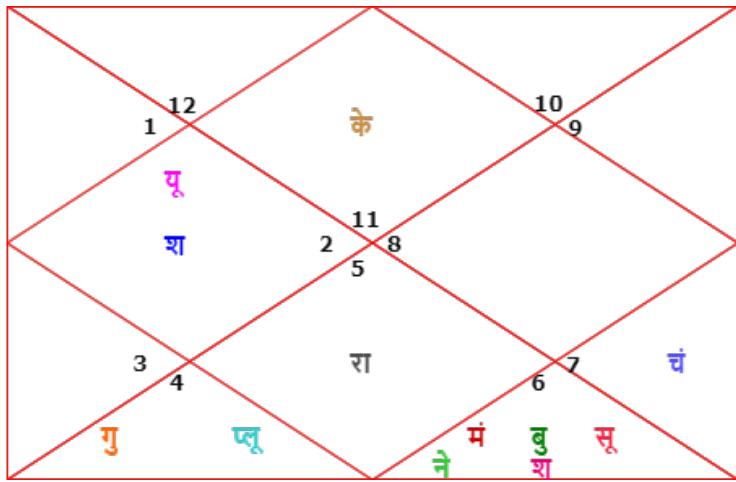


अमिताभ बच्चन, जिन्हे वर्ष 2019 के दादा साहेब फाल्के पुरस्कार के लिए चुना गया है, हिंदी सिनेमा में "एंग्री यंग मैन" के नाम से मशहूर सदी के महानायक हैं। पद्म भूषण तथा अनेक राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार जीतकर उन्होंने अपनी सशक्त अभिनय क्षमता के बल पर बॉलीवुड में जमकर नाम कमाया है। अभी 11 अक्टूबर को उन्होंने 77 वर्ष पूर्ण किए हैं और भारतीय फिल्म जगत में ऊँचाइयों पर काबिज हैं। अभी हाल ही में उन्हें मुंबई के नानावती हॉस्पिटल जाना पड़ा, जहाँ लीवर में समस्या की शिकायत के कारण उनका उपचार किया गया है। हालांकि निश्चित तौर पर कुछ नहीं कहा गया कि उन्हें किस समस्या के चलते हॉस्पिटल जाना पड़ा, लेकिन एक निजी टीवी चैनल को दिए गए बयान के अनुसार उन्हें ट्यूबरकोलोसिस (टीबी) और हेपेटाइटिस बी जैसी समस्याएं हैं और उनके लीवर का लगभग 75 फीसदी हिस्सा खराब है। भारतीय फिल्म इंडस्ट्री के सबसे महान कलाकारों में शुमार बिंग बी अर्थात Amitabh Bachchan के लाखों की संख्या में फैन हैं, जो उनके अच्छे स्वास्थ्य और दीर्घायु की कामना करते हैं। इसी क्रम में हमने श्री अमिताभ बच्चन की जन्म कुंडली का अध्ययन करने के उपरांत यह जानने का प्रयास

किया है कि उनके लिए आने वाला समय कैसा रहने वाला है।

अमिताभ बच्चन की जन्म कुंडली का विश्लेषण

हमें प्राप्त जानकारी के अनुसार अमिताभ बच्चन का जन्म 11 अक्टूबर 1942 को सायंकाल 4:00 बजे इलाहाबाद में हुआ था। इनके पिता प्रसिद्ध हिन्दी साहित्यकार हरिवंश राय बच्चन और माता का नाम तेजी बच्चन है। इनके बचपन का नाम इंकलाब था, जिसे बाद में सुप्रसिद्ध हिंदी कवि सुमित्रानंदन पंत ने बदल कर अमिताभ रखा। इनका विवाह भारतीय फिल्म जगत की मशहूर अभिनेत्री जया भादुड़ी से हुआ। इनकी दो संताने शेता नंदा और अभिषेक बच्चन हैं। 'बिंग बी' एक अभिनेता होने के साथ-साथ फिल्म निर्माता भी रहे। ये पार्श्वगायक भी हैं और टीवी प्रस्तोता भी हैं तथा वर्ष 1984 से 1987 के बीच संसद के निर्वाचित सदस्य भी रह चुके हैं। टीवी के लोकप्रिय शो KBC में इन्होंने होस्ट की शानदार पहचान बनाई है। अपने अभिनय करियर की शुरुआत फिल्म सात हिंदुस्तानी के सात कलाकारों में एक कलाकार के रूप में की थी और देखते ही देखते सुपरस्टार बन गए। इन्होंने जंजीर, रोटी कपड़ा और मकान, त्रिशूल, शक्ति, अमर अकबर एंथनी, मुकद्दर का सिकंदर, शोले, सिलसिला, मिस्टर नटवरलाल, लावारिस, कुली, कभी खुशी कभी गम, मोहब्बतें, बागबान, खाकी, चीनी कम, ब्लैक, पिंक, पीकू, जैसी अनेकों लाजवाब फिल्मों में काम किया है और अपने अभिनय का लोहा मनवाया है।



अमिताभ बच्चन, 11 अक्टूबर 1942

सायंकाल 4:00 बजे

इलाहाबाद (प्रयागराज), उत्तर प्रदेश

अमिताभ बच्चन की जन्म कुंडली की खास बातें

- अमिताभ बच्चन का जन्म लग्न कुंभ है और उनकी जन्म राशि तुला है।
- उनका जन्म नक्षत्र स्वाति है, जिसके दूसरे चरण में उनका जन्म हुआ है।
- जन्म कुंडली में तीन ग्रह मंगल, बुध और शुक्र अस्त अवस्था में विराजमान हैं।
- बुध और शनि ग्रह वक्री अवस्था में स्थित हैं।
- लग्न के स्वामी शनि देव चतुर्थ स्थान में विराजमान हैं।
- द्वितीय और एकादश भाव के स्वामी देव गुरु बृहस्पति छठे भाव में कर्क राशि में स्थित हैं।
- जन्म लग्न में केतु और सप्तम भाव में राहु स्थित हैं।
- कुंडली के अष्टम भाव में बुध, शुक्र, सूर्य और मंगल उपस्थित हैं तथा इसी भाव में नीच भंग राजयोग का निर्माण भी हो रहा है।
- वर्तमान समय में वह शुक्र की महादशा और चंद्रमा की अंतर्दशा के प्रभाव में हैं, जो कि 19 जनवरी 2020 तक प्रभावी रहेगी और उसके बाद शुक्र की महादशा में मंगल की अंतर्दशा प्रारंभ होगी।
- इन की कुंडली में बन रहा मंगल, शुक्र और बुध का योग इन्हें एक महान कलाकार बना रहा है तथा द्वितीय स्थान

पर देव गुरु बृहस्पति की दृष्टि और अन्य ग्रहों का योग इन की वाणी को जबरदस्त आकर्षण से भरपूर बनाता है और इनकी वाणी में गहरा प्रभाव देता है।

- दूसरे और ग्यारहवें भाव का स्वामी वक्री है तथा वर्गोत्तम है। इस वजह से इनकी आर्थिक स्थिति काफी बढ़िया रहती है और धन संबंधित दिक्षतें इन्हें लंबे समय तक परेशान नहीं करतीं।
- सूर्य और बुध का अष्टम भाव में स्थित होना इन्हें लम्बे समय तक रहने वाला मान सामान दे रहा है।
- वर्तमान समय में चल रही शुक्र की महादशा इन के लिए बेहद महत्वपूर्ण है, क्योंकि जहां एक ओर शुक्र इन की कुंडली के लिए चतुर्थ और नवम भाव का स्वामी होकर योगकारक की मुख्य भूमिका में है, वहीं अष्टम भाव में नीच भंग राजयोग में सम्मिलित भी है।
- आने वाले समय की बात की जाए तो शुक्र में मंगल की दशा में जनवरी 2020 से प्रारंभ होकर मार्च 2021 तक चलेगी। मंगल इनकी कुंडली के लिए तृतीय और दशम भाव का स्वामी होकर अष्टम भाव में विराजमान है तथा चंद्रमा के नक्षत्र में है। ऐसी स्थिति में इन्हें कार्य क्षेत्र में अच्छी सफलता प्राप्त होगी, लेकिन स्वास्थ्य संबंधी कष्ट इन्हें परेशान कर सकते हैं, क्योंकि चंद्रमा इनकी कुंडली के लिए एक रोगकारक ग्रह है।
- उनकी कुंडली में अष्टम भाव सबसे अधिक प्रभावशाली है, क्योंकि अष्टम भाव में चार मुख्य ग्रह बैठे हैं। इसके अलावा नीच भंग राजयोग भी इसी भाव में बन रहा है और लग्न का स्वामी शनि भी चतुर्थ भाव, जो कि एक शुभ भाव है, उसमें वक्री अवस्था में बैठकर इनको अनेक प्रकार के लाभ और प्रशंसा दिलाने में सहायक है, क्योंकि इसी के कारण इन्हें लोकप्रियता प्राप्त होती है। वक्री अवस्था अनुकूल प्रभाव को बढ़ा रही है।
- कर्म भाव पर शनि और बृहस्पति की सम्मिलित दृष्टि होने के कारण यह सामाजिक सरोकार के कार्यों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हैं और उसी की वजह से इन्हें अत्यधिक मान सम्मान भी प्राप्त होता है। आने वाले समय में ये और भी ज्यादा ऐसे कार्यों में संलग्न रहेंगे।

अमिताभ बच्चन को मिल चुके हैं ये बड़े पुरस्कार

अमिताभ बच्चन ने अपने करियर में अनेक प्रकार के पुरस्कार प्राप्त किए हैं, जिनमें पद्म भूषण और नाम दादा साहब फाल्के पुरस्कार खास हैं और इनके साथ साथ इन्होंने तीन राष्ट्रीय पुरस्कार भी जीते हैं तथा बारह फिल्म फेयर पुरस्कार भी इनके नाम दर्ज हैं।



उन्होंने सबसे अधिक बार सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का फिल्म फेयर अवार्ड भी प्राप्त किया है। उन्हें अनेक प्रकार के पुरस्कार मिलने से प्रतीत होता है कि उनकी छवि एक बेहतर अभिनेता के होने के साथ-साथ समाज में भी अच्छी छवि रखते हैं, क्योंकि उन्होंने सरकार के साथ मिलकर पोलियो उन्मूलन अभियान के बाद तंबाकू निषेध परियोजना पर भी इनके काम करने की बात चल रही है। इसके अतिरिक्त एचआईवी और एड्स तथा पोलियो अभियान के लिए उन्हें यूनिसेफ का सद्व्यावना राजदूत भी नियुक्त किया गया। इतनी बड़ी उपलब्धियों के बाद यह मांग उठने लगी है कि उन्हें भारत रत्न जैसा सम्माननीय पुरस्कार भी दिया जाए। हालांकि ग्रहों की स्थिति को देखते हुए यह कोई बड़ी बात तो नहीं है, फिर भी उन्हें इस क्षेत्र में चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा क्योंकि इस सम्मान को प्राप्त होने से पहले उन के दावेदार अनेक लोग तैयार बैठे हैं। हम यह ज़रूर कह सकते हैं कि उनकी ग्रहण बताएं इतनी मजबूत हैं कि आने वाले समय में उन्हें कोई बड़ा नेशनल अवार्ड ज़रूर मिल सकता है। यदि भारत रत्न की बात की जाए तो उसके मिलने की संभावना पचास प्रतिशत तक है।

अमिताभ बच्चन का स्वास्थ्य

अगर वर्तमान ग्रह स्थिति पर नजर दौड़ाई जाए तो शुक्र में चंद्रमा का अंतर जनवरी 2020 तक चल रहा है और

इनकी राशि से शनि का गोचर तीसरे स्थान में चल रहा है, जो कि 24 जनवरी 2020 को राशि से चौथे स्थान तथा लग्न से 12 स्थान पर होगा, जिसकी वजह से इन्हें शारीरिक समस्याएं परेशान कर सकती हैं। इसलिए इन्हें अपने स्वास्थ्य के प्रति काफी सतर्क और सावधान रहना होगा क्योंकि इसका असर इनके काम पर भी पड़ेगा।

अमिताभ बच्चन की फिल्म

शुक्र की स्थिति के कारण अभी यह लंबे समय तक भारतीय फिल्म इंडस्ट्री में छाए रह सकते हैं और सबसे ज्यादा काम करने वाले कलाकार के रूप में भी जाने जाएंगे। शुक्र, बुध और मंगल का योग इन



एक बेहतर कलाकार बनाता है तथा शनि की स्थिति इनके काम में वृद्धि बनाये रहती है तथा जनता से इन्हें प्रशंसा मिलती है। वहीं देव गुरु बृहस्पति इन की आवाज में आकर्षण बढ़ाते हैं। यह सभी चीजें मिलकर और लग्न में उपस्थित केतु इन के रहस्यमयी व्यक्तित्व को और मजबूत बनाता है, जिसकी वजह से इन फिल्म इंडस्ट्री में काफी हृद तक सफलता मिलती है। उनकी आने वाले कुछ फिल्में ब्रह्मास्त्र, गुलाबो सिताबो, झुंड, चेहरे और हेरा फेरी 3 हैं। शुक्र की दशा के कारण इन फिल्मों में भी उनके अभिनय को अच्छी खासी तारीफ मिलेगी। शुक्र जो कि अभिनय का मुख्य कारक ग्रह है, साथ में बुध जोकि नीच भंग राजयोग भी बना रहा है और मंगल तथा सूर्य, जो कि इस क्षेत्र में काम करने के लिए इन्हें मजबूत और दृढ़ इच्छा शक्ति प्रदान करते हैं, उनके कारण यह अपने हर काम को बेहतर तरीके से अंजाम देने में सफल रहते हैं और यही इन्हें एक बेहतर कलाकार बनाती है। शुक्र की दशा का अनुकूल फल इन्हें अवश्य मिलेगा और इन्हें अभी फिल्म इंडस्ट्री में और भी अच्छा काम करते हुए देखा जा सकता है।

KBC में अमिताभ बच्चन

कौन बनेगा करोड़पति की शुरुआत भारत में अमिताभ बच्चन के होस्ट के रूप में की गई थी, जो कि इनके मुख्य संवाद "देवियों और सज्जनों" से काफी प्रसिद्ध हुआ।



इस वर्ष भी इन्हें इस में काम करने का मौका मिला और यह पूर्व की भाँति ही काफी अच्छा प्रदर्शन जारी रख सका। यदि वर्ष 2020 की बात की जाए तो एक बात ध्यान देने योग्य है कि निर्माताओं की पहली पसंद अमिताभ बच्चन ही होंगे, हालांकि इनका स्वास्थ्य इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा और यदि ये अपने स्वास्थ्य पर पूरी तरह से पकड़ बना पाए तो अगले सीजन में भी केबीसी की हॉट सीट पर अमिताभ बच्चन के सामने बैठने का मौका भारत वासियों को मिल सकता है। 24 जनवरी 2020 से इन्हें कंटक शनि की ढैया लगेगी और यह समय काफी महत्वपूर्ण होगा, क्योंकि इस दौरान इनको स्वस्थ्य समस्याओं से जूझना पड़

सकता है और इसका असर इनके काम पर भी देखने को मिलेगा।

इन्हें जीवन में अभी भी कुछ ख़ास उपलब्धियाँ मिलने की संभावनाएं हैं। अनुकूल ग्रह दशाएं जीवन में कितनी तरक्की दे सकती हैं, इसके लिए Amitabh Bachchan की जन्म कुंडली सबसे सटीक उदाहरण है। पूर्व में भी इन्हें राजनीति से ज्यादा सुकून दायक परिणाम नहीं मिले हैं, ऐसे में इस क्षेत्र से दूरी ही इनके लिए बेहतर रहेगी। वास्तव में इन्हें आने वाले समय में ज्यादा गाने गाने चाहिए और अपनी अदाकारी के जलवे दिखने चाहिए, क्योंकि ग्रह दशा इसी क्षेत्र में और अधिक सफलता दिखा रही है। ईश्वर इन्हें उत्तम स्वस्थ्य देकर और भी बेहतरीन बनाएं।

अमिताभ बच्चन हिंदी सिनेमा के महानायक हैं। हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह अपने क्षेत्र में बेहतर से बेहतर प्रदर्शन जारी रखें और उनका स्वास्थ्य अनुकूल रहे तथा वे दीर्घायु हों, ताकि भारतीय फिल्म जगत का महानतम सितारा अपना श्रेष्ठ मनोरंजन प्रदान कर सके।

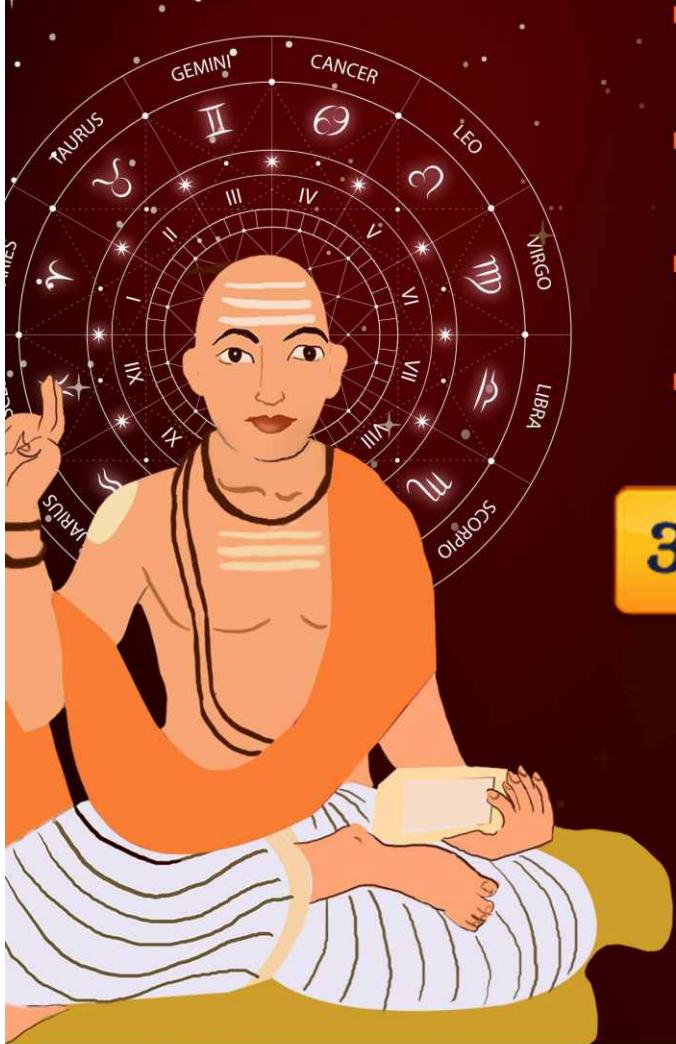
AstroSage Kundli

Download App Now

GET IT ON
Google Play
DOWNLOAD ON THE
App Store

ज्योतिषी से प्रश्न पूछें

हमारे विशेषज्ञ ज्योतिषी से लें परामर्श



- के.पी. सिस्टम
- लाल किताब
- नाड़ी ज्योतिष
- ताजिक ज्योतिष

अभी खरीदें »

संपर्क करें

+91-7827224358 ,

+91-9354263856

Email:- sales@ojassoft.com

www.astrosage.com

स्पेशल कीमत:- ₹299/-

सूर्य उपासना का पर्व 'छठ पूजा'

छठ पर्व या छठ पूजा कार्तिक शुक्ल षष्ठी को मनाया जाने वाला लोकपर्व है। इसे सूर्य षष्ठी के नाम से भी जाना जाता है। यह पर्व दिवाली के 6 दिन बाद मनाया जाता है। यह पर्व मुख्य रूप से उत्तर भारत के राज्य बिहार, झारखण्ड और पूर्वी उत्तर प्रदेश में बड़े ही धूमधाम से मनाया जाता है। छठ पूजा में सूर्य देव और छठी मैया की पूजा व उन्हें अर्घ्य देने का विधान है। पिछले कुछ वर्षों में छठ पूजा को लोकपर्व के रूप में एक खास पहचान मिली है। यही वजह है कि अब इस पर्व की रौनक बिहार-झारखण्ड के अलावा देश के कई हिस्सों में भी देखने को मिलती है।

छठ पर सूर्य देव और छठी मैया की पूजा का विधान

छठ पूजा में सूर्य देव की पूजा की जाती है और उन्हें अर्घ्य दिया जाता है। सूर्य प्रत्यक्ष रूप में दिखाई देने वाले देवता है, जो पृथ्वी पर सभी प्राणियों के जीवन का आधार हैं। सूर्य देव के साथ-साथ छठ पर छठी मैया की पूजा का भी विधान है। पौराणिक मान्यता के अनुसार छठी मैया या षष्ठी माता संतानों की रक्षा करती हैं और उन्हें दीर्घायु प्रदान करती हैं।

शास्त्रों में षष्ठी देवी को ब्रह्मा जी की मानस पुत्री भी कहा गया है। पुराणों में इन्हें माँ कात्यायनी भी कहा गया है, जिनकी पूजा नवरात्रि में षष्ठी तिथि पर होती है। षष्ठी देवी को ही बिहार-झारखण्ड में स्थानीय भाषा में छठ मैया कहा गया है।

छठ पूजा उत्सव

छठ पूजा चार दिनों तक चलने वाला लोक पर्व है। यह चार दिवसीय उत्सव है, जिसकी शुरुआत कार्तिक शुक्ल चतुर्थी से होती है और कार्तिक शुक्ल सप्तमी को इस पर्व का

समापन होता है।



नहाय खाये (पहला दिन)

यह छठ पूजा का पहला दिन है। नहाय खाय से मतलब है कि इस दिन स्नान के बाद घर की साफ-सफाई की जाती है और मन को तामसिक प्रवृत्ति से बचाने के लिए शाकाहारी भोजन किया जाता है।

खरना (दूसरा दिन)

खरना, छठ पूजा का दूसरा दिन है। खरना का मतलब पूरे दिन के उपवास से है। इस दिन उपवास रखने वाला व्यक्ति जल की एक बूंद तक ग्रहण नहीं करता है। संध्या के समय गुड़ की खीर, धी लगी हुई रोटी और फलों का सेवन करती हैं, साथ ही घर के बाकि सदस्यों को इसे प्रसाद के तौर पर दिया जाता है।

संध्या अर्घ्य (तीसरा दिन)

छठ पर्व के तीसरे दिन कार्तिक शुक्ल षष्ठी को संध्या के समय सूर्य देव को अर्घ्य दिया जाता है। शाम को बाँस की टोकरी में फलों, टेकुआ, चावल के लड्डू आदि से अर्घ्य का सूप सजाया जाता है, जिसके बाद उपवास रखने वाला अपने परिवार के साथ सूर्य को अर्घ्य देता है। अर्घ्य के

छठ पूजा

समय सूर्य देव जल और दूध चढ़ाया जाता है और प्रसाद भरे सूप से छठी मैया की पूजा की जाती है। सूर्य देव की उपासना के बाद रात्रि में छठी माता के गीत गाए जाते हैं और उपवास कथा सुनी जाती है।

उषा अर्ध्य (चौथा दिन)

छठ पर्व के अंतिम दिन सुबह के समय सूर्य देव को अर्घ्य दिया जाता है। इस दिन सुबह सूर्योदय से पहले नदी के घाट पर पहुंचकर उगते सूर्य को अर्घ्य देते हैं। इसके बाद छठ माता से संतान की रक्षा और पूरे परिवार की सुख शांति का वर मांगा जाता है। पूजा के बाद उपवास रखने वाला कच्चे दूध का शरबत पीकर और थोड़ा प्रसाद खाकर उपवास को पूरा करती हैं, जिसे पारण या परना कहा जाता है।



छठ पूजा विधि

छठ पूजा से पहले निम्न सामग्री जुटा लें और फिर सूर्य देव को विधि विधान से अर्घ्य दें।

- बांस की 3 बड़ी टोकरी, बांस या पीतल के बने 3 सूप, थाली, दूध और ग्लास
- चावल, लाल सिंदूर, दीपक, नारियल, हल्दी, गन्ना, सुथनी, सब्जी और शकरकंदी
- नाशपती, बड़ा नींबू, शहद, पान, साबुत सुपारी, कैराव, कपूर, चंदन और मिठाई

- प्रसाद के रूप में ठेकुआ, मालपुआ, खीर-पुड़ी, सूजी का हलवा, चावल के बने लड्डू लें।

अर्घ्य देने की विधि- बांस की टोकरी में उपरोक्त सामग्री रखें। सूर्य को अर्घ्य देते समय सारा प्रसाद सूप में रखें और सूप में ही दीपक जलाएँ। फिर नदी में उत्तरकर सूर्य देव को अर्घ्य दें।



छठ पूजा से जुड़ी पौराणिक कथा

छठ पर्व पर छठी माता की पूजा की जाती है, जिसका उल्लेख ब्रह्मवैर्त पुराण में भी मिलता है। एक कथा के अनुसार प्रथम मनु स्वायम्भुव के पुत्र राजा प्रियव्रत को कोई संतान नहीं थी। इस वजह से वे दुःखी रहते थे। महर्षि कश्यप ने राजा से पुत्र प्राप्ति के लिए यज्ञ करने को कहा। महर्षि की आज्ञा अनुसार राजा ने यज्ञ कराया। इसके बाद महारानी मालिनी ने एक पुत्र को जन्म दिया लेकिन दुर्भाग्य से वह शिशु मृत पैदा हुआ। इस बात से राजा और अन्य परिजन बेहद दुःखी थे। तभी आकाश से एक विमान उत्तरा जिसमें माता षष्ठी विराजमान थीं। जब राजा ने उनसे प्रार्थना की, तब उन्होंने अपना परिचय देते हुए कहा मैं ब्रह्मा की मानस पुत्री षष्ठी देवी हूं। मैं विश्व के सभी बालकों की रक्षा करती हूं और निःसंतानों को संतान प्राप्ति का वरदान देती हूं।”

इसके बाद देवी ने मृत शिशु को आशीष देते हुए हाथ लगाया, जिससे वह जीवित हो गया। देवी की इस कृपा से राजा बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने षष्ठी देवी की आराधना की। ऐसी मान्यता है कि इसके बाद ही धीरे-धीरे हर ओर इस पूजा का प्रसार हो गया।



छठ पूजा का धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व

छठ पूजा धार्मिक और सांस्कृतिक आस्था का लोकपर्व है। यही एक मात्र ऐसा त्यौहार है जिसमें सूर्य देव का पूजन कर उन्हें अर्घ्य दिया जाता है। हिन्दू धर्म में सूर्य की उपासना का विशेष महत्व है। वे ही एक ऐसे देवता हैं जिन्हें प्रत्यक्ष रूप से देखा जाता है। वेदों में सूर्य देव को जगत की आत्मा कहा जाता है। सूर्य के प्रकाश में कई रोगों को नष्ट करने की क्षमता पाई जाती है। सूर्य के शुभ प्रभाव से व्यक्ति को आरोग्य, तेज और आत्मविश्वास की प्राप्ति होती है। वैदिक ज्योतिष में सूर्य को आत्मा, पिता, पूर्वज, मानसम्मान और उच्च सरकारी सेवा का कारक कहा गया है।

छठ पूजा पर सूर्य देव और छठी माता के पूजन से व्यक्ति को संतान, सुख और मनोवांछित फल की प्राप्ति होती है। सांस्कृतिक रूप से छठ पर्व की सबसे बड़ी विशेषता है इस पर्व की सादगी, पवित्रता और प्रकृति के प्रति प्रेम।

खगोलीय और ज्योतिषीय दृष्टि से छठ पर्व का महत्व

वैज्ञानिक और ज्योतिषीय दृष्टि से भी छठ पर्व का बड़ा महत्व है। कार्तिक शुक्ल पक्ष की षष्ठी तिथि एक विशेष खगोलीय अवसर, जिस समय सूर्य धरती के दक्षिणी गोलार्ध में स्थित रहता है। इस दौरान सूर्य की पराबैंगनी किरणें पृथ्वी पर सामान्य से अधिक मात्रा में एकत्रित हो जाती हैं। इन हानिकारक किरणों का सीधा असर लोगों की आंख, पेट व त्वचा पर पड़ता है। छठ पर्व पर सूर्य देव की उपासना व अर्घ्य देने से पराबैंगनी किरणें मनुष्य को हानि न पहुंचाए, इस वजह से सूर्य पूजा का महत्व बढ़ जाता है।

हम आशा करते हैं कि छठ पूजा पर आधारित यह लेख आपको पसंद आया होगा। एस्ट्रोसेज की ओर से सभी पाठकों को छठ पर्व की शुभकामनाएँ!



छठ पूजा मुहूर्त New Delhi, India के लिए

2 नवंबर (संध्या अर्घ्य) सूर्यास्त का समय :17:35:423
नवंबर (उषा अर्घ्य) सूर्योदय का समय :06:34:11

अपने शहर का मुहूर्त जानने के लिए [यहाँ क्लिक करें](#)

बृहस्पति का धनु राशि में गोचर

(5 नवंबर, 2019)



वैदिक ज्योतिष के अंतर्गत नवग्रहों में बृहस्पति को देवताओं का गुरु कहा गया है और ग्रहों के मंत्रिमंडल में इन्हें मंत्री का पद प्राप्त है। ये नैसर्गिक रूप से सब से शुभ ग्रह माने जाते हैं। यह वृद्धि के कारक हैं इसलिए अच्छी या बुरी जो भी घटना हो उसमें इनका योग वृद्धि कारक होता है। यह हमारे जीवन में हमारे गुरु और गुरु तुल्य लोगों, हमारे परिवार के बड़े बुजुर्गों, संतान, धन तथा ज्ञान का कारक प्राप्त है। जन्म कुंडली में गुरु की स्थिति से जातक के जीवन के बारे में कई महत्वपूर्ण बातें पता चलती हैं।

गुरु बृहस्पति का कुंडली पर प्रभाव

कुंडली में बृहस्पति की अनुकूल स्थिति व्यक्ति को मान सम्मान और ज्ञान प्रदान करती है तथा व्यक्ति को धन की प्राप्ति भी अच्छी मात्रा में होती है। संतान सुख की प्राप्ति के लिए भी बृहस्पति की मजबूत स्थिति को देखा जाता है। वहीं दूसरी ओर गुरु बृहस्पति जब इसके विपरीत अवस्था

में होते हैं तो इन सभी कारकों में कमी आने की संभावना बढ़ जाती है। यह धनु और मीन राशि के स्वामी हैं और कर्क राशि में उच्च तथा मकर राशि में नीच अवस्था में माने जाते हैं। कुंडली में चंद्रमा लग्न पर बृहस्पति की दृष्टि अमृत समान मानी जाती है। अगर कुंडली में बृहस्पति की स्थिति अनुकूल नहीं है तो आपको बृहस्पति ग्रह की शांति के उपाय करने चाहिए।

बृहस्पति ग्रह की शाति के कुछ उपाय

- ज्योतिष शास्त्र के अनुसार अगर आपकी कुंडली में बृहस्पति अनुकूल अवस्था में नहीं है तो आपको पुखराज रत्न धारण करना चाहिए। चूंकि बृहस्पति धनु और मीन राशियों के स्वामी हैं इसलिए अगर इन दोनों राशियों के जातक पुखराज धारण करें तो उन्हें शुभ फल मिलते हैं।

- इसके साथ ही बृहस्पति ग्रह के अच्छे फल प्राप्त करने के लिए गुरुवार के दिन या बृहस्पति की होरा में गुरु यंत्र को अपने घर में स्थापित करना चाहिए।
- आप गुरु ग्रह के शुभ परिणाम प्राप्त करने के लिए पीपल की जड़ को गुरु की होरा या गुरु के नक्षत्रों में भी धारण कर सकते हैं।

बृहस्पति गोचर का समय

बृहस्पति ग्रह 5 नवंबर 2019, मंगलवार 00:03 बजे अपनी राशि धनु में गोचर करेगा और 29 मार्च 2020, रविवार रात्रि 19:08 बजे तक इसी राशि में स्थित रहेगा। गुरु बृहस्पति के इस राशि परिवर्तन का प्रभाव सभी राशियों पर होगा। आईये इस राशिफल के माध्यम से डालते हैं उन प्रभावों पर एक नज़र...

मेष

शुभ ग्रह बृहस्पति आपकी राशि से नवम भाव में गोचर करेंगे। बृहस्पति आपके नवम भाव के स्वामी होने के साथ-साथ आपके द्वादश भाव के भी स्वामी हैं। इस गोचर के दौरान आपको अपने कर्मों का अच्छा फल अवश्य मिलेगा, नौकरी पेशा से जुड़े लोगों को तरक्की मिलने की उम्मीद है, वहीं इस राशि के जो लोग अपना कारोबार करते हैं उनकी नई योजनाएं सफल होंगी। बृहस्पति देव की कृपा से आपका पारिवारिक जीवन भी इस दौरान अच्छा रहेगा। कुछ शादीशुदा जातकों के जीवन में नए मेहमान की दस्तक होने की भी इस समय पूरी संभावना है। आर्थिक पक्ष को सुधारने के लिए जो योजनाएं आपने बीते समय में बनाई थीं उनका सकारात्मक प्रभाव अब आपको देखने को मिलेगा। गुरु के इस गोचर के दौरान आपको कई लोतों से धन की प्राप्ति हो सकती है। नवम भाव को धर्म भाव भी कहा जाता है और इस भाव में बृहस्पति के गोचर से आप भी धार्मिक कार्यों में रुचि लेंगे। इस राशि के कुछ जातक अपने परिवार के साथ किसी



तीर्थस्थल पर जाने का भी विचार बना सकते हैं। यह गोचरीय अवधि आपके पिता के लिए भी सुखद रहेगी, अगर वो नौकरी पेशा से जुड़े हैं तो इस समय उनके पदोन्नति होने के पूरे आसार हैं। कुल मिलाकर देखा जाए तो बृहस्पति का यह गोचर आपके लिए शुभ फलदायी साबित होगा।

उपाय: भगवान शिव का रुद्राभिषेक कराए।

वृषभ

देव गुरु बृहस्पति का गोचर आपकी राशि से अष्टम भाव में होगा। इस भाव को आयुर भाव भी कहा जाता है। इस भाव से हम जीवन में आने वाले उतार चढ़ावों और अचानक से होने वाली घटनाओं के बारे में विचार करते हैं। अष्टम भाव में बृहस्पति के गोचर से आपको जीवन में कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। इस गोचर काल में आपको अपनी सेहत का विशेष ध्यान रखना होगा, बाहर के तले-भुने भोज्य पदार्थों से परहेज करें नहीं तो आपको पेट से जुड़ी समस्याएं हो सकती हैं। कोई दुखद समाचार मिलने से आपका मन व्यथित हो सकता है। अनचाहीं यात्राएं इस दौरान आपको परेशान करेंगी। आर्थिक पक्ष की बात की जाए तो आपको धन संचय करने में इस समय दिक्षित आ सकती हैं, अगर आपने किसी से उधार लिया है तो इस अवधि में चुकाना पड़ सकता है जिससे आर्थिक स्थिति कमजोर होगी। नौकरी पेशा लोगों के लिए यह समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा आपको मनचाहे परिणाम प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ेगी। बृहस्पति ग्रह के प्रभाव से धार्मिक कार्यों में आपकी रुचि बढ़ सकती है। मन की शांति के लिए आप योग का सहारा ले सकते हैं। इस राशि की गृहणियां इस दौरान हर मुश्किल परिस्थिति में अपने जीवन साथी का साथ देंगी।



उपाय: गुरुवार को धी का दान करें

मिथुन

गुरु ग्रह का गोचर आपकी राशि से सप्तम भाव में होगा। गुरु ग्रह आपके सप्तम और दशम भाव के स्वामी हैं। सप्तम भाव को विवाह भाव भी कहा जाता है और इससे जीवन में होने वाली साझेदारियों के बारे में पता चलता है। इस गोचरीय काल में आपका वैवाहिक जीवन अच्छा रहेगा। अपने जीवनसाथी को खुशियाँ देने के लिए आप कई योजनाएं बना सकते हैं। इस अवधि में आप अपने साथी के साथ कहीं घूमने जाने का प्लान भी बना सकते हैं। आपके प्रेम भाव को देखकर आपका जीवनसाथी गदगद हो जाएगा। जिन लोगों के वैवाहिक जीवन में मतभेद थे वो भी इस दौरान दूर हो सकते हैं। गुरु ग्रह के शुभ प्रभावों से आपका आर्थिक पक्ष भी मजबूत होगा। धन का निवेश करने के लिए यह अच्छा समय है हालांकि निवेश करने से पहले अनुभवी लोगों से सलाह मशवरा अवश्य कर लें। प्रेम जीवन में नयापन आएगा, इस समय आपको अपने पार्टनर की वो खुबियाँ पता लग सकती हैं जिनके बारे में आपको अब तक मालूम नहीं था। स्वादिष्ट पकवानों का इस समय आप आनंद उठाएंगे। आपकी वाणी में मधुरता रहेगी इसलिए सामाजिक जीवन में भी आप अच्छे फल प्राप्त कर पाएंगे। अपनी बुद्धिमत्ता से आप जीवन की कई कठिनाइयों का डटकर इस समय मुकाबला करेंगे। कुल-मिलाकर देखा जाए तो यह गोचर आपके लिए अच्छा रहने वाला है।

उपाय: अपने घर में कपूर का दीपक जलाएं।

कर्क

बृहस्पति देव का गोचर आपकी राशि से षष्ठम भाव में होगा। काल पुरुष की कुँडली में यह स्थान कन्या राशि का होता है और इससे रोग आदि के बारे में विचार किया जाता है। षष्ठम भाव में गुरु के उपस्थित होने से



आपको स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां हो सकती हैं। आपको इस समय अपने मानसिक स्वास्थ्य का विशेष ख्याल रखना होगा और इसके लिए आप प्राणायाम का सहारा ले सकते हैं। नौकरी पेशा लोगों की बात की जाए तो इस अवधि में आपके कुछ सहकर्मी आपके खिलाफ साजिशें कर सकते हैं इसलिए आपको अपने कार्यक्षेत्र में बहुत सतर्कता से चलना होगा। साझेदारी में कारोबार करने वाले लोगों को धन संबंधी मामलों में अपने साझेदार पर नज़र बनाए रखनी होगी। परिवारिक मोर्चे पर आप अच्छा प्रदर्शन करने की कोशिश करते नज़र आएँगे लेकिन बावजूद इसके आपको बहुत अच्छे फल नहीं मिलेंगे। पैतृक संपत्ति को लेकर आप अपने भाई-बहनों से उलझ सकते हैं। वैवाहिक जीवन को सुचारू रूप से चलाना चाहते हैं तो अपने पार्टनर पर बेवजह शक न करें। आर्थिक स्थिति में सुधार करने के लिए इस राशि के कुछ जातक इस दौरान बैंक से लोन ले सकते हैं। छात्रों के लिए यह गोचर अच्छा रहेगा। प्रतियोगी परीक्षाओं में आप अच्छा प्रदर्शन कर पाएंगे।

उपाय: हर गुरुवार को केले के वृक्ष का पूजन करें

सिंह

बृहस्पति देव का गोचर आपकी राशि से पंचम भाव में होगा। पंचम भाव को संतान भाव भी कहा जाता है और इससे आपके विद्या और ज्ञान के बारे में भी विचार किया जाता है। गुरु का यह गोचर आपके लिए लाभदायक साबित होगा। सामाजिक स्तर पर आपके अच्छे संपर्क बनेंगे जो आपके व्यावसायिक और निजी जीवन को सरल बनाने में काम आएँगे। आपके मन में दूसरों के प्रति इस समय दया का भाव रहेगा और आप परोपकारी कामों में बढ़ चढ़कर हिस्सा ले सकते हैं। आपके माता-पिता इस दौरान आपके व्यवहार से खुश रहेंगे। इस गोचर के दौरान आपको अहसास हो सकता है कि पैसा जीवन की जरूरत है और जीवन की असली खुशी लोगों की मदद करने और उन्हें खुश देखने में



है। आर्थिक पक्ष पर इस दौरान आप ज्यादा ध्यान नहीं देंगे और जितना आपके पास है उसी में संतुष्ट रहेंगे। इस राशि के विवाहित लोगों की जिंदगी में इस समय किसी नए मेहमान की दस्तक हो सकती है। गुरु ग्रह ज्ञान का कारक होता है इसलिए इस गोचर काल में आपके ज्ञान में भी वृद्धि देखी जा सकती है। इस राशि के बो छात्र जो दर्शन शास्त्र या ज्योतिष की पढ़ाई कर रहे हैं उन्हें मनोनुकूल परिणाम मिलेंगे। इस समय आप नया वाहन या प्रोपर्टी खरीदने का भी मन बना सकते हैं। कुल-मिलाकर गुरु का यह गोचर आपके लिए अच्छा रहेगा।

उपाय: इस बृहस्पति बीज मंत्र का जाप करें- “ॐ ग्रां ग्री ग्रौं सः गुरवे नमः”

कन्या

दर्शन, धर्म और ज्ञान के कारक ग्रह बृहस्पति का गोचर आपकी राशि से चतुर्थ भाव में होगा। आपके चतुर्थ भाव के साथ-साथ बृहस्पति आपके सप्तम भाव के भी स्वामी हैं। चौथे भाव को सुख भाव भी कहा जाता है और इससे आपके मातृ पक्ष पर भी विचार किया जाता है। चतुर्थ भाव में गुरु

के गोचर से आपको जीवन में परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। पारिवारिक जीवन में माता-पिता के साथ आपके मतभेद होंगे जिसकी वजह से आपके वैवाहिक जीवन पर भी फर्क पड़ेगा। परिस्थितियों को अपने अनुकूल करने के लिए आपको धीरज से काम लेना होगा। बुरी स्थितियों से भागकर आप उनसे बच नहीं सकते अगर आप सच में चाहते हैं कि सब ठीक हो जाए तो उन लोगों के साथ बैठकर बात कीजिए जिनसे आपके मतभेद हैं। इस दौरान आध्यात्म के प्रति आपका झुकाव बढ़ेगा और अपनी मानसिक परेशानियों को दूर करने के लिए आप किसी आध्यात्मिक गुरु की शरण में जा सकते हैं। स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिए आपको प्रयास करने होंगे। आपकी बहुत सी परेशानियों का कारण आपकी निष्क्रियता है।



सरकारी नौकरी में कार्यरत इस राशि के जातक अपने काम के जरिये लोगों को चौंका सकते हैं। छात्रों के लिए यह समय सामान्य रहेगा, अगर आपको शिक्षा के क्षेत्र में परेशानियां आ रही हैं तो अपने गुरुजनों का परामर्श लेने से न चूकें।

उपाय: ब्राह्मण को शक्तर दान करें और गाय को रोटी खिलाएं।

तुला

देव गुरु बृहस्पति का गोचर आपकी राशि से तृतीय भाव में होने जा रहा है। आपके तृतीय भाव के साथ-साथ बृहस्पति आपके षष्ठम भाव के भी स्वामी है। तीसरे भाव में गुरु ग्रह की उपस्थिति आपके लिए लाभदायक नहीं कही जा सकती। इस दौरान आपके अंदर आलस्य की अधिकता रहेगी



और आप हर काम को कल पर टालने की कोशिश करेंगे। इस राशि के कुछ जातकों को अपने निवास स्थान में परिवर्तन करना पड़ सकता है। इस अवधि में आपको अनचाही यात्राएं भी करनी पड़ सकती हैं। बिज़नेस और नौकरी करने वाले इस राशि के जातकों को इस समय अपने काम की गति बढ़ाने की जरूरत है। अगर आप ऐसा नहीं करते तो कई चुनौतियाँ आपके सामने आ सकती हैं। आपको यह समझने की जरूरत है कि आपके साथ अच्छा-बुरा जो भी होता है उसकी सबसे बड़ी वजह आप ही होते हैं। अच्छी स्थिति में खुद को श्रेय देना और बुरी स्थिति में लोगों को दोषी ठहराना गलत है। इसलिए जितना हो सके खुद के व्यक्तित्व को निखारने की कोशिश करें। गुरु ग्रह के प्रभाव से इस अवधि में आप धार्मिक कार्यों में हिस्सा ले सकते हैं। स्वास्थ्य में सकारात्मक बदलाव लाना चाहते हैं तो सुबह जल्दी उठकर व्यायाम करें।

उपाय: गुरुवार के दिन हल्दी व चना दाल का दान करें और गाय को रोटी खिलाएं।

वृश्चिक

बृहस्पति ग्रह का गोचर आपकी राशि से द्वितीय भाव में होगा। इस भाव को धन भाव भी कहा जाता है। गुरु ग्रह की आपके द्वितीय भाव में स्थिति आपको अच्छे फल दिलाएंगी। इस गोचरीय काल में आपका अर्थिक पक्ष मजबूत होगा। यदि आपने किसी को धन उधार दिया था तो इस समय वो आपको वापस मिल सकता है। परिवार के लोगों के बीच आप इस समय खुलकर अपनी बातें रखेंगे जिसकी वजह से कई परेशानियां दूर हो जाएंगी। आप घर वालों की मन की बात जानने के लिए उनसे भी बातें कर सकते हैं। संक्षिप्त में कहा जाए तो आप परिवार को एकजुट करने की कोशिश करते नजर आएंगे। आपके प्रयासों को देखकर आपके जीवनसाथी को भी खुशी होगी जिससे वैवाहिक जीवन में संगतता बनी रहेगी। गुरु के गोचर के दौरान घर में किसी मांगलिक कार्य के होने की भी संभावना है। नौकरी पेशा और कारोबारी लोगों के साहस में इस समय वृद्धि देखी जा सकती है। आपके विरोधी इस गोचर के दौरान आपके सामने टिक नहीं पाएंगे। नया ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा इस राशि के छात्रों के मन में उठेगी। आप अपनी पुस्तकों से ज्यादा अच्छे लेखकों के उपन्यास या प्रेरणादायी पुस्तकें इस अवधि में पढ़ सकते हैं, यह पुस्तकें आपके ज्ञान को नया आयाम देंगी।



उपाय: बृहस्पति बीज मंत्र “ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः” का जाप करें।

धनु

बृहस्पति देव आपकी राशि यानि आपके लग्न भाव में गोचर करने वाले हैं। आपके लग्न भाव के साथ-साथ देव गुरु आपके चतुर्थ भाव के भी स्वामी हैं। आपके प्रथम भाव में गुरु का गोचर आपके लिए शुभ



रहेगा। जीवन के हर क्षेत्र में इस समय भाग्य आपका साथ देगा। अर्थिक मामलों को लेकर यदि आप परेशान थे तो इस गोचरकाल में आपकी यह परेशानियां दूर हो जाएंगी। इस समय आप धन का संचय करने में तो सक्षम होंगे लेकिन आपकी किसी लापरवाही की वजह से आपको धन हानि होने की भी संभावना है। धन से जुड़े लेन-देन के मामलों में भी इस समय संभलकर रहें। वैवाहिक जीवन की बात की जाए तो जीवनसाथी की बातें आपके लिए इस दौरान मरहम की तरह काम कर सकती हैं। आप दोनों के बीच नज़दीकी बढ़ेगी और रोमांस में भी वृद्धि होगी। सामाजिक स्तर पर आपको अपने गुस्से पर नियंत्रण रखना होगा नहीं तो किसी बेवजह के विवाद में आप पड़ सकते हैं। स्वास्थ्य इस समय अच्छा रहेगा और मानसिक तौर पर आप खुद को आज्ञाद पाएंगे जिसके चलते आप रचनात्मक कार्यों में अच्छा प्रदर्शन करेंगे। इस समय आप उस लक्ष्य को भी प्राप्त कर सकते हैं जिसके लिए काफी समय से मेहनत कर रहे थे। गुरु का यह गोचर आपके लिए कई मायनों में अच्छा रहेगा।

उपाय: गुरुवार के दिन पुखराज रक्ष को सोने की अंगूठी में जड़वाकर तर्जनी अंगुली में धारण करें।

मकर

गुरु ग्रह का गोचर आपकी राशि से द्वादश भाव में होगा। आपके द्वादश भाव के साथ-साथ बृहस्पति आपके तृतीय भाव के भी स्वामी हैं। द्वादश भाव में गुरु के गोचर से आपको लंबी दूरी की यात्राओं पर जाना पड़ सकता है। यह यात्राएं काम के सिलसिले में या फिर निजी कारणों से भी हो सकती हैं। द्वादश भाव को हानि भाव भी कहा जाता है इसलिए इस गोचर के दौरान आपको धन संबंधी मामलों में सोच-समझकर चलना होगा। किसी को भी उधार देने से पहले उसकी विश्वसनीयता को अवश्य जान लें। इस दौरान



आपमें धर्म के प्रति रुचि बढ़ेगी और आप धार्मिक पुस्तकों का इस समय अध्ययन कर सकते हैं। यह ऐसा समय है जब आप भौतिक सुखों से दूरी बनाकर चलेंगे और एकांत में समय बिताना पसंद करेंगे। आपका कोई मित्र इस दौरान आपकी मुलाकात किसी आध्यात्मिक गुरु या आध्यात्म के जानकार किसी शख्स से करा सकता है। इस राशि के जो लोग विदेशों में रहते हैं वो इस दौरान वहीं रहने का प्लान बना सकते हैं। छात्रों के लिए यह समय अच्छा है और इस अवधि में आपका मन लक्ष्य पर केंद्रित होगा। अगर आप घर के मुखिया हैं तो आपको अपने परिवार को एकजुट करने के लिए इस समय प्रयास करने चाहिए।

उपाय: अपनी पेंट या शर्ट की जेब में पीला रुमाल रखें और मस्तक पर केसर का तिलक लगाएँ।

कुंभ

बृहस्पति देव का गोचर आपकी राशि से एकादश भाव में होगा। इस भाव को लाभ भाव भी कहा जाता है। गुरु का आपके एकादश भाव में होना आपको कई क्षेत्रों में अच्छे फल दिवाएगा। सबसे पहले बात करें स्वास्थ्य की तो आप इस दौरान स्वस्थ रहेंगे, यदि आप लंबे समय से किसी बीमारी से जूझ रहे थे तो इस समय उसमें सुधार आएगा। भाग्य का पूरा साथ इस दौरान आपको मिलेगा जिसके चलते आप सफलता की नई सीढ़ियां चढ़ेंगे। अगर आपके मन में किसी कीमती चीज को पाने की ख़्वाहिश थी तो इस समय वह ख़्वाहिश पूरी हो सकती है। कार्यक्षेत्र में आप अपने काम से बॉस को प्रभावित कर सकते हैं, हालांकि आपके कुछ विरोधियों को यह बात चुभेगी और वो आपके खिलाफ साजिश कर सकते हैं। अतीत में किये गये किसी निवेश से इस दौरान आपको फायदा हो सकता है। जीवनसाथी के साथ आनंद भरे पल गुजार पाएंगे। यदि आप अपने जीवनसाथी से दूर रहते हैं तो इस दौरान उनसे मिलने जा सकते हैं या उन्हें अपने पास बुला सकते हैं। अपने फैसलों



को जबरदस्ती अपने जीवनसाथी पर थोपने की कोशिश न करें नहीं तो समीकरण बदल सकते हैं। प्रेम में पड़े इस राशि के जातकों का जीवन जैसा चल रहा था वैसा ही चलता रहेगा।

उपाय: गुरुवार को सुबह के समय पीपल के वृक्ष पर जल चढ़ाए। लेकिन इस दौरान पीपल के वृक्ष का स्पर्श नहीं करें।

मीन

बृहस्पति देव आपकी राशि और आपके दशम भाव के स्वामी हैं। बृहस्पति देव का गोचर आपकी राशि से दशम भाव में होगा। दशम भाव को वैदिक ज्योतिष में कर्म भाव भी कहा जाता है। यह समय आपके लिए अच्छा रहेगा। नौकरी पेशा से जुड़े लोगों को इस समय नई जिम्मदारियां मिल सकती हैं। कुछ जातकों का तबादला होने के भी आसार हैं। स्थान परिवर्तन करने की वजह से आपको कुछ परेशानियां आएँगी लेकिन थोड़े समय के बाद आपको अहसास होगा कि यह परिवर्तन आपके लिए अच्छा था। पारिवारिक जीवन में भी आपको अच्छे फल मिलेंगे, आपकी माताजी की तबियत यदि खराब चल रही थी तो इस गोचर के असर से उसमें सुधार हो सकता है। अपनी सेहत में अच्छे बदलाव करने के लिए आपको अपने लिए भी समय निकालना होगा। सुबह की सैर आपके स्वास्थ्य में कई सकारात्मक परिवर्तन लेकर आ सकती है। आर्थिक मामलों के लिए यह गोचर शुभ है इस दौरान आपको कई स्रोतों से धन प्राप्ति हो सकती है। वहीं उधारी के जाल में फँसे इस राशि के जातक इस समय कर्ज से मुक्ति पा सकते हैं। छात्रों के लिए भी यह गोचर अच्छा रहने वाला है, आपकी मेहनत इस समय रंग लाएगी। जो छात्र उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं और अपने घर से दूर हैं उन्हें गलत संगति में पड़ने से बचना चाहिए।

उपाय: घर में गुरु बृहस्पति यंत्र की स्थापना करें और रोजाना इसकी पूजा करें।



EUREKA



Innovation in Career Counselling:



Know More

बुध तुला में वक्री, जानिए प्रभाव

7
नवंबर, 2019
(बृहस्पतिवार)

वक्री बुध का तुला राशि में गोचर (7 नवंबर, 2019)



विभिन्न ग्रहों के अध्ययन के संदर्भ में वैदिक ज्योतिष के अंतर्गत बुध ग्रह को व्यापार और बुद्धि का प्रदाता ग्रह माना जाता है। यह हमारी वाणी के रूप में भी हम पर अपना आधिपत्य रखता है। यदि राशियों के स्वामित्व की बात की जाए तो यह मिथुन और कर्क राशि पर अपना अधिकार रखता है। इसके साथ-साथ कन्या राशि इसकी मूल त्रिकोण राशि तथा उच्च राशि भी मानी गई है। ये मीन राशि में नीच अवस्था में माना जाता है। नक्षत्र क्रम में अश्लेषा, ज्येष्ठा और रेवती नक्षत्र बुध के ही नक्षत्र हैं।

एक राज कुमार के रूप में नवग्रह मंडल में पहला स्थान पाने वाला बुध संचार व्यवस्था का मुख्य अतिथि ग्रह है। यह वात पित्त और कफ तीनों प्रकृति पर समान अधिकार रखता है और इसके बिंदुने पर व्यक्ति को इन तीनों ही प्रकार की समस्याओं से दो-चार होना पड़ता है। क्योंकि यह राजकुमार है इसमें सीखने की प्रवृत्ति है और यही वजह

है कि अच्छी संगति अर्थात् अच्छे ग्रहों के साथ शुभ फल और बुरी संगति यथार्थ अशुभ ग्रहों के साथ संबंध बनाने पर कुंडली में यह अ शुभ परिणाम देने में समर्थ होता है। इस की कृपा से व्यक्ति की स्मृति तीक्ष्ण बनती है और शास्त्रों से लेकर गणित और सांख्यिकी तक व्यक्ति को पारंगत बनाता है।

यह दिन और रात दोनों समय समान रूप से बली रहता है और अपनी महादशा के दौरान शुभाशुभ फल पूर्ण दशा अवधि में देता है। बुध का वक्री होना भी ज्योतिष के क्षेत्र में एक विशेष घटना मानी जाती है। जब वाणी और संचार व्यवस्था का कारक बुध वक्री होता है तो बिना किसी वजह के लोगों के झगड़े होने लगते हैं और इससे संबंधित कार्य क्षेत्रों में रुकावटें आनी शुरू हो जाती हैं। यदि आपकी जन्म कुंडली में भी बुध वक्री अवस्था में विराजमान है तो बुध का वक्री होना आमतौर पर आपके लिए अनुकूल परिणाम देने

माह का प्रमुख गोचर

वाला साबित होता है और इसके विपरीत परिस्थिति होने पर परिणामों में कुछ कमी आ सकती है।

गोचर काल का समय

बुध ग्रह ने 23 अक्टूबर को वृश्चिक राशि में प्रवेश किया था। जहां 31 अक्टूबर को यह वक्री गति प्रारंभ कर चुका है। इसी वक्री अवस्था में चलते हुए 7 नवंबर बृहस्पतिवार शाम 4:04 पर यह तुला राशि में प्रवेश करेगा और 21 नवंबर को मार्गी होने के बाद पुनः 5 दिसंबर बृहस्पतिवार सुबह 10:23 बजे बजे वृश्चिक राशि में पुनः प्रवेश कर जाएगा।

इस प्रकार बुध के इस वक्री अवस्था में होने वाले गोचर का प्रभाव सभी 12 राशियों पर देखने को मिलेगा। तो आईये जानते हैं बुध का प्रभाव आपकी राशि पर किस प्रकार होगा।

मेष राशि

आपकी राशि के लिए बुध तीसरे और छठे भाव का स्वामी है और इस गोचर के दौरान वक्री अवस्था में बुध आपके सप्तम भाव में गोचर करेगा। सप्तम भाव हमारे जीवन में होने वाली बड़ी साझेदारियों का भाव है। इसी के आधार पर हमारे जीवन



साथी का चयन होता है तथा व्यावसायिक साझेदारी भी इसी से देखी जाती है। इसके साथ-साथ विदेशी व्यापार भी सप्तम भाव के ही कारकत्वों के अंतर्गत आता है। बुध के इस वक्री गोचर का आपके सप्तम भाव पर सबसे अधिक प्रभाव पड़ेगा जिसके कारण दांपत्य जीवन में तनाव की स्थिति आ सकती है और साथ ही साथ आपके व्यावसायिक साझेदार से आपके संबंध बिगड़ सकते हैं। अपने जीवन साथी से किसी बात पर व्यर्थ ना उलझे और कोई समस्या हो तो उसे मिल बैठकर सुलझाने का प्रयास करें। इसके परिणाम स्वरूप व्यापार में समस्या और घाटे का सामना करना पड़ सकता है। आपके व्यवहार में भी निर्णय की

स्थिति उत्पन्न हो सकती है जिसकी वजह से महत्वपूर्ण निर्णय लेने के समय आप खुद को असहज महसूस करेंगे और इसकी वजह से जीवन में समस्या उत्पन्न हो सकती है। छोटी दूरी की यात्राएं अधिक सफलता दायक साबित नहीं होंगे इसलिए यात्रा के दौरान कष्ट हो सकता है, सावधानी बरतें। अपने विरोधियों के प्रति सावधान और सतर्क रहें तथा इस दौरान किसी से कर्ज़ न लें और न ही दें।

उपाय: गाय के गोबर से आंगन में लिपाई करें और यदि ऐसा संभव ना हो तो घर में गाय के गोबर पर लोबान जलाएं तथा उसका धुआ पूरे घर में फैलायें।

वृषभ राशि

आपकी राशि के लिए वह दूसरे और पांचवें भाव का स्वामी है और इस गोचर के दौरान अपनी वक्री अवस्था में वह आपके षष्ठ्म भाव में प्रवेश करेगा। छठे भाव के द्वारा जीवन में संघर्षों के बारे में पता चलता है।



किसी प्रतियोगी परीक्षा में सफलता की बात करनी हो अथवा अपने विरोधियों पर विजय पाना हो या किसी मुकदमे में जीतना, इन सभी के लिए छठे भाव का विचार किया जाता है। साथ ही साथ किसी भी प्रकार के रोग तथा कर्ज आदि के बारे में जानने के लिए भी छठा भाव विचारणीय है। छठे भाव में बुध का वक्री गोचर करना किसी बीमारी की ओर इशारा करता है। ऐसे में आपको अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहना चाहिए और किसी भी तरह की समस्या होने पर डॉक्टर से तुरंत संपर्क करें। अपने विरोधियों पर आप भारी पड़ेंगे और कोई नया कर्ज लेकर अपने पुराने कर्ज को चुकाने का प्रयास करेंगे। आपकी संतान के लिए समय उन्नति दायक रहेगा। यदि आप विद्यार्थी हैं तो शिक्षा में अच्छे परिणामों की प्राप्ति होगी और आपकी कठिन मेहनत रंग लाएगी। आकस्मिक खँचों के योग बनेंगे। आपका संचित धन व्यर्थ के बाद विवाद में खर्च हो सकता है तथा किसी पारिवारिक सदस्य की

बीमारी पर भी खर्च करने की स्थिति बन सकती है। आप विदेश यात्रा पर जाने का प्रयास इस दौरान कर सकते हैं हालांकि उसमें सफलता मिलने की संभावना थोड़ी कम ही रहेगी। इस दौरान आपके प्रेम संबंधों में उत्तार-चढ़ाव की स्थिति आ सकती है।

उपाय: चितकबरी रंग के कुत्ते को दूध और ब्रेड दें।

मिथुन राशि

बुध ग्रह आपकी राशि का स्वामी होने के साथ-साथ आपके चतुर्थ भाव का स्वामी है और अपने इस गोचर के दौरान वक्री गति से आपके पंचम भाव में प्रवेश करेगा। पांचवा भाव हमारी बुद्धि और ज्ञान की दिशा का निर्धारण करता है। इसी के आधार

पर हमारी शिक्षा, हमारे प्रेम प्रसंग और हमारी संतान के बारे में पता चलता है। बुध के पंचम भाव में गोचर करने के कारण आपका मन नई-नई चीजों को सीखने के लिए लालायित होगा और आप इसके लिए अतिरिक्त प्रयास करेंगे। यदि आप विद्यार्थी हैं तो अपने सिलेबस को बार-बार रिवाइज करेंगे तथा शास्त्रों, गणित, सांख्यिकी तथा तार्किक क्षमता पर आधारित विषयों में विशेष दिलचस्पी दिखाएँगे। आप अपनी संतान के प्रति काफी गंभीर रहेंगे और उनकी सफलता को लेकर आप भी अपनी ओर से प्रयास करेंगे। इस गोचर के दौरान आपको अच्छी आमदनी प्राप्त होने के योग बनेंगे और आपका हाथ पैसों से खाली नहीं रहेगा। इस दौरान आपकी माता जी को कोई विशेष लाभ हो सकता है। आप किसी कलात्मक अभिरुचि में अपने हाथ आजमा सकते हैं और इसका आपको सकारात्मक परिणाम प्राप्त होगा। प्रॉपर्टी संबंधित कोई डील फिलहाल कुछ समय के लिए टाल देना आपके लिए फायदेमंद रहेगा।

उपाय: प्रतिदिन गाय को हरा चारा तथा साथ में थोड़ा सा गुड़ खिलाना आपके लिए बेहतर रहेगा।



कर्क राशि

इस राशि के लोगों के लिए बुध आपकी कुंडली के बारहवें तथा तीसरे भाव का स्वामी है। अपने इस गोचर के दौरान वे आपके चतुर्थ भाव में संचरण करेगा। चतुर्थ भाव हमारे सुख का भाव है और यही हमारी माता के बारे में भी बताता है।



इसके अतिरिक्त किसी भी प्रकार की संपत्ति तथा वाहन आदि की स्थिति के बारे में भी इसी भाव से पता चलता है। चतुर्थ भाव में बुध ग्रह की उपस्थिति वह भी वक्री अवस्था में आपके लिए बुध कुछ परेशानियां खड़ी कर सकता है। एक ओर जहां आपकी माताजी का स्वास्थ्य परेशान करेगा, वहीं दूसरी ओर पारिवारिक जीवन में भी कलह देखने को मिल सकती है। इसकी वजह होगी लोगों का एक दूसरे के प्रति अधिक और बेमतलब का बोलना। इस कारण पारिवारिक जीवन थोड़ा तनावपूर्ण रहेगा। हालांकि कार्य क्षेत्र में आपके सहकर्मी आपके लिए सफलता का मार्ग बनाएँगे। निजी प्रयासों से सफलता मिलेगी। आपको इस दौरान अपने कार्य क्षेत्र पर विशेष ध्यान देना चाहिए और अच्छे से अच्छा प्रदर्शन करना चाहिए क्योंकि इसका परिणाम आपको शीघ्र ही मिलने वाला है। इस दौरान कोई वाहन अथवा प्रॉपर्टी खरीदने में सफलता मिल सकती है तथा विदेशी संपर्कों से लाभ मिलने का मार्ग भी प्रशस्त होगा।

उपाय: हनुमान जी की आराधना करें और उन्हें मंगलवार के दिन मीठा पान अर्पित करें।

सिंह राशि

सिंह राशि के लोगों के लिए बुध ग्रह दूसरे तथा ग्यारहवें भाव का स्वामी है तथा अपने वक्री गोचर के दौरान आपके तृतीय भाव में प्रवेश करेगा।



माह का प्रमुख गोचर

तीसरा भाव हमारे संचार माध्यमों तथा संवाद शैली का भाव है। इस भाव की सहायता से हम अपने छोटे भाई बहनों तथा छोटी दूरी की यात्राओं, हमारे द्वारा किए जाने वाले प्रयासों तथा हमारे साहस और पराक्रम के बारे में पता चलता है। तीसरे भाव में बुध का गोचर होने से आपके प्रयासों में वृद्धि होगी और आप किसी भी काम को करने के लिए अपनी ओर से शत-प्रतिशत प्रयास करेंगे। आप अपने छोटे भाई बहनों की आर्थिक तौर पर मदद भी करेंगे हालांकि उन्हें किसी तरह की समस्याएं उत्पन्न हो सकती है। संचार माध्यमों के द्वारा आपको किसी प्रकार का शुभ समाचार प्राप्त हो सकता है। छोटी दूरी की यात्राएं आपके लिए फायदे का सौदा साबित होंगी और इस दौरान आप काफी आगे तक प्रसन्न चित्त रहेंगे। आपके पिता से आपके संबंधों में कुछ उतार-चढ़ाव की स्थिति रहेगी और माता-पिता का स्वास्थ्य थोड़ा सा कमजोर रह सकता है। परिवार में किसी पुराने मित्र अथवा रिश्तेदारों का आवागमन हो सकता है जिसके कारण परिवार का वातावरण उत्साह से पूर्ण तथा उल्लासमय बना रहेगा। अपने सहकर्मियों से अच्छा व्यवहार करें अन्यथा व्यर्थ के विरोध में जाकर आपके खिलाफ कोई कार्य कर सकता है, जिसका आपको अच्छा खासा खामियाज़ा भुगतना पड़ सकता है।

उपाय: रविवार के दिन गाय को कच्चे गेहूं का आटा और थोड़ी-सी चीनी मिलाकर खिलाने से आपके जीवन की समस्याएं दूर होंगी।

कन्या राशि

बुध ग्रह आपकी ही राशि का स्वामी है और साथ ही साथ आपके दशम भाव पर भी आधिपत्य रखता है। अपने इस गोचर के दौरान वह आपके द्वितीय भाव में प्रवेश करेगा। दूसरा भाव हमारी वाणी तथा भोजन का भाव होता है। हम कैसा भोजन



खाते हैं और कैसी वाणी बोलते हैं यह सब कुछ दूसरा भाव बताता है और इसी के साथ-साथ हमारे संचित धन तथा हमारे कुटुंब के बारे में भी यही भाव जानकारी देता है। इस भाव में वक्री बुध का गोचर करना पारिवारिक संबंधों में कुछ कड़वाहट उत्पन्न कर सकता है। संभव है कि बात जरा सी भी ना हो और उसका बतंगड़ बन जाए जिसकी वजह से परिवार का वातावरण अशांति पूर्ण हो सकता है। हालांकि आपकी ओर से बात को संभालने का पूरा प्रयास किया जाएगा। आपको धन लाभ होने की अच्छी स्थिति रहेगी और जो पैसा कमाएंगे वह बैंक बैलेंस के रूप में आपके पास इकट्ठा हो सकता है। इस दौरान आप कोई ऐसा कार्य कर सकते हैं जिसकी वजह से परिवार के लोगों में आपकी इमेज अच्छी बनेगी। आप थोड़े पेटू हो सकते हैं उसकी वजह से मोटापा आपको अपनी चपेट में ले सकता है। हालांकि आपका सेंस ऑफ ह्यूमर आपको भीड़ में सबसे अलग दिखाएगा लोग आपके प्रति आकर्षित भी होंगे।

उपाय: शनिवार के दिन सरसों के तेल में अपनी छाया देख कर दान करना अर्थात् छाया दान करना आपके लिए बेहतर रहेगा।

तुला राशि

तुला राशि के लोगों के लिए बुध बारहवें तथा नवें भाव का स्वामी है और इस दौरान बुध का गोचर आपके प्रथम भाव में होगा। इसे लग्न भाव भी कहते हैं। प्रथम भाव हमारे व्यक्तित्व का आईना होता है। इसी के द्वारा हमारा शरीर, समाज में हमारी पहचान तथा रोग प्रतिरोधक क्षमता के बारे में भी जाना जा सकता है। आपके लग्न में वक्री बुध का गोचर बार-बार किसी काम के लिए आप से मेहनत करवाएगा। उदाहरण के लिए यदि आप घर में ताला लगाएंगे तो बार-बार उसे चेक करेंगे कि आपने सही ताला लगाया है अथवा नहीं। जहां एक ओर यह आदत आपको लाभ देगी वही आपको मानसिक रूप से तनाव देगी। आप किसी बात को



लेकर पक्षे तौर पर आशान्वित नहीं रहेंगे जिसका असर आपके जीवन के विभिन्न क्षेत्रों पर पड़ेगा। विदेशी स्रोतों से आपको कोई लाभ मिल सकता है। वहीं भाग्य आपका साथ देगा इसलिए जो कोई भी आप कार्य करें उसे पूरे मन से करें, तभी आपको लाभ मिलेगा। आपके कार्यों में पिता और गुरु का सहयोग प्राप्त होगा जिसकी वजह से कुछ कार्य आपके अधिक परिश्रम के बिना ही सफलता प्राप्त करेंगे। इस गोचर की अवधि में आप स्वयं पर भी अच्छा-खासा खर्च कर सकते हैं।

उपाय: छोटी कन्याओं के पैर छूकर आशीर्वाद लें और उन्हें सफेद रंग की कोई मिठाई शुक्रवार के दिन बांटें।

वृश्चिक राशि

बुध ग्रह का गोचर आपकी राशि से द्वादश भाव में होगा। वह आपके लिए अष्टम तथा एकादश भाव का स्वामी है। बारहवाँ भाव हमारी विदेश यात्राओं को बताने का कारगर माध्यम है। इसकी सहायता से हम अपने जीवन में आने वाले ख़र्चों, हानियों, शयन सुख तथा आध्यात्मिक स्तर को भी जान सकते हैं क्योंकि यह मोक्ष त्रिकोण से संबंधित भाव भी है। इस भाव में बुध की स्थिति आपके ख़र्चों में बेतहाशा वृद्धि कर सकती है जिसकी वजह से आपकी आर्थिक स्थिति का संतुलन बिगड़ सकता है। अचानक से कुछ ऐसी यात्राएं करनी पड़ सकती हैं जिसकी वजह से आपका बजट भी बिगड़ेगा और आपको स्वास्थ्य समस्याएं भी घेर सकती हैं। किसी से वाद-विवाद में उलझना आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा तथा आपके विरोधी सरल प्रबल रहेंगे, इसलिए सतर्क रहें।

उपाय: भगवान विष्णु की उपासना श्री विष्णु सहस्रनाम स्त्रोत के पाठ के साथ प्रतिदिन करें।

धनु राशि

आपकी राशि से एकादश भाव में गोचर करने वाला वक्री बुध आपकी राशि के लिए सप्तम और दशम भाव का स्वामी ग्रह है। एकादश भाव जीवन में लाभ का भाव माना जाता है क्योंकि हमारी सभी आकांक्षाएं इसी भाव से देखी जाती हैं। हमें हमारी मेहनत का



लाभ कितना मिलेगा तथा हमारे जीवन में उन्नति का मार्ग प्रशस्त होगा ये इसी भाव से देखा जाता है। यह वृद्धि का भाव भी है। बुध के इस भाव में गोचर करने के दौरान आपको जीवन साथी के माध्यम से आपको कोई लाभ प्राप्त होने का भी प्रबल योग बन रहा है। हालांकि आप किसी अन्य व्यक्ति के प्रेम संबंध में पड़ सकते हैं जिसका प्रभाव आपके दांपत्य जीवन पर प्रतिकूल रूप से पड़ सकता है। कार्य क्षेत्र में वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग आपको प्राप्त होगा जिससे आपका पद और प्रतिष्ठा बढ़ सकता है। बड़े भाई बहनों के साथ भी आपके संबंध सुधरेंगे और आप की महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति होगी। किसी दूरगामी लाभ की प्राप्ति होने की संभावना है जो काफी लंबे समय तक आपकी आमदनी का जरिया बना रहेगा। शिक्षा के क्षेत्र में कुछ उत्तार-चढ़ाव का सामना करना पड़ सकता है इसकी वजह से आपको और अधिक मेहनत से एकाग्रता के साथ पढ़ाई करनी आवश्यक होगी। संतान के लिए यह गोचर अधिक अनुकूल नहीं होगा इसलिए उनका ध्यान रखें।

उपाय: बृहस्पतिवार के दिन पीपल के पेड़ को छुए बिना जल चढ़ाएं तथा ब्राह्मणों को यथाशक्ति भोजन करवाकर दक्षिणा दें।

मकर राशि

बुध ग्रह का गोचर आपकी राशि से दशम भाव में होगा तथा वह आपकी राशि से छठे तथा नवम भाव पर अपना अधिकार रखता है। दशम



माह का प्रमुख गोचर

भाव हमारे जीवन में कर्म पर आधिपत्य रखता है और जीवन में हमारे कर्म की दिशा का निर्धारण करता है। इसी के द्वारा हमारी ख्याति भी देखी जाती है। दशम भाव में बुध के प्रभाव के कारण कार्य क्षेत्र में आपकी स्थिति पहले के मुकाबले और भी मजबूत हो जाएगी और आपको मनचाहा कार्य प्राप्त हो सकता है। कुछ ऐसे प्रोजेक्ट होंगे जो केवल आप के वरिष्ठ अधिकारी आपको ही देना पसंद करेंगे क्योंकि उनकी नजर में आपकी छवि काफी अच्छी होगी। कोई मनचाहा ट्रांसफर भी इस दौरान हो सकता है जिसमें आपको खुशी मिलेगी। पारिवारिक जीवन में सुख शांति की वृद्धि होगी और परिवार का वातावरण भी आपको आगे बढ़ने की प्रेरणा देगा। आपने जो आज तक मेहनत की है उसका उचित प्रतिफल आपको इस गोचर के दौरान प्राप्त होगा। कुछ समय पहले कुछ ऐसे कार्य हैं जो आपके छूट गए हैं उन्हें पूरा करने का समय आ गया है, क्योंकि यही कार्य भविष्य में आपकी उन्नति का रास्ता दिखाएँगे।

उपाय: श्री गणेश जी महाराज की नित्य उपासना करें और उन्हें दुर्वाकुर अर्पित करें।

कुंभ राशि

बुध ग्रह का गोचर वक्री अवस्था में आपके नवम भाव में होगा और वह आपकी राशि के लिए पांचवें तथा आठवें भाव का स्वामी है। नवम भाव हमारे भाग्य का भाव होने के कारण जीवन में भाग्योदय के बारे में बताता है। इसके साथ ही लंबी दूरी की यात्राएं, गुरु तथा मान-सम्मान की प्राप्ति और धार्मिक गतिविधियों के बारे में इसी भाव के द्वारा पता चलता है। अचानक से धन लाभ होने की स्थिति आपके समक्ष आ सकती है अथवा किसी प्रकार की कोई पैतृक संपत्ति इस दौरान आपको प्राप्त हो सकती है। पिता के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है इसलिए उनके स्वास्थ्य पर नियमित रूप से ध्यान दें। उच्च शिक्षा प्राप्त करने की



इच्छा रखते हैं तो आपकी इच्छा इस दौरान पूरी हो सकती है और किसी अच्छे कॉलेज में दाखिला भी मिल सकता है। संतान के लिए भी यह समय काफी उन्नति दायक रहेगा। आपके प्रेम प्रसंगों में भी आपको सफलता प्राप्त होगी। आप अपने प्रियतम के साथ किसी सुदूर मनोरंजक यात्रा पर जा सकते हैं जिससे आपके रिश्ते में गहराई आएगी और आपका प्रेम परवान चढ़ेगा।

उपाय: मां दुर्गा की आराधना दुर्गा चालीसा द्वारा करें और बुधवार के दिन छोटी कन्याओं को हरे रंग की चूड़ियाँ भेट करें।

मीन राशि

आपकी राशि के लिए बुध ग्रह चतुर्थ तथा सप्तम भाव का स्वामी है और अपने इस गोचर के दौरान वह आपके अष्टम भाव में प्रवेश करेगा। अष्टम भाव अनिश्चितताओं का भाव है। इस भाव के द्वारा ही जीवन में अध्यात्म का स्तर तथा अचानक से



होने वाली घटनाओं का ज्ञान प्राप्त होता है। यह सबसे रहस्यमय भाव है इसलिए शोध और गूढ़ रहस्यों के प्रति हमारा रुझान भी इसी भाव से देखा जाता है। जहां एक ओर आपको आर्थिक रूप से लाभ प्राप्त होगा तो वहीं दूसरी ओर आपकी मानसिक चिंताओं में वृद्धि होगी और दांपत्य जीवन में भी परेशानियों का समय रहेगा। इस दौरान आपका अपने ससुराल पक्ष के लोगों से मन-मुटाव या बहस बाजी हो सकती है जिसका प्रभाव आपके दांपत्य जीवन पर भी पड़ेगा। अनचाही यात्रा पर जाने की संभावना रहेगी जिसमें आपको स्वास्थ्य कष्ट होने की भी संभावना है। जीवन साथी का स्वास्थ्य पीड़ित रहेगा जिसकी वजह से आपके खँचों में भी वृद्धि होगी।

उपाय: भूरे रंग की गाय को गुड़ और हरा चारा खिलाएं तथा किन्नरों से आशीर्वाद लें।

देवउठनी एकादशी व्रत

8
नवंबर, 2019
(शुक्रवार)



कार्तिक मास में आने वाली शुक्ल पक्ष की एकादशी को देवोत्थान, देवउठनी या प्रबोधिनी एकादशी कहा जाता है। यह एकादशी दीपावली के बाद आती है। आषाढ़ शुक्ल पक्ष की एकादशी को देवशयन करते हैं और कार्तिक शुक्ल पक्ष की एकादशी के दिन उठते हैं, इसीलिए इसे देवोत्थान एकादशी कहा जाता है।

मान्यता है कि देवउठनी एकादशी के दिन भगवान विष्णु क्षीरसागर में 4 माह शयन के बाद जागते हैं। भगवान विष्णु के शयनकाल के चार मास में विवाह आदि मांगलिक कार्य नहीं किये जाते हैं, इसीलिए देवोत्थान एकादशी पर भगवान हरि के जागने के बाद शुभ तथा मांगलिक कार्य शुरू होते हैं। इस दिन तुलसी विवाह का आयोजन भी किया जाता है।

देवोत्थान एकादशी व्रत और पूजा विधि

प्रबोधिनी एकादशी के दिन भगवान विष्णु का पूजन और उनसे जागने का आह्वान किया जाता है। इस दिन होने वाले धार्मिक कर्म इस प्रकार हैं-

- इस दिन प्रातःकाल उठकर व्रत का संकल्प लेना चाहिए और भगवान विष्णु का ध्यान करना चाहिए।
- घर की सफाई के बाद स्नान आदि से निवृत्त होकर आंगन में भगवान विष्णु के चरणों की आकृति बनाना

चाहिए।

- एक ओखली में गेरू से चित्र बनाकर फल, मिठाई, बेर, सिंघाड़, ऋतुफल और गन्ना उस स्थान पर रखकर उसे डलिया से ढांक देना चाहिए।
- इस दिन रात्रि में घरों के बाहर और पूजा स्थल पर दीये जलाना चाहिए।
- रात्रि के समय परिवार के सभी सदस्य को भगवान विष्णु समेत सभी देवी-देवताओं का पूजन करना चाहिए।
- इसके बाद भगवान को शंख, घंटा-घड़ियाल आदि बजाकर उठाना चाहिए और ये वाक्य दोहराना चाहिए- उठो देवा, बैठा देवा, आंगुरिया चटकाओ देवा, नई सूत, नई कपास, देव उठाये कार्तिक मास



तुलसी विवाह का आयोजन

देवउठनी एकादशी के दिन तुलसी विवाह का आयोजन भी किया जाता है। तुलसी के वृक्ष और शालिग्राम की यह शादी सामान्य विवाह की तरह पूरे धूमधाम से की जाती है। चूंकि तुलसी को विष्णु प्रिया भी कहते हैं इसलिए देवता जब जागते हैं, तो सबसे पहली प्रार्थना हरिवल्लभा तुलसी की ही सुनते हैं। तुलसी विवाह का सीधा अर्थ है, तुलसी के माध्यम से भगवान का आह्वान करना। शास्त्रों में कहा गया है कि जिन दंपत्तियों के कन्या नहीं होती, वे जीवन में एक बार तुलसी का विवाह करके कन्यादान का पुण्य अवश्य प्राप्त करें।



पौराणिक कथा

एक समय भगवान नारायण से लक्ष्मी जी ने पूछा- “हे नाथ! आप दिन रात जागा करते हैं और सोते हैं तो लाखों-करोड़ों वर्ष तक सो जाते हैं तथा इस समय में समस्त चराचर का नाश कर डालते हैं। इसलिए आप नियम से प्रतिवर्ष निद्रा लिया करें। इससे मुझे भी कुछ समय विश्राम करने का समय मिल जाएगा।”

लक्ष्मी जी की बात सुनकर नारायण मुस्कुराए और बोले- “देवी! तुमने ठीक कहा है। मेरे जागने से सब देवों और खासकर तुमको कष्ट होता है। तुम्हें मेरी वजह से जरा भी अवकाश नहीं मिलता। अतः तुम्हारे कथनानुसार आज से मैं प्रतिवर्ष चार मास वर्षा ऋतु में शयन किया करूँगा। उस समय तुमको और देवगणों को अवकाश होगा। मेरी यह निद्रा अल्पनिद्रा और प्रलय कालीन महानिद्रा कहलाएगी। मेरी यह अल्पनिद्रा मेरे भक्तों के लिए परम मंगलकारी होगी। इस काल में मेरे जो भी भक्त मेरे शयन की भावना कर मेरी सेवा करेंगे और शयन व उत्थान के उत्सव को आनंदपूर्वक आयोजित करेंगे उनके घर में, मैं तुम्हारे साथ निवास करूँगा।”

देवउठनी एकादशी व्रत मुहूर्त New Delhi, India के लिए

देवउठनी एकादशी पारणा मुहूर्त :

06:38:39 से 08:49:07 तक 9, नवंबर को

अवधि : 2 घंटे 10 मिनट

अपने शहर का मुहूर्त जानने के लिए [यहाँ क्लिक करें](#)

जानें कब होगा आपका भाग्योदय!
महा कुण्डली

कीमत: **₹1105**
@ मात्र **₹650**

[अभी खरीदें](#)

महा कुण्डली

100+पृष्ठ

क्या कहती हैं हाथों की रेखाएं ?



हस्त रेखा ज्ञान एक ऐसी विद्या है जिसके द्वारा किसी व्यक्ति के स्वभाव, भाग्य और तीनों कालों (भूत, वर्तमान, भविष्य) के बारे में जाना जा सकता है। हस्त रेखा विज्ञान पर यूनान के महान दार्शनिक अरस्तू ने अपने विचार रखते हुए कहा था, 'मनुष्य के हाथों की रेखाएं बिना किसी वजह से उकरी हुई नहीं होती हैं बल्कि ये उसके भविष्य की संभावनाओं को प्रकट करती हैं।' शास्त्रों के अनुसार हस्त रेखा ज्योतिष को विष्णु शास्त्र का घटक माना गया है। हस्तरेखा विज्ञान में हाथ की रेखाओं के साथ-साथ हाथ के आकार, बनावट, रंग, त्वचा और नाखून का भी अध्ययन किया जाता है। हालांकि ज्योतिष शास्त्र में हस्तरेखा को देखने की विधि बतायी गई है।

हस्त रेखा ज्योतिष का महत्व

मनुष्य अपने भविष्य को लेकर हमेशा से जिज्ञासु रहा है। उसके मन अपने आने वाले कल को लेकर कई तरह के सवाल उठते हैं। वह अपने करियर, व्यापार, शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवार, विवाह, प्रेम आदि के बारे में जानने की

कोशिश करता है। ऐसे में हस्त रेखा विज्ञान उसकी मदद करता है। इस ज्योतिष विद्या से वह भविष्य में आने वाली चुनौतियों को जानकर उनका समाधान निकाल सकता है।

कई बार ऐसा होता है कि मनुष्य को उसकी वास्तविक क्षमता का आभास नहीं हो पाता है जिसके कारण वह गलत दिशा में अपनी ऊर्जा व्यय करता है। परंतु यदि उसको अपनी वास्तविक शक्ति ज्ञात हो जाए तो वह सकारात्मक दिशा की ओर बढ़कर सफलता प्राप्त करता है। हस्त रेखा ज्ञान से वह अपनी शक्तियों को पहचान सकता है।

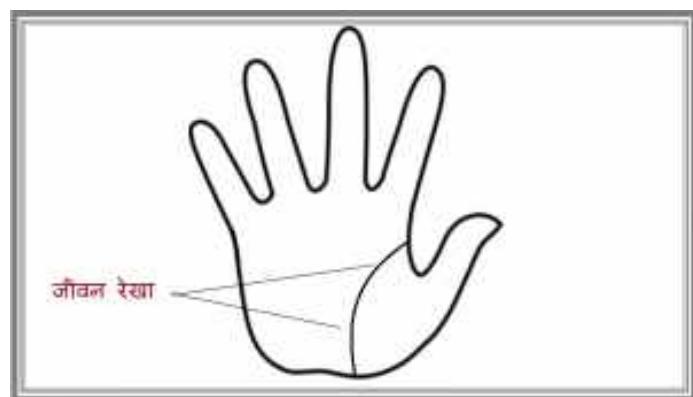
हस्त रेखा पर ग्रह क्षेत्र

हमारी हथेली पर ग्रह क्षेत्रों को निर्धारित किया गया है। इन ग्रह क्षेत्रों को पर्वत कहा जाता है। हथेली पर स्थित ग्रह के स्थानों पर या तो उभार होता है या फिर ये एक दम सपाट होते हैं। ग्रह क्षेत्रों का उभरना जन्मकालीन ग्रहों की मजबूत स्थिति को दर्शाता है। वहीं यदि ग्रह क्षेत्र सपाट हों तो जन्मकालीन ग्रह की स्थिति को बलहीन माना जाता है।

हस्तरेखा ज्योतिष के अनुसार जिन जातकों की हथेली पर उभार होता है वे अवसरों का लाभ उठाकर सफलता के शिखर पर पहुँचते हैं। इसके विपरीत जिन जातकों की हथेली पर स्थित ग्रह क्षेत्र सपाट होते हैं उन्हें सफलता के लिए अधिक संघर्ष करना पड़ता है।

हस्त रेखा कैसे देखें?

हस्त रेखा से भविष्य जानना तभी संभव है जब आपको हस्त रेखा देखने की विधि ज्ञात हो। इसके लिए सबसे पहले हमें अपने दोनों हाथ और उनकी लकीरों के बारे में ज्ञान होना आवश्यक है। हस्त रेखा विज्ञान के अनुसार हमारे दायें और बायें दोनों हाथों का अलग-अलग महत्व है। माना जाता है कि किसी भी व्यक्ति का बायां हाथ उसके क्षमता को प्रकट करता है जबकि दायां हाथ उसके व्यक्तित्व को दर्शाता है। वहीं सीधे हाथ की रेखा मनुष्य के भविष्य का बोध कराती है, जबकि उल्टे हाथ की रेखा उसके अतीत के बारे में बताती है। इसके अलावा हमारी हथेली में उकरी हुई रेखाओं के भी भिन्न-भिन्न अर्थ निकलते हैं और हस्तरेखा विज्ञान में इन्हें अलग-अलग नामों से भी जाना जाता है। जो इस प्रकार हैं:-



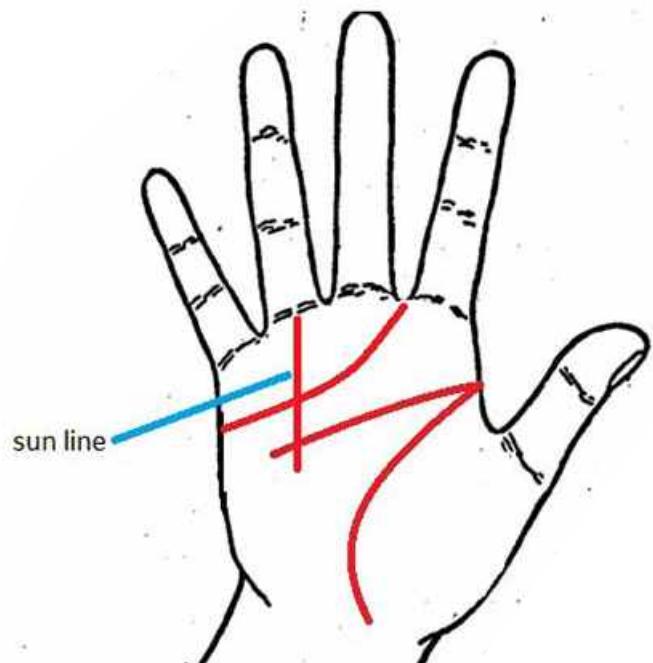
- जीवन रेखा:** यह रेखा अंगूठे के पास और हथेली के किनारे से शुरू होती है। जीवन रेखा प्रत्येक मनुष्य के व्यक्तित्व, शक्ति, शारीरिक स्वास्थ्य और सामान्य अवस्था को दर्शाती है। इसके अतिरिक्त यह रेखा हमारे जीवन में होने वाले बड़े बदलाव और दुखद घटनाओं को भी इंगित करती है। जीवन रेखा सुंदर, पतली और गहरी हो तो यह जीवन में उत्साह बनाए

रखती है। जब शुक्र के लिए पर्याप्त स्थान छोड़कर जीवन रेखा आगे की बढ़े तो यह स्वास्थ्य जीवन के लिए शुभ होती है।

- मस्तिष्क रेखा:** यह रेखा हथेली के किनारे पर तर्जनी उंगली के नीचे से बाहर की ओर जाती है। हस्त रेखा ज्योतिषी के अनुसार मस्तिष्क रेखा प्रत्येक व्यक्ति के दिमाग और उसके अनुरूप उसकी संवाद शैली, सीखने की कला और बौद्धिकता का प्रतिनिधित्व करती है। जब मस्तिष्क रेखा और जीवन रेखा दोनों एक ही रेखा बनाकर लंबी दूरी तक चलती हैं तो जातक लंबी उम्र तक अपने परिजनों के प्रभाव में रहता है। यदि जीवन रेखा और मस्तिष्क रेखा का उद्भव अलग-अलग हो तो यह स्थिति किसी पारिवारिक सदस्य की कमी को दर्शाती है। ऐसे जातक हठी भी हो सकते हैं।
- स्वास्थ्य रेखा:** यह रेखा हथेली पर सबसे नीचे की ओर कलाई से शुरू होकर छोटी उंगुली की तरफ जाती है। यह रेखा स्वास्थ्य संबंधी मामलों को दर्शाती है जिनका सामना भविष्य में मनुष्य को करना पड़ सकता है। यदि हथेली में यह रेखा खंडित हो तो जातकों को स्वास्थ्य संबंधी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। जब स्वास्थ्य रेखा सीधी व स्पष्ट हो और यह बुध क्षेत्र तक पहुँचती है तो ऐसे जातकों की रोग प्रतिरोध क्षमता मजबूत होती है।
- हृदय रेखा:** यह रेखा हाथ पर सबसे ऊपर उंगलियों के नीचे की ओर स्थित होती है। हस्त रेखा विद्वानों के अनुसार, यह रेखा हृदय से संबंधित मामलों और भावनात्मक विचारों को दर्शाती है। यह रेखा हमारे मस्तिष्क में उत्पन्न होने वाले भावनात्मक पक्ष का प्रतिनिधित्व करती है। यदि इस रेखा पर कोई जालनुमा आकृति बनी हुई है तो यह दर्शाती है कि वह व्यक्ति बहुत बेचैन और संवेदनशील रहेगा।



- **भाग्य रेखा:** यह रेखा हथेली पर सबसे नीचे कलाई से शुरू होकर मध्य उंगली तक जाती है। भाग्य रेखा से मनुष्य के करियर, जीवन में मिलने वाली सफलता और चुनौतियों का पता चलता है। जब भाग्य रेखा का आरंभ चंद्रमा के स्थान से हो तो जातक नौकरी करके अपना जीवनयापन करता है। जब जीवन रेखा से भाग्य रेखा उदय हो तो ऐसे जातकों का भाग्योदय देरी से होता है
- **सूर्य रेखा:** यह रेखा अनामिका उंगुली के नीचे स्थित होती है। हस्त रेखा जानकारों का कहना है कि सूर्य रेखा जीवन में मिलने वाले सम्मान या विवादित प्रकरण संबंधी मामलों को दर्शाती है। जब सूर्य रेखा सूर्य क्षेत्र से नीचे की ओर बढ़े तो यह स्थिति व्यक्ति को असाधारण बना देती है। ऐसे लोग बहुत योग्य हो सकते हैं



EUREKA



Innovation in
Career Counselling:

CogniAstroTM
Right Counselling, Bright Career

Know More

अयोध्या जाते समय इन प्राचीन धार्मिक धरोहरों के भी करें दर्शन



अयोध्या के प्राचीन धार्मिक स्थल

इन दिनों राम जन्मभूमि और बाबरी मस्जिद विवाद को लेकर सुप्रीमकोर्ट के फैसले का इंतजार है दलीलों में पौराणिक ऋग्वेद, श्लोक और नदी तक का जिक्र किया गया। इस मामले को चीफ जस्टिस रंजन गोगोई के अलावा जस्टिस एसए बोबडे, जस्टिस धनंज वाई चंद्रचूड़, जस्टिस अशोक भूषण और जस्टिस एस. अद्बुल नजीर वाली एक पांच सदस्यों वाली संवैधानिक पीठ ने सुना है। लेकिन हम इस मसले पर नहीं बल्कि अयोध्या के बारे में बताने जा रहे हैं।

अयोध्या की प्राचीन धार्मिक धरोहरें

बता दें कि अयोध्या का हिन्दू धर्म में हमेशा से ही अपना एक विशेष महत्व रहा है। जिसके चलते भी अयोध्या का इतिहास अब एक आकर्षक का केंद्र बन चूका है। इसके प्राचीन इतिहास को देखें तो उस समय भी ये सबसे पवित्र

शहरों में से एक था जहां हिंदू धर्म के विद्वानों ने इस पवित्र स्थान का एकजुटता के साथ सुन्दर निर्माण कर इसके महत्व में अपना योगदान दिया था। पौराणिक मान्यताओं अनुसार इस जगह को एक ऐसे शहर के रूप में वर्णित किया गया था जो देवताओं द्वारा ही बनाई गई थी और वो उस समय स्वर्ग की तरह समृद्ध थी। लेकिन समय के साथ इसमें कई बदलाव कर दिए गए। ऐसे में आज हम आपको अयोध्या की उन प्राचीन धार्मिक धरोहरों के बारे में विस्तार से बताने जा रहे हैं, जहाँ जाकर आपको इस स्थान के पौराणिक महत्व का वर्णन मिलेगा।

• लक्ष्मण घाट

अयोध्या का लक्ष्मण घाट बेहद प्रसिद्ध घाटों में से एक है, जहाँ आपको इस घाट पर लक्ष्मण जी का एक प्राचीन मंदिर मिलेगा। इस मंदिर में आपको पांच फुट ऊँची लक्ष्मण जी

की एक प्राचीन मूर्ति के दर्शन करने का अवसर भी मिलेगा। माना जाता है कि लक्ष्मण की ये भव्य मूर्ति, मंदिर के सामने वाले कुंड में पाई गई थी। कहते हैं कि यही वो घाट है जहाँ से लक्ष्मण जी परम धाम पधारे थे।

• अहिल्याबाई घाट

मान्यताओं अनुसार अहिल्याबाई घाट पर ही भगवान श्रीराम ने महा यज्ञ किया था। इस घाट के थोड़ी दूर आपको त्रेतानाथजी के मंदिर के दर्शन करने मिलते हैं। जिसमें भगवान राम अपनी पत्नी सीता संग विराजमान हैं।

• स्वर्गद्वार घाट

स्वर्गद्वार घाट के समीप आपको भगवान राम के पुत्र कुश द्वारा निर्मित श्री नागेश्वरनाथ महादेव जी का मंदिर मिलता है। स्वर्गद्वार घाट के इतिहास को लेकर कहा जाता है कि बाबर ने जब रामलला के जन्म स्थान के मंदिर को खंडित किया था तो उस वक्त मंदिर के पुजारियों ने भगवान राम की मूर्ति उठाकर इसी घाट पर स्थापित कर दी थी। आज इसी घाट पर देश-विशेष से आकर लोग पिंडदान करते हैं।

• हनुमानगढ़ी

हनुमान गढ़ी सरयू तट से लगभग एक मील दूर बसे एक छोटे से नगर में स्थित है। यहाँ आपको एक ऊँचे टीले पर चार कोट का छोटा सा दुर्ग दिखाई देगा, जिसमें से ही करीब 60 सीढ़ियां चढ़कर हनुमानजी के मंदिर में जाने का स्थान है। मंदिर के चारों ओर आपको गाँव मिलेगा जिसके घरों में अयोध्या के साधु संत सालों से रह रहे हैं। हनुमानगढ़ी के दक्षिण में सुग्रीव टीला और अंगद टीला मौजूद है।

• दर्शनेश्वर

हनुमानगढ़ी से कुछ दूरी पर आपको अयोध्या नरेश के श्री राम के दर्शन करने को मिलते हैं। जिसकी सुंदर वाटिका में दर्शनेवर महादेव का एक प्राचीन सुंदर मंदिर है।

• कनक भवन

कनक भवन में ही अयोध्या का मुख्य मंदिर निर्मित है। माना

जाता है कि इस प्राचीन मंदिर का निर्माण ओरछा नरेश ने किया था। अयोध्या के सभी भव्य एवं विशाल मंदिरों में इसका नाम सबसे पहले आता है। इसे आज भगवान श्रीराम का अंतःपुर और माता सीता का महल कहते हैं। इसलिए इसमें आपको मुख्य तौर पर भगवान राम और मां सीता के ही दर्शन होते हैं। इसमें मौजूद सिंहासन पर आपको बड़ी मूर्तियां दिखाई देंगी, जिसके आगे सीता-राम की एक छोटी मूर्ति के भी दर्शन करने मिलते हैं। जिन्हे बेहद प्राचीन बताया जाता है। इस मंदिर की भव्यता ही इसके इतिहास का वर्णन करती है, जिसके चलते ही इस मंदिर को मुख्य मंदिर माना जाता है।

• जन्म स्थान

कनक भवन से आगे आपको श्रीराम जन्मभूमि दिखाई देगी। बता दें कि अयोध्या का यही वो विवादित स्थान है, जिसको लेकर कई वर्षों से विवाद चल रहा है। इसके बारे में माना जाता है कि यहाँ एक प्राचीन मंदिर हुआ करता था जिसे तुड़वाकर बाबर ने बाबरी मस्जिद का निर्माण करवाया था। परंतु अब यहाँ फिर से श्रीराम की मूर्ति विराजमान है। उस प्राचीन मंदिर के घेरे में राम जन्मभूमि का एक छोटा प्राचीन मंदिर और भी बना हुआ है। इसके अलावा जन्म स्थान के आस-पास आपको कई प्राचीन मंदिर दिखाई देंगे। जिसमें गीता रसोई, चौबीस अवतार, कोप भवन, रक्षसिहासन, आनंद भवन, रंग महल, इत्यादि शामिल हैं।

• तुलसी चौरा

अयोध्या के राजमहल के दक्षिण में एक खुले बड़े मैदान में तुलसी चौरा है। इस स्थान को लेकर मान्यता है कि ये वही स्थान है, जहाँ विद्वान गोस्वामी तुलसीदास जी ने श्री रामचरित्र मानस की रचना की थी। इसी कारण इस जगह का नाम भी तुलसी चौरा पड़ा था।

• मणि पर्वत

तुलसी चौरा से करीब एक मील दूर अयोध्या रेलवे स्टेशन के पास जंगल में एक बड़ा टीला है, जिसके ऊपर प्राचीन मंदिर है। माना गया है कि यही पर सम्राट अशोक के 200 फुट ऊँचे एक स्तूप का अवशेष मिलता है।

• दातुन कुंड

यह स्थान मणि पर्वत के बेहद निकट है। दातुन कुंड को लेकर मान्यता है कि इसी स्थल पर भगवान श्रीराम रोज़ाना दातुन करते और दातुन के समय इसी कुंड का पानी इस्तेमाल करते थे। कुछ लोग तो ये भी कहते हैं कि जब गौतम बुद्ध अयोध्या में रहने आए थे तब उन्होंने भी यहीं दातुन किया था। जिस दौरान एक बार उन्होंने अपनी दातुन इसी स्थान पर गाड़ दी। जो बाद में एक सात फुट ऊँचा वृक्ष में तब्दील हो गई थी। हालांकि वह चमत्कारी वृक्ष अब नहीं है। परंतु उसका स्मारक अब भी आपको यहाँ मिल जाएगा।

• दशरथ तीर्थ

सरयू तट पर स्थित दशरथ तीर्थ की दूरी रामघाट से लगभग 8 मील ही है। मान्यता है कि यहीं वो पवित्र स्थान है जहाँ महाराजा दशरथ का अंतिम संस्कार हुआ था। इसलिए इसका नाम दशरथ तीर्थ रखा गया।

• छपैया

छपैया एक प्राचीन गाँव है, जिसका उल्लेख आपको पौराणिक कथाओं में भी मिल जाएगा। ये गाँव सरयू नदी के पार बसा हुआ है। जिसकी दूरी अयोध्या से लगभग 6 मील है। इस स्थान को स्वामी सहजानंद जी की जन्मभूमि बताया जाता है।

• नंदिग्राम

नंदिग्राम फैजाबाद से लगभग 10 मील तथा अयोध्या से लगभग 16 मील दूर है। मान्यता है कि भगवान राम, माता सीता और लक्ष्मण जी के 14 वर्ष के वनवास के समय भगवान भरत ने यहीं पर 14 वर्ष तक कठोर तपस्या की थी। इसलिए आपको यहाँ भरतकुंड सरोवर और भरत जी का एक भव्य मंदिर भी मिल जाएगा।

• सोनखर

मान्यताओं अनुसार इसी स्थान पर महाराजा रघु का कोषागार था। माना ये भी जाता है कि भगवान कुबेर ने इसी स्थान पर सोने की वर्षा की थी, जिसके बाद इसका

नाम सोनखर पड़ा।

• सूर्य कुंड

रामघाट से सूर्य कुंड की दूरी लगभग पांच मील है। यहाँ तक पहुँचने के लिए आपको पक्षी सड़क मिलेगी। इस स्थान पर एक बड़ा सरोवर है, जिसके चारों ओर कई प्रसिद्ध घाट बने हुए हैं और इसके पश्चिम किनारे पर सूर्य नारायण का एक विशाल मंदिर निर्मित है।

• गुप्तारघाट

गुप्तारघाट अयोध्या से पश्चिम दिशा में सरयू किनारे से लगभग 9 मील की दूरी पर स्थित है। जहाँ सरयू स्नान का पौराणिक और धार्मिक बहुत विशेष महत्व बताया गया है। घाट के पास आपको गुप्तहरि के मंदिर के दर्शन करने को मिलते हैं।

• जनौरा

मान्यता है कि जब भी श्री राम के ससुर महाराजा जनक अयोध्या पधारते थे तो विश्राम के लिए अपना शिविर यहीं पर लगाते थे। यह स्थान अयोध्या से लगभग सात मील दूर है। जहाँ आपको गिरिजाकुंड नामक एक सरोवर तथा एक प्राचीन शिव मंदिर के दर्शन हो जाएंगे।

इसके अलावा यदि आप अयोध्या जाते हैं तो आपको कालाराम मंदिर, नागेश्वरनाथ मंदिर, हनुमान गढ़ी का हनुमान मंदिर, छोटी देव काली मंदिरों के भी दर्शन करने का अवसर मिलेगा, जिसकी प्राचीन महत्वता इन्हे विश्व में विख्यात बनाती है।

एस्ट्रोसेज वर्ष पत्रिका



आपका कुंडली आधारित

12 महीनों का भविष्यफल

कीमत

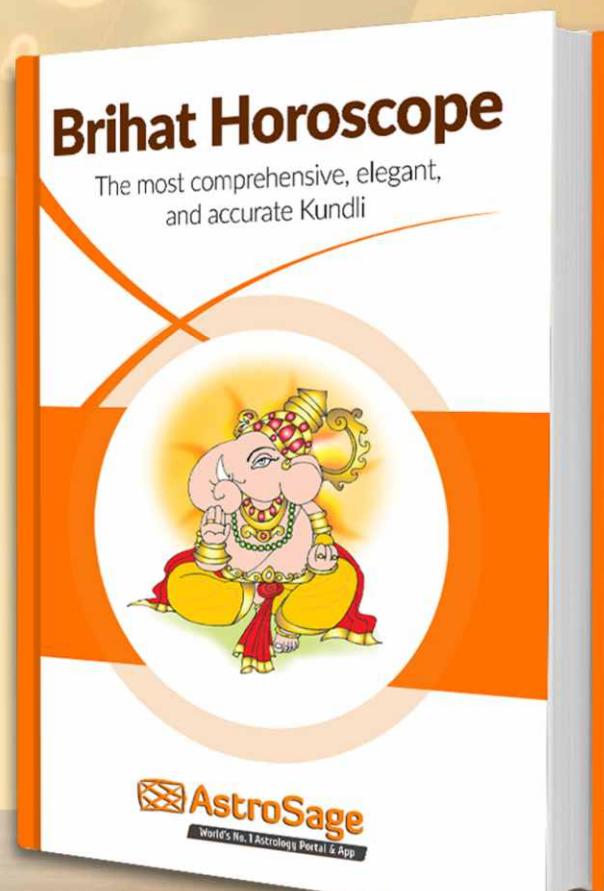
₹999 ₹499

अभी स्वरीदें

Know when your Destiny will shine!

Brihat Horoscope

Buy Now >



Price @ Just ₹ 999/-

कार्तिक पूर्णिमा व्रत

12
नवंबर, 2019
(मंगलवार)



कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष में आने वाली पूर्णिमा को कार्तिक पूर्णिमा कहते हैं। इस दिन महादेव जी ने त्रिपुरासुर नामक राक्षस का संहार किया था, इसलिए इसे 'त्रिपुरी पूर्णिमा' भी कहते हैं। यदि इस दिन कृतिका नक्षत्र हो तो यह 'महाकार्तिकी' होती है। वहीं भरणी नक्षत्र होने पर इस पूर्णिमा का विशेष फल प्राप्त होता है। रोहिणी नक्षत्र की वजह से इसका महत्व और बढ़ जाता है।

मान्यता है कि कार्तिक पूर्णिमा पर संध्या के समय भगवान विष्णु का मत्स्यावतार हुआ था। इस दिन गंगा स्नान के बाद दीप-दान का फल दस यज्ञों के समान होता है। ब्रह्मा, विष्णु, शिव, अंगिरा और आदित्य ने इसे महापुनीत पर्व कहा है।

कार्तिक पूर्णिमा व्रत और धार्मिक कर्म

कार्तिक पूर्णिमा पर गंगा स्नान, दीपदान, होम, यज्ञ और ईश्वर की उपासना का विशेष महत्व है। इस दिन किये जाने वाले धार्मिक कर्मकांड इस प्रकार हैं-

- पूर्णिमा के दिन प्रातःकाल जाग कर व्रत का संकल्प लें और किसी पवित्र नदी, सरोवर या कुण्ड में स्नान करें।
- इस दिन चंद्रोदय पर शिवा, संभूति, संतति, प्रीति, अनुसुर्ईया और क्षमा इन छः कृतिकाओं का पूजन अवश्य

करना चाहिए।

- कार्तिक पूर्णिमा की रात्रि में व्रत करके बैल का दान करने से शिव पद प्राप्त होता है।
- गाय, हाथी, घोड़ा, रथ और घी आदि का दान करने से संपत्ति बढ़ती है।
- इस भेड़ का दान करने से ग्रहयोग के कष्टों का नाश होता है।
- कार्तिक पूर्णिमा से प्रारंभ होकर प्रत्येक पूर्णिमा को रात्रि में व्रत और जागरण करने से सभी मनोरथ सिद्ध होते हैं।
- कार्तिक पूर्णिमा का व्रत रखने वाले व्रती को किसी जरूरतमंद को भोजन और हवन अवश्य कराना चाहिए।
- इस दिन यमुना जी पर कार्तिक स्नान का समापन करके राधा-कृष्ण का पूजन और दीपदान करना चाहिए।

कार्तिक पूर्णिमा का महत्व

कार्तिक मास में आने वाली पूर्णिमा वर्षभर की पवित्र पूर्णमासियों में से एक है। इस दिन किये जाने वाले दान-पुण्य के कार्य विशेष फलदायी होते हैं। यदि इस दिन कृतिका नक्षत्र पर चंद्रमा और विशाखा नक्षत्र पर सूर्य हो तो पद्मक योग का निर्माण होता है, जो कि बेहद दुर्लभ है। वहीं अगर इस दिन कृतिका नक्षत्र पर चंद्रमा और बृहस्पति हो तो, यह महापूर्णिमा कहलाती है। इस दिन संध्याकाल में त्रिपुरोत्सव करके दीपदान करने से पुनर्जन्म का कष्ट नहीं होता है।

कब बरसेगा पैसा छप्पर फाड़कर?

राज योग रिपोर्ट

अभी खरीदें



कीमत: ₹999-₹299



कार्तिक पूर्णिमा की पौराणिक कथा

पुरातन काल में एक समय त्रिपुर राक्षस ने एक लाख वर्ष तक प्रयागराज में घोर तप किया। उसकी तपस्या के प्रभाव

से समस्त जड़-चेतन, जीव और देवता भयभीत हो गये। देवताओं ने तप भंग करने के लिए अप्सराएँ भेर्जीं लेकिन उन्हें सफलता नहीं मिल सकी। त्रिपुर राक्षस के तप से प्रसन्न होकर ब्रह्मा जी स्वयं उसके सामने प्रकट हुए और वरदान मांगने को कहा।

त्रिपुर ने वरदान मांगा कि, 'मैं न देवताओं के हाथों मरूं, न मनुष्यों के हाथों से'। इस वरदान के बल पर त्रिपुर निडर होकर अत्याचार करने लगा। इतना ही नहीं उसने कैलाश पर्वत पर भी चढ़ाई कर दी। इसके बाद भगवान शंकर और त्रिपुर के बीच युद्ध हुआ। अंत में शिव जी ने ब्रह्मा जी और भगवान विष्णु की मदद से त्रिपुर का संहार किया।

कार्तिक पूर्णिमा व्रत मुहूर्त New Delhi, India के लिए

नवंबर 11, 2019 को 18:04:00 से पूर्णिमा आरम्भ

नवंबर 12, 2019 को 19:06:40 पर पूर्णिमा समाप्त

अपने शहर का मुहूर्त जानने के लिए [यहाँ क्लिक करें](#)



Lab Certified Gemstones

Genuine Gemstones at best price



कई मर्ज का इलाज करता है रुद्राक्ष



**रुद्राक्ष
की ये खूबियाँ
दूर कर सकती हैं
आपकी हर
परेशानी**

हिंदू धर्म में रुद्राक्ष को बहुत अहम स्थान प्राप्त है। इसका उपयोग मुख्य रूप से मनवांछित फलों की प्राप्ति के लिए किया जाता है। हिंदू मान्यताओं में रुद्राक्ष का संबंध भगवान् शिव से माना गया है। यही वजह है कि हिंदू धर्म में आस्था रखने वाले लोग रुद्राक्ष को पूज्य मानते हैं। भगवान् शिव को सृष्टि संहारक माना जाता है और इसीलिए रुद्राक्ष की आराधना करने वाले जातकों के समस्त पाप और कष्ट दूर हो जाते हैं। मूल रूप से रुद्राक्ष संस्कृत का शब्द है जो दो शब्दों 'रुद्र' और 'अक्ष' को मिलाकर बना है। इसमें रुद्र का अर्थ भगवान् शिव है, जबकि अक्ष का अर्थ भगवान् शिव के अश्रु (आंसू) हैं। अर्थात् रुद्राक्ष का संयुक्त अर्थ 'भगवान् शिव के आंसू' हैं। धारणा यह भी है कि जो व्यक्ति रुद्राक्ष धारण करता है बुरी शक्तियाँ उससे दूर हो जाती हैं। रुद्राक्ष के दर्शन और स्पर्श मात्र से ही कई पापों का नाश संभव माना गया है। रुद्राक्ष को पृथ्वी पर शिव के वरदान के रूप में देखा जाता है जोकि भोले शंकर जी के भक्तों को अति प्रिय है। शिव की पूजा करने वाले साधु

सन्यासियों के गले में आप रुद्राक्ष की माला अवश्य देखेंगे।

रुद्राक्ष उत्पत्ति की पौराणिक कथा

रुद्राक्ष उत्पत्ति से जुड़ी एक कथा शिव महापुराण में वर्णित है। शिव महापुराण की इस कथानुसार भगवान् शिव ने एक बार एक हजार वर्षों तक समाधि लगाई। इस समाधि से जब वो वापस बाहरी जगत के संपर्क में आए तो जग कल्याण के लिए उनके नेत्रों से अश्रु धारा बही और आँसू की यह बूंदें जब पृथ्वी पर गिरीं तो इनसे रुद्राक्ष वृक्षों की उत्पत्ति हुई और भक्तों के हित में यह वृक्ष पूरी धरती पर फैल गए। इन वृक्षों पर जो फल लगे उन्हें ही रुद्राक्ष कहा गया। रुद्राक्ष को पापनाशक, रोगनाशक और सिद्धिदायक माना गया है। शरीर के विभिन्न अंगों में अलग-अलग तरह के रुद्राक्ष धारण करने से लाभ प्राप्त किये जा सकते हैं।

अगर आप एस्ट्रोसेज की साइट पर जाना चाहते हैं तो यहाँ [क्लिक करें](#)

रुद्राक्ष को लेकर धार्मिक और वैज्ञानिक मान्यताएं

हिंदू मान्यताओं और हमारे पुराणों के अनुसार रुद्राक्ष की कृपा से व्यक्ति को जीवन में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति होती है। जबकि विज्ञान का मानना है कि रुद्राक्ष से इलेक्ट्रोमैग्नेटिक, पैरामैग्नेटिक जैसी तरंगे उत्सर्जित होती हैं जोकि मनुष्य जीवन के लिए किसी वरदान से काम नहीं हैं। अतः यह कहना गलत नहीं होगा कि रुद्राक्ष को धारण करने वाले व्यक्ति को धार्मिक, आध्यात्मिक और चिकित्सीय तीनों तरह के लाभ प्राप्त होते हैं।

विभिन्न प्रकार के रुद्राक्ष और उनका महत्व

रुद्राक्ष एक मुखी से चौदह मुखी तक होते हैं और हर रुद्राक्ष का अलग महत्व और अलग धारण विधि है। रुद्राक्ष धारण करने से पहले यह सुनिश्चित कर लें कि रुद्राक्ष असली है या नहीं, क्योंकि रुद्राक्ष कहीं से भी खंडित न हो, इस पर कीड़ा न लगा हो, तभी रुद्राक्ष से आपको लाभ प्राप्त होगा। मनवांछित फल को पाने के लिए रुद्राक्ष को धारण करना बहुत शुभ माना गया है। रुद्राक्ष को पहनने के बाद व्यक्ति को जीवन और मरण का वास्तविक ज्ञान प्राप्त होता है और उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है। आतंरिक शक्तियों को जागृत करने के लिए भी इसे धारण किया जाता है। इसके चिकित्सीय गुण तनाव, उच्च रक्तचाप और ब्लड प्रेशर जैसी समस्याओं से छुटकारा दिलाते हैं। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार रुद्राक्ष धारण करने वाले व्यक्ति को न केवल भगवान् शिव बल्कि तीनों देवों सहित आकाश मंडल में स्थित नवग्रहों की भी कृपा प्राप्त होती है। इसे धारण करने वाले व्यक्ति को सकारात्मक परिणाम प्राप्त होते हैं। आइए अब हम आपको बताते हैं विभिन्न रुद्राक्षों के प्रकार और उन्हें धारण करने की विधि।



एक मुखी रुद्राक्ष

हिंदू शास्त्रों के अनुसार, उस रुद्राक्ष को एक मुखी रुद्राक्ष कहा जाता है जिसमें एक आँख हो। यह रुद्राक्ष भगवान् शिव का प्रतीक स्वरूप माना जाता है। ज्योतिष में एक मुखी रुद्राक्ष



का स्वामी सूर्य ग्रह है इसलिए इसे आत्म चेतना को जाग्रत करने का कारक भी माना जाता है। इस रुद्राक्ष को धारण करने से लौकिक और पारलौकिक अनुभव को प्राप्त किया जा सकता है। इस रुद्राक्ष के प्रभाव से व्यक्ति के अंदर आत्मबल का भी निर्माण होता है। इसके साथ ही इसे धारण करने से आप के अंदर नेतृत्वकारी क्षमताओं का विकास होता है। सूर्य के समान आप में तेज की वृद्धि होती है और आप हर स्थिति में अच्छा प्रदर्शन कर पाने में सक्षम होते हैं।

एक मुखी रुद्राक्ष को धारण करने की विधि

- रुद्राक्ष को पहनने से पूर्व इस पर गंगाजल या कच्चे दूध का छिड़काव करें।
- इसके बाद धूप, अगरबत्ती जलाकर भगवान् शिव की आराधना करें।
- उन्हें सफेद पुष्प अर्पित करें।
- इसके बाद रुद्राक्ष मंत्र 'ॐ ह्लीं नमः' का 108 बार जाप करना चाहिए।
- आप सूर्य देव के बीज मंत्र 'ॐ ह्लां ह्लीं ह्लौं सः सूर्याय नमः' का 108 बार जाप करके भी इसे धारण कर सकते हैं।
- पूजा-अर्चना करने के बाद रविवार को प्रातः काल में या कृतिका, उत्तराफालुनी और उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में रुद्राक्ष को धारण करना शुभ होता है।

दो मुखी रुद्राक्ष

दांपत्य जीवन में सामंजस्य बिठाने के लिए दो मुखी रुद्राक्ष पहनना चाहिए। शास्त्रों के अनुसार यह रुद्राक्ष भगवान् शिव के अद्व-



रुद्राक्ष का संसार

नारीश्वर रूप का प्रतीक है। वैदिक ज्योतिष शास्त्र के अनुसार दो मुखी रुद्राक्ष का स्वामी ग्रह चंद्र है। जिन जातकों की कुंडली में चंद्र कमजोर है उन्हें दो मुखी रुद्राक्ष धारण करना चाहिए। विशेषकर गर्भवती महिलाओं द्वारा यदि इस रुद्राक्ष की आराधना की जाए तो उन्हें इससे लाभ मिलता है। यह रुद्राक्ष बायीं आँख से जुड़े रोगों के साथ-साथ फेफड़े, हृदय और दिमाग से संबंधित बीमारियों को मिटाने में भी लाभकारी साबित होता है।

दो मुखी रुद्राक्ष को धारण करने की विधि-

- दो मुखी रुद्राक्ष को सफेद या काले धागे में पिरोकर अथवा सोने या चाँदी की चेन में पिरोकर धारण करना चाहिए।
- धारण करने से पूर्व रुद्राक्ष को गंगाजल या दूध से शुद्ध करें।
- शिव-पार्वती जी की धूप अगरबत्ती जलाकर पूजा करें और उन्हें सफेद पुष्प अर्पित करें।
- इसके बाद चन्द्र के बीज मन्त्र 'ॐ श्रीं श्रीं सः चन्द्रमसे नमः' का 108 बार जाप करें।
- आप रुद्राक्ष मंत्र 'ॐ नमः' का 108 बार जाप करके भी इसे धारण कर सकते हैं।
- इसके उपरांत हस्त, रोहिणी, श्रवण नक्षत्र में या सोमवार के दिन दो मुखी रुद्राक्ष को धारण करें।

तीन मुखी रुद्राक्ष

तीन मुखी रुद्राक्ष को भगवान ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीनों देवों का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए पहनना चाहिए। वैदिक ज्योतिष के अनुसार मंगल ग्रह को तीन मुखी रुद्राक्ष का स्वामी माना गया

है। तीन मुखी रुद्राक्ष को धारण करने से कुंडली से मंगल दोष दूर हो जाता है। इस रुद्राक्ष को विद्या प्राप्ति के लिए भी धारण किया जाता है। इसे धारण करने से तन और मन शुद्ध होता है।



तीन मुखी रुद्राक्ष को धारण करने की विधि-

- तीन मुखी रुद्राक्ष को धारण करने से पहले इसे गंगाजल या कच्चे दूध से शुद्ध करें।
- इसके बाद हनुमान जी की प्रतिमा अथवा चित्र के सामने धूप-अगरबत्ती जलाकर उनकी पूजा-अर्चना करें।
- इसके बाद हनुमान जी को लाल पुष्प अर्पित करें और मंगल देव के बीज मंत्र 'ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः' का जाप करें।
- आप रुद्राक्ष मंत्र 'ॐ क्लीं नमः' का 108 बार जाप करके भी रुद्राक्ष को धारण कर सकते हैं।
- इस विधि को करने के बाद मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा नक्षत्र में अथवा मंगलवार को प्रातः काल में इस रुद्राक्ष को धारण करें।

चार मुखी रुद्राक्ष

चार मुखी रुद्राक्ष का संबंध त्रिदेवों में से एक भगवान ब्रह्मा जी से माना जाता है। इस चार मुखी रुद्राक्ष को धारण करने वाले व्यक्ति को भगवान ब्रह्मा की कृपा प्राप्त होती है और व्यक्ति की बौद्धिक क्षमता का विकास होता है। चार मुखी



रुद्राक्ष पर बुध ग्रह का आधिपत्य माना जाता है। चार मुखी रुद्राक्ष को धारण करने से व्यक्ति को खुद में सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिलते हैं। यह रुद्राक्ष किडनी और थाइराइड से जुड़ी समस्याओं को दूर करने के लिए भी पहना जाता है।

चार मुखी रुद्राक्ष को धारण करने की विधि-

- चार मुखी रुद्राक्ष को धारण करने से पूर्व इसे कच्चे दूध या गंगाजल से शुद्ध कर लें।
- इसके बाद भगवान् विष्णु की धूप-दीप जलाकर आराधना करें और उन्हें पीले पुष्प अर्पित करें।
- इसके बाद रुद्राक्ष मंत्र 'ॐ ह्रीं नमः' का 108 बार जाप करें।

- आप बुध ग्रह के बीज मंत्र 'ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः बुधाय नमः' का कम-से-कम 108 बार जाप करके भी रुद्राक्ष को धारण कर सकते हैं।
- इस क्रिया को करने के बाद बुधवार के दिन अथवा अश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती नक्षत्र में चार मुखी रुद्राक्ष को धारण करें।

पाँच मुखी रुद्राक्ष

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार देव गुरु बृहस्पति को पाँच मुखी रुद्राक्ष का अधिपति माना गया है। पाँच मुखी रुद्राक्ष को धारण करने से जातक को मानसिक शांति का अनुभव होता है और इससे स्वास्थ्य में भी सकारात्मक बदलाव आते हैं।



इस रुद्राक्ष को धारण करने से मनुष्य की आयु में भी वृद्धि होती है। माना जाता है कि जो भी जातक पाँच मुखी रुद्राक्ष धारण करता है उसे भगवान् शिव के पाँच रूपों का आशीर्वाद प्राप्त होता है। इस रुद्राक्ष को धारण करके व्यक्ति किसी भी तरह की दुर्घटना से बच जाता है।

पांच मुखी रुद्राक्ष को धारण करने की विधि-

- पाँच मुखी रुद्राक्ष को सोने या चाँदी में मढ़वाकर या बिना मढ़वाए भी धारण कर सकते हैं।
- इस रुद्राक्ष को धारण करने से पूर्व इसे गंगाजल या कच्चे दूध से शुद्ध करना चाहिए इसके बाद धूप-दीप जलाकर भगवान् विष्णु की पूजा अर्चना करनी चाहिए।
- तत्पश्चात् 'ॐ ह्रीं हूं नमः' मंत्र का 108 बार जाप करें।
- आप गुरु बृहस्पति के बीज मंत्र 'ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः' का 108 बार जाप करके भी रुद्राक्ष को धारण कर सकते हैं।
- इस विधान को करने के बाद गुरुवार के दिन पुनर्वसु, विशाखा, पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में पाँच मुखी रुद्राक्ष को धारण करें।

छः मुखी रुद्राक्ष

छह मुखी रुद्राक्ष को भगवान् शिव के पुत्र कार्तिकेय का रूप माना जाता है। जो लोग इस रुद्राक्ष को धारण करते हैं उन्हें ब्रह्महत्या के पाप से भी मुक्ति मिलती है। ज्योतिष की मान्यताओं के अनुसार शुक्र ग्रह इस रुद्राक्ष का स्वामी माना गया है। शुक्र प्रेम, सुंदरता, आकर्षण, कलात्मक प्रतिभा का कारक होता है। जो व्यक्ति छह मुखी रुद्राक्ष को धारण करता है उसे आँख, गर्दन और मूत्र से संबंधित रोगों से छुटकारा मिलता है। इसके साथ ही व्यक्ति की इच्छा शक्ति और ज्ञान में भी इजाफा होता है और जीवन में खुशियां आती हैं।



छः मुखी रुद्राक्ष को धारण करने की विधि-

- छह मुखी रुद्राक्ष को धारण करने से पूर्व इसे कच्चे दूध या गंगाजल के छिड़काव से शुद्ध कर लें।
- इसके बाद भगवान् कार्तिकेय की आराधना धूप-दीप जलाकर करें।
- तत्पश्चात् रुद्राक्ष मंत्र 'ॐ ह्रीं हूं नमः' का जाप 108 बार करें।
- चुंकि छह मुखी रुद्राक्ष का स्वामी ग्रह शुक्र है इसलिए आप शुक्र मंत्र 'ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः' का 108 बार जाप करके भी रुद्राक्ष धारण कर सकते हैं।
- इस विधान को करने के उपरांत शुक्रवार के दिन अथवा भरणी, पूर्वाफाल्युनी, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में छह मुखी रुद्राक्ष को धारण करें।

सात मुखी रुद्राक्ष

सात मुखी रुद्राक्ष को धारण करने से नकारात्मक शक्तियों से मुक्ति मिलती है। इस रुद्राक्ष के देवता हनुमान जी और सात माताएं हैं। शनि को इस रुद्राक्ष का स्वामी ग्रह माना जाता है।



इस रुद्राक्ष को धारण करने से शनि जैसे ग्रह की प्रतिकूलता भी दूर हो जाती है। इसके साथ ही नपुंसकता, वायु, स्नायु दुर्बलता, विकलांगता, हड्डी व मांस पेशियों का दर्द, पक्षाधात, क्षय व मिर्गी रोग, सामाजिक चिंता और मिर्गी जैसे रोगों में भी सात मुखी रुद्राक्ष को पहनने से फायदा मिलता है। केवल यही नहीं यदि आपकी आर्थिक स्थिति सही नहीं है तो इस रुद्राक्ष को पहनने से आर्थिक पक्ष भी मजबूत होता है। मूलांक आठ वालों को इस रुद्राक्ष को पहनने से अच्छे फल प्राप्त होते हैं।

सात मुखी रुद्राक्ष को धारण करने की विधि-

- सात मुखी रुद्राक्ष को गंगाजल से शुद्ध करें।
- इसके पश्चात भैरव जी को काले तिल, धूप-दीप अर्पित करें।
- इसके बाद 'ॐ हूं नमः' मंत्र का जाप करें।
- यह रुद्राक्ष शनि देव से संबंधित है इसलिए आप शनि देव के बीज मंत्र 'ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः' का 108 बार जाप भी कर सकते हैं।
- इसके उपरांत पुष्य, अनुराधा, उत्तराभाद्रपद नक्षत्र में या शनिवार के दिन सूर्यास्त के बाद सात मुखी रुद्राक्ष को काले या लाल धागे में पिरोकर धारण करें।

आठ मुखी रुद्राक्ष

आठ मुखी रुद्राक्ष को धारण करने से जीवन में आ रही परेशानियों से छुटकारा मिलता है। शिवपुराण के अनुसार अष्टमुखी रुद्राक्ष को भैरव महाराज का रूप माना गया है। वहीं ज्योतिष शास्त्र के अनुसार, राहु को आठ मुखी रुद्राक्ष का स्वामी ग्रह माना जाता है। इस रुद्राक्ष में गणेश, माँ गंगा और कार्तिकेय का अधिवास माना गया है। अगर आपको जीवन में प्रसिद्धि चाहिए तो आपको इस रुद्राक्ष को धारण करना चाहिए। इस रुद्राक्ष को पूजा स्थल पर भी रखा जा सकता है और गले में भी धारण किया जा सकता



है। इसे सिद्ध करके धारण करने से पितृदोष दूर होता है। यह चर्म, पैरों के कष्ट और हड्डी से संबंधित रोगों में भी कारगर साबित होता है। मानसिक शांति की प्राप्ति के लिए भी इस रुद्राक्ष को धारण किया जा सकता है।

आठ मुखी रुद्राक्ष को धारण करने की विधि-

- आठ मुखी रुद्राक्ष को धारण करने से पहले इसे कच्चे दूध और गंगाजल से शुद्ध करना चाहिए।
- इसके पश्चात भगवान् गणेश को धूप-दीप और अगरबत्ती अर्पित करनी चाहिए और उनकी पूजा अर्चना करनी चाहिए।
- इसके बाद राहु के बीज मंत्र 'ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः' का मंत्र जाप करना चाहिए।
- आप रुद्राक्ष मंत्र 'ॐ हूं नमः' का 108 बार जाप भी कर सकते हैं।
- इस विधान को पूरा करने के बाद स्वाति, शतभिषा, आर्द्ध नक्षत्र या शनिवार के दिन रुद्राक्ष को धारण किया जाना चाहिए।

नौ मुखी रुद्राक्ष

शास्त्रों के अनुसार नौ मुखी रुद्राक्ष का आधिपत्य माँ दुर्गा को प्राप्त है। इस रुद्राक्ष को माँ के नौ रूपों का प्रतीक माना जाता है। वहीं वैदिक ज्योतिष में केतु को नौ मुखी रुद्राक्ष का स्वामी ग्रह माना जाता है। जो भी व्यक्ति इस रुद्राक्ष को धारण करता है उसपर केतु ग्रह के बुरे प्रभावों का असर नहीं पड़ता है। इस रुद्राक्ष को पहनने से काल सर्प दोष का प्रभाव भी समाप्त हो जाता है। इस रुद्राक्ष को धारण करने से इंसान के साहस में इजाफा होता है। नेतृत्वकारी क्षमताओं को विकसित करने के लिए भी इस रुद्राक्ष को धारण किया जाता है। इससे मानसिक तनाव और शारीरिक पीड़ाओं से भी मुक्ति मिलती है।



नौ मुखी रुद्राक्ष को धारण करने की विधि-

- रुद्राक्ष को धारण करने से पहले इसे गंगाजल या कच्चे दूध से पवित्र किया जाना चाहिए।
- इसके पश्चात माँ दुर्गा को लाल चंदन, धूप-दीप और अगरबत्ती अर्पित करनी चाहिए और उनकी पूजा अर्चना करनी चाहिए।
- इसके साथ ही केतु मंत्र 'ॐ स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः' का 108 जाप किया जाना चाहिए।
- आप रुद्राक्ष मंत्र 'ऊँ ह्रीं हूँ नमः' मंत्र का 108 बार जाप करके भी रुद्राक्ष को धारण कर सकते हैं।
- इसके उपरांत अश्विनी, मधा, मूल नक्षत्र या बुधवार या शनिवार को इस रुद्राक्ष को धारण किया जाना चाहिए।

दस मुखी रुद्राक्ष

दस मुखी रुद्राक्ष का संबंध भगवान् विष्णु से माना जाता है। इस रुद्राक्ष को भय मुक्ति बुरी नज़र से बचने के लिए धारण किया जाता है। तंत्र-मंत्र की साधना करने वाले जातकों को



इस रुद्राक्ष को धारण करने से कई फायदे मिलते हैं। दस मुखी रुद्राक्ष को धारण करने से दमा, पेट और आँख से संबंधित परेशानियां नहीं होती हैं। इस रुद्राक्ष को धारण करने से जादू-टोने से भी बचा जा सकता है। दस मुखी रुद्राक्ष को धारण करने से हर ग्रह की प्रतिकूलता दूर हो जाती है।

दस मुखी रुद्राक्ष को धारण करने की विधि-

- दस मुखी रुद्राक्ष को धारण करने से पूर्व इसे गंगाजल या कच्चे दूध से शुद्ध कर लें।
- भगवान् विष्णु को धूप-दीप, अगरबत्ती और फूल अर्पित करें।
- इसके बाद रुद्राक्ष मंत्र 'ॐ ह्रीं हूँ नमः' मंत्र का 108 बार जाप करें।
- तत्पश्चात् रविवार या सोमवार को इस रुद्राक्ष को धारण करें।

ग्यारह मुखी रुद्राक्ष

शिवपुराण के अनुसार, ग्यारह मुखी रुद्राक्ष भगवान् शिव के रुद्र अवतार यानि रुद्रदेव का रूप है। इसके साथ ही इस रुद्राक्ष को इंद्र देव का प्रतीक भी माना जाता है। जीवन के किसी भी पक्ष को मजबूत करने के लिए इस रुद्राक्ष को धारण किया जा सकता है। जो व्यक्ति इसे धारण करता है वह अपने विरोधियों पर हमेशा हावी रहता है। शिखा पर इस रुद्राक्ष को धारण करना अत्यंत शुभ माना गया है। कई प्रकार के मानसिक रोगों में भी इस रुद्राक्ष को धारण करने से फायदा मिलता है। जिन स्त्रियों को संतान की प्राप्ति नहीं हो रही अगर वो विश्वासपूर्वक इस रुद्राक्ष को धारण करें तो उन्हें संतान प्राप्ति हो सकती है। इस रुद्राक्ष को धारण करने से बल, बुद्धि और साहस में वृद्धि होती है। व्यापारियों के लिए यह रुद्राक्ष बहुत लाभदायक सिद्ध होता है इसे धारण करने से आय के नए लोत खुलते हैं। रोगों से मुक्ति पाने के लिए भी ग्यारह मुखी रुद्राक्ष को धारण किया जाता है। जिन शादीशुदा जोड़ों के संतान नहीं है उनके लिए भी यह रुद्राक्ष शुभफलदायक सिद्ध होता है और इसे धारण करने से उन्हें संतान की प्राप्ति होती है।



ग्यारह मुखी रुद्राक्ष को धारण करने की विधि-

- ग्यारह मुखी रुद्राक्ष को धारण करने से पहले इस शुद्ध किया जाना चाहिए।
- गंगाजल या कच्चे दूध का छिड़काव करके आप इसे शुद्ध कर सकते हैं।
- इसके पश्चात हनुमान जी की पूजा अर्चना की जानी चाहिए।
- हनुमान जी को धूप-दीप और फूल अर्पित करके 'ॐ ह्रीं हूँ नमः' मंत्र का 108 बार जाप करना चाहिए।
- इसके उपरांत मंगलवार के दिन इसे धारण किया जाना चाहिए।

बारह मुखी रुद्राक्ष

बारह मुखी रुद्राक्ष को विष्णु स्वरूप माना जाता है और इसे धारण करने से मनुष्य को दो लोकों (पृथ्वी और स्वर्ग) का सुख मिलता है। आँखों से जुड़ी समस्याओं से बचने के लिए भी



इसे धारण किया जा सकता है। इस रुद्राक्ष को सूर्य ग्रह से भी संबंधित माना गया है। इसलिए जो व्यक्ति इस रुद्राक्ष को धारण करता है उसे सूर्य देव का आशीर्वाद प्राप्त होता है। साथ ही असाध्य रोगों से मुक्ति मिलती है। मस्तिष्क और हृदय से जुड़े रोग इस रुद्राक्ष को धारण करने से दूर हो जाते हैं। इसे धारण करने से बुद्धि का विकास होता है तथा सुख-समृद्धि की प्राप्ति होती है। जो लोग आध्यात्मिक प्रवृत्ति के हैं यह रुद्राक्ष उनके लिए भी लाभकारी होता है और मनुष्य के तेज में वृद्धि होती है।

धारण करने की विधि-

- बारह मुखी रुद्राक्ष को धारण करने से पहले इस शुद्ध करें।
- आप कच्चे दूध या गंगाजल से इसे शुद्ध कर सकते हैं।
- इसके पश्चात सूर्य देव को धूप-दीप और फूल अर्पित किये जाने चाहिए।
- इसके बाद सूर्य देव के बीज मंत्र 'ॐ ह्लां ह्लां ह्लां सः सूर्याय नमः' का 108 बार पाठ किया जाना चाहिए।
- इसके साथ ही आप 'ॐ क्रों श्रों रों नमः' मंत्र का 108 बार जाप भी कर सकते हैं।
- इस विधान को पूरा करने के बाद रविवार के दिन बारह मुखी रुद्राक्ष को धारण किया जाना चाहिए।

तेरह मुखी रुद्राक्ष

तेरह मुखी रुद्राक्ष का संबंध शुक्र देव से माना जाता है। इसके साथ ही यह इंद्र देव से भी संबंधित है। इस रुद्राक्ष को



मनवांछित फलों की प्राप्ति और व्यक्तित्व में सुंदरता लाने के लिए पहना जाता है। इस रुद्राक्ष को कामदेव से भी संबंधित माना जाता है इसलिए शादीशुदा लोगों के लिए इस रुद्राक्ष को धारण करना शुभ फलदायक होता है। इससे वैवाहिक जीवन में तकरार की स्थिति नहीं बनती। प्रेम जीवन में अच्छे फल प्राप्त करने के लिए भी इस रुद्राक्ष को धारण किया जा सकता है। संतान प्राप्ति के लिए भी यह रुद्राक्ष सहायक है। विश्वदेव के स्वरूप में देखे जाने वाले तेरह मुखी रुद्राक्ष को पहनने वाले लोगों का भाग्य चमकने लगता है।

धारण करने की विधि-

- धारण करने से पूर्व तेरह मुखी रुद्राक्ष को गंगाजल या कच्चे दूध से शुद्ध करना चाहिए।
- इसके बाद धूप-दीप, अगरबत्ती और फूल अर्पित करके माँ लक्ष्मी की पूजा करनी चाहिए।
- इसके बाद शुक्र देव के मंत्र 'ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः' का जाप किया जाना चाहिए।
- आप रुद्राक्ष मंत्र 'ॐ ह्लां नमः' का 108 बार पाठ भी कर सकते हैं।
- इस विधान को पूरा करने के बाद शुक्रवार के दिन तेरह मुखी रुद्राक्ष को धारण करना चाहिए।

जैसा कि आप जान चुके होंगे कि रुद्राक्ष अलग-अलग प्रकार के होते हैं और हर रुद्राक्ष की अपनी अलग विशेषता होती है। अतः रुद्राक्ष को धारण करने के लिए आपको ज्योतिषीय परामर्श अवश्य लेना चाहिए। क्योंकि ज्योतिषी आपकी कुंडली के अनुसार आपको बताएंगे कि आपको कौनसा रुद्राक्ष धारण करना चाहिए। इसके साथ ही इसे पूरे विधि-विधान के साथ पहना जाना चाहिए।



काल भैरव विगड़े काम बनाएं

20
नवंबर, 2019
(बुधवार)



कालाष्टमी जिसे काल भैरव जयंती भी कहा जाता है। ये हर माह कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को मनाई जाती है। इस विशेष दिन भगवान शिव के रूद्र अवतार कालभैरव की पूजा-अर्चना करने का विधान है। काल भैरव को समर्पित इस दिन भक्त साल भर आने वाली हर कालाष्टमी पर उपवास कर भगवान शिव, मां दुर्गा और भैरवनाथ को प्रसन्न करते हैं। ये व्रत हर महीने के कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को मनाया जाता है, इसलिए भी इसे कालाष्टमी कहते हैं।

भगवान शिव ने बुरी शक्तियों का नाश करने के लिए लिया था रूद्र अवतार

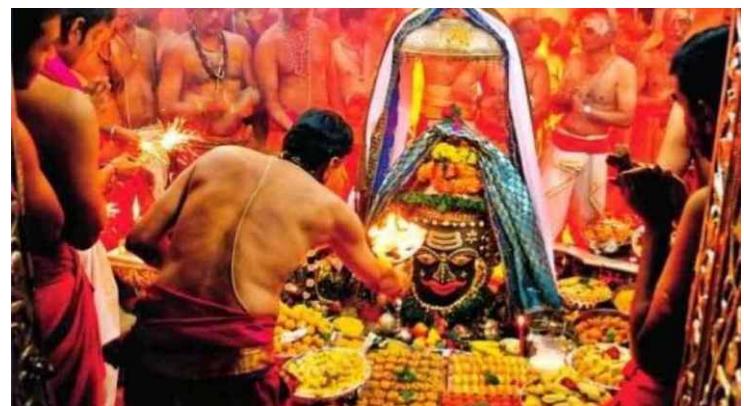
ऐसे में अब कार्तिक माह में कृष्ण पक्ष की कालाष्टमी 20 नवंबर, बुधवार यानी की कल देशभर में मनाई जा रही है। कृष्ण पक्ष की अष्टमी भैरवाष्टमी के नाम से भी विख्यात है। मान्यता है कि इस दिन भगवान शिव के रूद्र अवतार का पूजन करने से घर-परिवार में फैली हर प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा समाप्त होती है। क्योंकि सनातन धर्म की माने तो भगवान शिव ने बुरी शक्तियों का नाश करने के लिए ही रौद्र रूप धारण किया था। कई राज्यों में इस दिन मां दुर्गा की पूजा करने का विधान भी होता है।

कालाष्टमी व्रत का पौराणिक महत्व

जैसा हमने आपको पहले ही बताया कि कालभैरव को भगवान शिव का रूद्र अवतार माना जाता है, इसलिए शास्त्रों अनुसार जो भी व्यक्ति इस विशेष दिन उपवास कर कालभैरव की सच्ची भाव सहित आराधना करता है उसे भगवान शिव सदैव सभी नकारात्मक शक्तियों से मुक्ति दिलाते हैं।

इसके साथ ही काल भैरव की उपासना करने से व्यक्ति को शीघ्र ही शुभ फलों की प्राप्ति तो होती ही है। साथ ही व्यक्ति की कुंडली में मौजूद किसी भी प्रकार का राहु दोष भी दूर हो जाता है। तो आइये अब जानते हैं काल भैरव को प्रसन्न करके और उनसे मनचाहा फल पाने के लिए कालाष्टमी पर किन विशेष बातों का हर जातक को ज़रूर ध्यान रखना चाहिए।

कालभैरव जयंती व्रत की सही पूजा विधि:-



- चूँकि भैरव को तांत्रिकों के देवता माना गया है, इसलिए कालभैरव जयंती की पूजा केवल और केवल रात के समय ही की जानी चाहिए।
- इस दिन काले कुत्ते को भोजन कराना शुभ होता है। क्योंकि माना गया है कि ऐसा करने से भैरवनाथ प्रसन्न होते हैं।

काल भैरव जयंती

- इस दिन भैरवनाथ की पूजा के साथ-साथ माता वैष्णो देवी की भी पूजा करने का विधान है।
- इस दिन विशेष तौर पर भैरव जयंती से एक दिन पहले रात्रि के समय पूजा करने का अधिक महत्व होता है। इसलिए रात के समय काल भैरव के साथ-साथ मां दुर्गा की भी रात्रि में पूजा-आराधना करें।
- रात भर पूजा करने से इसके बाद अगली सुबह सूर्योदय से पहले उठकर स्नान आदि कर साफ वस्त्र पहने और उसके बाद ही भैरव देव की पूजा करें।
- मान्यता अनुसार कालभैरव जयंती पर भैरव देव की पूजा के लिए श्मशान घाट से लायी गयी राख ही चढ़ाई जाती है।
- इसके पश्चात पूजा कर काल भैरव कथा सुनने से लाभ मिलता है।
- इस दौरान काल भैरव के मंत्र “ॐ काल भैरवाय नमः” का जाप करना चाहिए।
- इसके साथ ही इस दिन मां बंगलामुखी का अनुष्ठान भी इस दौरान करना बेहद शुभ माना गया है। इससे व्यक्ति को शुभाशुभ लाभ की प्राप्ति होती है।
- इस दिन श्रद्धा अनुसार गरीबों को अन्न और वस्त्र का दान करने से पुण्य की प्राप्ति होती है।
- अगर मुमकिन हो तो कालाष्टमी के दिन मंदिर में जाकर कालभैरव के समक्ष तेल का एक दीपक ज़रूर जलाएं।

कालभैरव जयंती के दिन भूल से भी न करें ये काम:-

काल भैरव जयंती के दिन उपवास करने का विधान है। ऐसे में इस दिन कुछ विशेष नियमों का पालन करने की भी सलाह दी जाती है।

- काल भैरव जयंती के दिन झूठ बोलने से बचें और केवल और केवल सच ही बोलें।
- उपवास करने वाले लोगों को इस दिन अन्न ग्रहण नहीं करना चाहिए।
- इस दिन नमक का त्याग करना चाहिए। हालांकि अगर मुमकिन न हो तो आप सेंधा नमक का प्रयोग कर सकते हैं।



- अपने आस-पास बिलकुल भी गन्दगी न फैलाएं। इस दिन विशेष रूप से घर की साफ-सफाई करें।
- किसी भी कुत्ते को न मारे और संभव हो तो कुत्ते को इस दिन भोजन कराए। इससे भैरवनाथ खुश होते हैं।
- अपने माता-पिता और गुरुतुल्य लोगों का आशीर्वाद ज़रूर लें।
- भैरव जयंती के दिन बिना भगवान शिव और माता पार्वती के पूजा नहीं करना चाहिए।
- इससे एक दिन पूर्व की रात में सोना नहीं चाहिए। इस दौरान सपरिवार काल भैरव और मां दुर्गा की आराधना करते हुए जागरण करें।
- यहाँ पढ़ें: शिव महिमा स्तोत्र की शिव महिमा।

जानें कब होगा आपका भाग्योदय!

महा कुंडली

कीमत: ₹1105 @ मात्र ₹650

100+ पृष्ठ

अभी खरीदें

50% off

एस्ट्रोसेज वर्ष पत्रिका

आपका कुंडली आधारित 12 महीनों का भविष्यफल ₹999 ₹499

अभी खरीदें

सिद्ध कुंजिका स्तोत्र से पाएँ दुर्गा जी की कृपा

सिद्ध कुंजिका स्तोत्र एक ऐसा दुर्लभ उपाय है जिसके पाठ के द्वारा कोई भी व्यक्ति पराम्बा देवी भगवती अर्थात् दुर्गा जी की कृपा सहज रूप से प्राप्त कर सकता है और उसके जीवन में आने वाली सभी प्रकार की समस्याओं से उसे मुक्ति मिल सकती है। यह स्तोत्र और इसमें दिए गए मंत्र अत्यंत प्रभावशाली और शक्तिशाली माने गए हैं क्योंकि इसमें बीजों का समावेश है। बीज किसी भी मंत्र की शक्ति होते हैं और सभी प्रकार की इच्छाओं को पूर्ण करने वाले होते हैं। यदि आपके पास संपूर्ण दुर्गा सप्तशती चंडी पाठ करने का समय ना हो तो केवल सिद्ध कुंजिका स्तोत्र का पाठ करके भी आप पूरी दुर्गा सप्तशती के पाठ का फल प्राप्त कर सकते हैं।



सिद्ध कुंजिका स्तोत्र

॥सिद्धकुञ्जिकास्तोत्रम्॥

शिव उवाच

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि, कुञ्जिकास्तोत्रमुत्तमम्।
येन मन्त्रप्रभावेण चण्डीजापः शुभो भवेत्॥१॥

न कवचं नार्गलास्तोत्रं कीलकं न रहस्यकम्।
न सूक्तं नापि ध्यानं च न न्यासो न च वार्चनम्॥२॥

कुञ्जिकापाठमात्रेण दुर्गापाठफलं लभेत्।
अति गुद्यतरं देवि देवानामपि दुर्लभम्॥३॥

गोपनीयं प्रयत्नेन स्वयोनिरिव पार्वति।

मारणं मोहनं वशं स्तम्भनोच्याटनादिकम्।
पाठमात्रेण ससिद्ध्येत् कुञ्जिकास्तोत्रमुत्तमम्॥४॥

॥अथ मन्त्रः॥

ॐ ऐं ह्रीं कलीं चामुण्डायै विच्चे॥ ॐ ग्लौं हुं कलीं जूं सः
ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐं ह्रीं कलीं
चामुण्डायै विच्चे ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा॥

॥इति मन्त्रः॥

नमस्ते रुद्ररूपिण्यै नमस्ते मधुमर्दिनि।
नमः कैटभहारिण्यै नमस्ते महिषार्दिनि॥१॥

नमस्ते शुभ्रहन्त्र्यै च निशुभ्रासुरघातिनि॥२॥

जाग्रतं हि महादेवि जपं सिद्धं कुरुष्व मे।
ऐंकारी सृष्टिरूपायै ह्रींकारी प्रतिपालिका॥३॥

कलींकारी कामरूपिण्यै बीजरूपे नमोऽस्तु ते।

सिद्ध कुंजिका स्तोत्र

चामुण्डा चण्डघाती च यैकारी वरदायिनी॥४॥

विच्ये चाभयदा नित्यं नमस्ते मन्त्ररूपिणि॥५॥

थां थीं थूं थूर्जटे: पत्नी वां वीं वूं वागधीश्वरी।
क्रां क्रीं कूं कालिका देवि शां शीं शूं मे शुभं कुरु॥६॥

हुं हुं हुंकाररूपिण्यै जं जं जं जम्भनादिनी।
आं आं आं भूं भैरवी भद्रे भवान्यै ते नमो नमः॥७॥

अं कं चं टं तं पं यं शं वीं दुं ऐं वीं हं क्षं

धिजाग्रं धिजाग्रं त्रोटय त्रोटय दीप्तं कुरु कुरु स्वाहा॥

पां पीं पूं पार्वती पूर्णा खां खीं खूं खेचरी तथा॥८॥

सां सीं सूं सप्तशती देव्या मन्त्रसिद्धिं कुरुष्व मे॥

इदं तु कुञ्जिकास्तोत्रं मन्त्रजागर्तिहेतवे।
अभक्ते नैव दातव्यं गोपितं रक्ष पार्वति॥

यस्तु कुञ्जिकाया देवि हीनां सप्तशतीं पठेत्।
न तस्य जायते सिद्धिररण्ये रोदनं यथा॥

इति श्रीरुद्रयामले गौरीतन्त्रे शिवपार्वतीसंवादे
कुञ्जिकास्तोत्रं सम्पूर्णम्।

॥ॐ तत्सत्॥

सिद्ध कुंजिका स्तोत्र की उत्पत्ति

कुंजिका स्तोत्र (kunjika stotram) को हम देवी भगवती के परम शक्तिशाली स्वरूप दुर्गा को समर्पित दुर्गा सप्तशती में दिया गया है। यदि इस रोटर की उत्पत्ति की बात की जाए तो यह रुद्रयामल के अंतर्गत गौरी तंत्र में भगवान शिव और माता पार्वती के संवाद के द्वारा उत्पन्न हुआ है क्योंकि

भगवान शिव ने माता पार्वती को इस अत्यंत गुप्त और परम कल्याणकारी कुंजिका स्त्रोत के बारे में ज्ञान प्रदान किया।

सिद्ध कुंजिका स्तोत्र क्या है

कुंजिका अर्थात् कुंजी का अर्थ होता है चाबी (key)। एक छोटी सी चाबी किसी भी बड़े से बड़े ताले को खोलने में सक्षम होती है। ठीक उसी प्रकार कुंजिका स्तोत्र (kunjika stotram) श्री दुर्गा सप्तशती से प्राप्त होने वाली शक्ति को जगाने यानि कि जागृत करने का कार्य करता है। इस शक्ति को देवों के देव महादेव भगवान शिव बारात महेश्वर के द्वारा गुप्त (लॉक) कर दिया गया है अर्थात् कील दिया गया है, जिससे कि कोई इसका दुरुपयोग ना कर पाए। यदि दूसरे शब्दों में समझें तो सिद्ध का अर्थ पूर्णता को निरूपित करता है और कुंजिका का अर्थ होता है कुछ भी जो अतिवृद्धि या विकास के कारण छिपा हुआ है। अतिवृद्धि है उसका परिवर्तन तथा स्तोत्र कहते हैं गीत को, इस प्रकार सिद्ध कुंजिका स्तोत्र का अर्थ हुआ पूर्णता का गीत। अर्थात् सिद्ध कुंजिका स्त्रोत का तात्पर्य हुआ पूर्णता का ऐसा गीत जो वृद्धि के कारण अब छिपा हुआ नहीं है। इस गीत के माध्यम से आप जीवन की पूर्णता के सभी रहस्यों को जान सकते हैं। वास्तव में हमारी आध्यात्मिक वृद्धि और माता चंडी के स्वरूप की समझ ही बीज मंत्रों के छिपे हुए औरतों को प्रकट करती है और जागृत करती है।

मंत्रों का अर्थ और पाठ की पूरी विधि जानने के लिए

[यहाँ क्लिक करें!](#)



नीलांचल पर बसा अद्भुत मंदिर

असम राज्य के नीलांचल पहाड़ी पर स्थित कामाख्या मंदिर को हिंदुओं का सबसे प्राचीन मंदिर माना जाता है। सभी 51 शक्ति पीठ में से ये सबसे पुराना मंदिर है, जिसमें आपको कामाख्या देवी के अलावा कुछ अन्य देवियों के विभिन्न रूपों की भी पूजा की जाती है। इन देवियों में कमला, भैरवी, तारा, मतंगी, बगला मुखी, भुवनेश्वरी, धूमावती, छिन्नमस्ता और त्रिपुरा सुंदरी जैसी देवियों के दर्शन होते हैं। इस मंदिर का पौराणिक और वैज्ञानिक दोनों ही महत्व हैं, जो इस मंदिर को कई रहस्यों से जोड़ता है। आज हम इन्हीं कुछ रहस्यों के बारे में जानने की कोशिश करेंगे।

कामाख्या मंदिर में होती है माता सती के योनि भाग की पूजा

कामाख्या मंदिर का महत्व केवल भारत में ही नहीं बल्कि विदेशों में ही बहुत विशेष हैं। अगर भारत की बात करें तो इसमें शायद ही कोई मंदिर कामाख्या मंदिर जैसा रहस्यमयी और मायावी होगा। असम के गुवहाटी से लगभग 8 किमी दूर कामागिरी या



नीलांचल पर्वत पर स्थित इस मंदिर को आलौकिक शक्तियों के साथ-साथ तंत्र सिद्धि के लिए भी प्रमुख स्थल माना जाता है। इस मंदिर के विषय में माना जाता है कि यहाँ माता सती का योनि भाग गिरा था। जिस कारण आज भी यह मंदिर सती देवी की योनि का प्रतिनिधित्व करता है।

कामाख्या मंदिर की पौराणिक कथा



पौराणिक मान्यताओं अनुसार माता सती ने पौराणिक काल में स्वःत्याग कर दिया था, जिससे क्रोधित होकर भगवान शिव ने पृथ्वी को नष्ट करने की चेतावनी देते हुए विनाश का नृत्य अर्थात् तांडव किया था। जिसके बाद भगवान शिव को शांत करने के लिए भगवान विष्णु ने माता सती के शरीर को अपने चक्र से 51 टुकड़ों में विभाजित कर दिया था। उनके शरीर के टुकड़े धरती पर अलग-अलग जगहों पर जाकर गिरे। ऐसे में कामागिरि ही वह जगह बताई जाती है जहाँ देवी का योनि भाग गिरा था। हालांकि कई अन्य पौराणिक कथा में ये दावा किया जाता है कि यहाँ देवी सती भगवान शिव के साथ आया करती थी।

वहीं एक अन्य कथा के अनुसार, माना जाता है कि पौराणिक काल में एक नरक नाम का दानव था, जो मां कामाख्या के आकर्षण और सुंदरता से आकर्षित हो गया। उस दानव को मां से प्यार हो गया जिसके चलते उसने मां को शादी का प्रस्ताव भेजा। प्रस्ताव मिलने के बाद देवी मां ने उसके सामने एक शर्त रखी कि यदि वो दानव मंदिर की सीढ़ी का निर्माण नीचे से लेकर नीलांचल की पहाड़ी तक करता हैं, तो मां कामाख्या उससे विवाह कर लेंगी। दानव ने मां की इस शर्त को मानते हुए अहंकार में तुरंत ही मंदिर के लिए सीढ़ियां निर्माण का कार्य शुरू कर दिया। इस दौरान सीढ़ियों के निर्माण का कार्य पूरा ही होने वाला था कि मां ने वहाँ एक मुर्गा लाकर रख दिया, जिसे ये निर्देश दिया

कामाख्या मंदिर का रहस्य

गया कि सुबह होने पर वो मुर्गा आवाज़ करें। जैसे ही मुर्गे ने आवाज़ दी तो दानव को प्रतीत हुआ कि सुबह हो गई हैं, वह अपना काम बीच में ही आधा छोड़कर चला गया। बाद में खुद को छलित महसूस होने पर नरक को बहुत गुस्सा आया और उसने गुस्से में तुरंत मुर्गे के पीछे भाग कर उसे मार डाला। ऐसे में माना जाता है कि जिस जगह पर मुर्गे को मारा गया उस जगह को कुकुराकटा के नाम से जाना जाने है और मंदिर में बनी अधूरी सीढ़ी नरक द्वारा ही बनाई गई है। जिसे आज मेखेलउजा पथ के नाम से जाना जाता है।

तंत्र विद्या में कामाख्या मंदिर का महत्व

इस मंदिर का महत्व तंत्र विद्या के लिए भी विशेष माना गया है। इसी कारण कामाख्या देवी को तांत्रिकों की देवी का दर्जा दिया गया है और यहाँ तांत्रिक विद्या से जुड़े लोग कामाख्या देवी की पूजा भगवान शिव के नववधू के रूप में करते हैं। जो मनुष्य की मुक्ति को स्वीकार कर उनकी सभी इच्छाएं पूर्ण करती है। तंत्र विद्या के लिए काली और त्रिपुर सुंदरी देवी के बाद कामाख्या माता का सबसे महत्वपूर्ण स्थान बताया गया है।



कामाख्या मंदिर से जुड़ा रहस्य

कामाख्या मंदिर की अगर बात करें तो इसके गर्भगृह में कोई प्रतिमा आपको नहीं मिलेगी। आपको इसकी जगह एक समतल चट्टान के बीच बना विभाजन दिखाई देगा जो देवी की योनि को दर्शाता है। ये स्थान एक प्रकृतिक झरने के कारण हमेशा गीला रहता है। इस जगह से निकल रहे रहस्मयी जल को काफी प्रभावकारी और शक्तिशाली माना जाता है। मान्यता है कि जो भी व्यक्ति इस जल का नियमित सेवन करता है तो उसकी सभी बीमारियाँ दूर हो



जाती हैं। जैसा सभी जानते हैं कि महिला योनि को एक मनुष्य जीवन का सबसे प्रथम प्रवेश द्वारा माना जाता है और यही कारण है कि कामाख्या को समस्त निर्माण का केंद्र देशभर में माना जाता रहा है।

विदेशों में कामाख्या देवी को “ब्लीडिंग देवी” का मिला हुआ है दर्जा

बता दें कि देश-विदेश में देवी कामाख्या को ब्लीडिंग देवी के नाम से भी जाना जाता है। हिन्दू धर्म के अनुसार माना गया है कि हर वर्ष आषाढ़ के महीने में तीन दिनों के लिए मंदिर को विशेष तौर पर बंद कर दिया जाता है, क्योंकि माना जाता है कि इन दिनों देवी माहवारी से ग्रस्त होती हैं। जिसके बाद चौथे दिन मंदिर खुलता है और मंदिर के बाहर हर साल भव्य अंबुबच्ची मेले का आयोजन किया जाता है। इस मेले में लाखों श्रद्धालु और तीर्थयात्री दूर-दूर से इसके विशाल महोत्सव में हिस्सा लेने के लिए आते हैं। इन दिनों मंदिर के पास बहने वाली ब्रह्मपुत्र नदी रहस्य तरीके से लाल रंग में बदल जाती है। हालांकि इस बात के पीछे कोई वैज्ञानिक कारण नहीं है कि इस नदी के पानी का रंग इन दिनों ही लाल क्यों हो जाता है।

चलिए जानते हैं कामाख्या मंदिर से जुड़ी कुछ अन्य रोचक बातें

- आपको इस मंदिर में गर्भ गृह में देवी की कोई तस्वीर या मूर्ति नहीं मिलेगी।
- तांत्रिक सिद्धि के लिए इस मंदिर का विशेष महत्व है।
- कामाख्या मंदिर देवी के 51 शक्ति पीठ में शामिल है।
- मंदिर के गर्भगृह में सती माता की योनि के आकार के पत्थर का किया जाता है पूजन।
- मां सती के योनि रूप का ये देश का अकेला अनूठा मंदिर है।
- दुनियाभर के तांत्रिकों के लिए है इस मंदिर का है विशेष स्थान। इसलिए मंदिर में बलि चढ़ाने की भी प्रथा है, जिसके लिए

- भक्त मछली, बकरी, कबूतर और भैंसों के साथ ही लौकी, कट्टू जैसे फल वाली सब्जियों की बलि भी देते हैं।
- मंदिर में देवी की महामुद्रा यहाँ कहलाती है योनि रूप।
- ये मन्दिर देश-विदेश का केंद्र बिंदु माना गया है।
- आषाढ़ के महीने में तीन दिनों के लिए बंद किया जाता है मंदिर।



EUREKA



Innovation in
Career Counselling:

CogniAstro™
Right Counselling, Bright Career

[Know More](#)

सभी परेशानियों का रामबाण इलाज

राम रक्षा स्तोत्र में है सभी समस्याओं का अचूक इलाज । जहाँ भगवान श्री राम का नाम आ जाए ऐसा होना भी संभव है । लंका चढ़ाई के लिए बनाए गए सेतु पुल में पत्थर तैरने लगे थे, उन पत्थरों में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का ही नाम था । संस्कृत साहित्य में किसी भी देवी-देवता की स्तुति के लिए लिखे गये काव्य को स्तोत्र कहा जाता है । ऐसी मान्यता है कि राम रक्षा स्तोत्रम का जाप विधि अनुसार करने से मनुष्य की सारी परेशानियाँ, विपदाएं दूर हो जाती हैं ।

श्री राम रक्षा स्तोत्र (Ram Raksha Stotra) को विधि अनुसार, पढ़ना चाहिए । हमारे धार्मिक शास्त्रों में प्रत्येक कर्मकांड को संपन्न करने के लिए विधि-नियम बताए गए हैं । कई बार ऐसा देखा गया है कि हम नित्य पूजा-पाठ करते हैं, अपने इष्ट देवी-देवताओं का स्मरण करते हैं किंतु उसका फल हमें प्राप्त नहीं होता है । ऐसा इसलिए होता है कि हम नियमों की अनदेखी कर पूजा पाठ या फिर ईश्वर की स्तुति करने लगते हैं । राम रक्षा स्तोत्र को भी विधि अनुसार ही जपना चाहिए । तभी साधक को इसका वास्तविक फल प्राप्त होता है ।

राम रक्षा स्तोत्र की रचना

राम रक्षा स्तोत्र की रचना बुध कौशिक (वाल्मीकि) ऋषि ने की थी । परंतु पौराणिक कथा के अनुसार, ऐसा कहा जाता कि महादेव शंकर स्वयं बुध कौशिक के स्वप्न में आए थे और उन्होंने ही ऋषि को श्री राम रक्षा स्तोत्र सुनाया था । जब सबेरा हुआ तो बुध कौशिक ने इस स्तोत्र को लिखा लिया । यह स्तोत्र देववाणी संस्कृत में है । आवश्यक नहीं है कि यह स्तोत्र केवल संकट के समय पढ़ा जाए । शुभ फल और भगवान श्री राम का आशीर्वाद पाने के लिए इसे सामान्य परिस्थिति में भी जपा जा सकता है । इसके उच्चारण से निकली शब्द ध्वनि वातावरण में सकारात्मक ऊर्जा का



संचारित करती हैं ।

श्री राम रक्षा स्तोत्र की जप विधि

राम रक्षा स्तोत्र के माध्यम से जातकों को विविध क्षेत्रों में सफलता मिलती है । हालाँकि कार्य के अनुरूप ही इसकी विधि में भी परिवर्तन देखने को मिलता है । इस स्तोत्र का 11 बार अवश्य ही जपना चाहिए । ऐसा कहा जाता है कि यदि श्री राम रक्षा स्तोत्र का जाप 11 बार कर लिया जाए तो इसका प्रभाव दिन भर रहता है । यदि आप इसका जाप लगातार 45 दिनों तक करते हैं तो इसका प्रभाव दोगुना हो जाता है । नवरात्र के समय श्री राम रक्षा स्तोत्र का जाप अवश्य ही करना चाहिए । स्तोत्र को जपने से पूर्व शरीर और मन को शुद्ध अवश्य करें और सच्चे हृदय से भगवान राम का स्मरण करें ।

अगर आप एस्ट्रोसेज की साइट पर जाना चाहते हैं तो यहाँ [क्लिक करें](#)

राम रक्षा स्तोत्र

श्रीगणेशायनमः ।

अस्यश्रीरामरक्षास्तोत्रमन्त्रस्य ।

बुधकौशिकऋषिः ।

श्रीसीतारामचन्द्रोदेवता ।

अनुष्टुप्प्रचन्दः । सीताशक्तिः ।

श्रीमत्हनुमान्कीलकम् ।

श्रीरामचन्द्रप्रीत्यर्थं जपेविनियोगः ॥

॥ अथ ध्यानम् ॥

ध्यायेदाजानुबाहुन्,

धृतशरथनुषम्,

बद्धपद्मासनस्थम्

पीतं वासो वसानन्, नवकमल

दलस्पर्धिनेत्रम् प्रसन्नम् ।

वामाङ्कारूपसीता, मुखकमलमिलल्,

लोचनन् नीरदाभम्

नानाङ्लङ्कारदीप्तन्, दधतमुरुजटा,

मण्डलम् रामचन्द्रम् ॥

॥ इति ध्यानम् ॥

चरितम् रघुनाथस्य,

शतकोटिप्रविस्तरम् ।

एकैकमक्षरम् पुंसाम्,

महापातकनाशनम् ॥१॥

ध्यात्वा नीलोत्पलश्यामम्,

रामम् राजीवलोचनम् ।

जानकीलक्ष्मणोपेतज्,

जटामुकुटमण्डितम् ॥२॥

सासितूणधनुर्बाण,

पाणिन् नक्तञ्चराज्ञकम् ।

स्वलील या जगत्त्रातुम्,

आविर्भूतर्मजं विभुम् ॥३॥

रामरक्षाम् पठेत्प्राज्ञः,

पापद्वीं सर्वकामदाम् ।

शिरो मे राघवः पातु,

भालन् दशरथात्मजः ॥४॥

कौसल्येयो दशौ पातु,

विश्वामित्रप्रियः श्रुती ।

घ्राणम् पातु मखत्राता,

मुखं सौमित्रिवत्सलः ॥५॥

जिह्वां विद्यानिधिः पातु,

कण्ठम् भरतवन्दितः ।

स्कन्धौ दिव्यायुधं पातु,

भुजौ भग्नेशकार्मुकः ॥६॥

करौ सीतापतिः पातु,

हृदयज् जामदग्न्यजितः ।

मध्यम् पातु खरध्वंसी,

नाभिज् जाम्बवदाश्रयः ॥७॥

सुग्रीवेशः कटी पातु,

सक्षिणी हनुमत्प्रभुः ।

ऊरु रघूतमः पातु,

रक्षःकुलविनाशकृत् ॥८॥

जानुनी सेतुकृत् पातु,

जङ्घे दशमुखान्तकः ।

पादौ बिभीषणश्रीदः,

पातु रामोऽखिलं वपुः ॥९॥

एताम् रामबलोपेताम्,

रक्षा यः सुकृती पठेत् ।

स चिरायुः सुखी पुत्री,

विजयी विनयी भवेत् ॥१०॥

पातालभूतलव्योम्,

चारिणश्छद्धचारिणः ।

न द्रष्टुमपि शक्तास्ते,

रक्षितम् रामनामभिः ॥११॥

रामेति रामभद्रेति,

रामचन्द्रेति वा स्मरन् ।

नरो न लिप्यते पापैर्,

भुक्तिम् मुक्तिज् च विन्दति ॥१२॥

जगज्जैत्रेकमन्त्रेण,

रामनाम्नाऽभिरक्षितम् ।

यः कण्ठे धारयेत्तस्य,

करस्थाः सर्वसिद्धयः ॥१३॥

वड्कापञ्जरनामेदं,

यो रामकवचं स्मरेत् ।

अव्याहताज्ञः सर्वत्र,

लभते जयमङ्गलम् ॥१४॥

आदिष्टवान् यथा स्वप्ने,
रामरक्षामिमां हरः ।
तथा लिखितवान् प्रातः,
प्रबुद्धो बुधकौशिकः ॥१५॥

आरामः कल्पवृक्षाणां,
विरामः सकलापदाम् ।
अभिरामस्त्रिलोकगानाम्,
रामः श्रीमान् स नः प्रभुः ॥१६॥

तरुणौ रूपसम्पन्नौ,
सुकुमारौ महाबलौ ।
पुण्डरीकविशालाक्षौ,
चीरकृष्णाजिनाम्बरौ ॥१७॥

फलमूलाशिनौ दान्तौ,
तापसौ ब्रह्मचारिणौ ।
पुत्रौ दशरथस्यैतौ,
भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ ॥१८॥

शरण्यौ सर्वसत्त्वानां,
श्रेष्ठौ सर्वधनुष्मताम् ।
रक्षःकुलनिहन्तारौ,
त्रायेतान् नौ रघूतमौ ॥१९॥

आत्तसज्जधनुषा,
विषुस्पृशा-
वक्षयाशुगनिषङ्गसङ्गनौ ।
रक्षणाय मम रामलक्ष्मणावग्रतः,
पथि सदैव गच्छताम् ॥२०॥

सञ्चद्धः कवची खड्गी,
चापबाणधरो युवा ।
गच्छन्मनोरथोऽस्माकम्,
रामः पातु सलक्ष्मणः ॥२१॥

रामो दाशरथिः शूरो,
लक्ष्मणानुचरो बली ।
काकुत्स्थः पुरुषः पूर्णः,
कौसल्येयो रघूतमः ॥२२॥

वेदान्तवेद्यो यज्ञेशः,
पुराणपुरुषोत्तमः ।
जानकीवल्लभः श्रीमान्,
अप्रमेयपराक्रमः ॥२३॥

इत्येतानि जपन्नित्यम्,
मद्भृतः श्रद्धयाऽन्वितः ।
अश्वमेधाधिकम् पुण्यं,
सम्प्राप्नोति न संशयः ॥२४॥

रामन् दूर्वादलश्यामम्,
पद्माक्षम् पीतवाससम् ।
स्तुवन्ति नामभिर्दिव्यैर्,
न ते संसारिणो नरः ॥२५॥

रामं लक्ष्मणपूर्वजम् रघुवरम्,
सीतापतिं सुन्दरम्
काकुत्स्थङ् करुणार्णवङ् गुणनिधिं,
विप्रप्रियन् धार्मिकम् ।

राजेन्द्रं सत्यसन्धनं,

दशरथतनयं,
श्यामलं शान्तमूर्तिम्
वन्दे लोकाभिरामम्,
रघुकुलतिलकम्,
राघवम् रावणारिम् ॥२६॥

रामाय रामभद्राय,
रामचन्द्राय वेधस्ये ।
रघुनाथाय नाथाय,
सीतायाः पतये नमः ॥२७॥

श्रीराम राम रघुनन्दन राम राम
श्रीराम राम भरताग्रज राम राम ।
श्रीराम राम रणकर्कश राम राम
श्रीराम राम शरणम् भव
राम राम ॥२८॥

श्रीरामचन्द्रचरणौ मनसा स्मरामि
श्रीरामचन्द्रचरणौ वचसा गृणामि ।

श्रीरामचन्द्रचरणौ शिरसा
नमामि श्रीरामचन्द्रचरणौ
शरणम् प्रपद्ये ॥२९॥

माता रामो, मत्पिता रामचन्द्रः
स्वामी रामो, मत्सखा रामचन्द्रः ।
सर्वस्वम् मे, रामचन्द्रो दयालुर्,
नान्यज् जाने, नैव जाने
न जाने ॥३०॥

दक्षिणे लक्ष्मणो यस्य,
वामे तु जनकात्मजा ।
पुरतो मारुतिर्यस्य,
तं वन्दे रघुनन्दनम् ॥३१॥

लोकाभिरामम् रणरङ्गधीरम्,
राजीवनेत्रम् रघुवंशनाथम् ।
कारुण्यरूपङ्क करुणाकरन् तम्,
श्रीरामचन्द्रं शरणम् प्रपद्ये ॥३२॥

मनोजवम् मारुततुल्यवेगज्,
जितेन्द्रियम् बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं,
श्रीरामदूतं शरणम् प्रपद्ये ॥३३॥

कूजन्तम् रामरामेति,
मधुरम् मधुराक्षरम् ।
आरुह्य कविताशाखां,
वन्दे वाल्मीकिकोकिलम् ॥३४॥

आपदामपहर्तारन्,
दातारं सर्वसम्पदाम् ।
लोकाभिरामं श्रीरामम्,
भूयो भूयो नमाम्यहम् ॥३५॥

भर्जनम् भवबीजानाम्,
अर्जनं सुखसम्पदाम् ।
तर्जनं यमदूतानाम्,
रामरामेति गर्जनम् ॥३६॥

रामो राजमणिः सदा विजयते,

रामम् रमेशम् भजे
रामेणाभिहता निशाचरचमू,
रामाय तस्मै नमः ।
रामाञ्जास्ति परायणम् परतरम्,
रामस्य दासोऽस्म्यहम्
रामे चित्तलयः सदा भवतु मे,
भो राम मामुद्धर ॥३७॥

राम रामेति रामेति,
रमे रामे मनोरमे ।
सहस्रनाम तत्तुल्यम्,
रामनाम वरानने ॥३८॥

॥ इति श्रीबुधकौशिकविरचितं,
श्रीरामरक्षास्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥
॥ श्रीसीतारामचन्द्रार्पणमस्तु ॥

**सफलता पाने के लिए करें
राम रक्षा स्तोत्र से जुड़ा यह
टोटका**

- सरसों के दाने एक कटोरी में दाल लें।
- कटोरी के नीचे कोई ऊनी वस्त्र या आसन होना चाहिए।
- राम रक्षा मन्त्र को 11 बार पढ़ें।
- इस दौरान आपको अपनी उँगलियों से सरसों के दानों को कटोरी में घुमाते रहना है।
- इस समय भगवान श्री राम कि प्रतिमा या फोटो आपके आगे होनी चाहिए जिसे देखते हुए आपको मन्त्र पढ़ना है।

- ग्यारह बार के जाप से सरसों सिद्ध हो जायेगी।
- आप उस सरसों के दानों को शुद्ध और सुरक्षित पूजा स्थान पर रख लें।
- जब आवश्यकता पड़े तो कुछ दाने लेकर आजमायें।

यदि किसी कोर्ट-कचहरी में कानूनी वाद विवाद या मुकदमा हो तो उस दिन सरसों के दाने साथ लेकर जाएँ और वहाँ दाल दें जहाँ विरोधी बैठता है या उसके समुख फेंक दें। ऐसा करने से उस केस का फैसला आपके हक में आएगा। कोर्ट के बाहर भी फैसला हो सकता है। वहीं यदि आप खेल या प्रतियोगिता या साक्षात्कार में प्रतिभाग करने जा रहे हैं तो सिद्ध सरसों को साथ ले जाएँ और अपनी जेब में रखें। ऐसा करने से आप जिस किसी भी उद्देश्य से घर से बाहर निकले हैं आपका वह उद्देश्य पूर्ण होगा। यात्रा में साथ ले जाएँ आपका कार्य सफल होगा। राम रक्षा स्त्रोत से पानी सिद्ध करके रोगी को पिलाया जा सकता है। रोगी को इसमें लाभ मिलेगा।



श्री राम रक्षा स्तोत्र के लाभ

जैसा कि हमने बताया है कि राम रक्षा स्तोत्र सभी समस्याओं का रामबाण इलाज है। इस स्तोत्र को जपने से कई तरह के लाभ प्राप्त होते हैं। जैसे -

- इसके पाठ से जीवन में आने वाली सभी प्रकार की विपत्तियाँ दूर होती हैं।
- राम रक्षा स्तोत्र का पाठ करने से व्यक्ति भयमुक्त रहता है।
- यह सभी प्रकार के शारीरिक कष्टों को दूर करता है।
- इसका नित्य पाठ करने से व्यक्ति दीर्घायु, सुखी, संततिवान और विनय संपन्न होता है।
- मंगलवार के दिन इसका जाप करने से मंगल ग्रह के दोष समाप्त होते हैं।
- स्तोत्र के जाप से निकलने वाली ध्वनि से उसके चारों तरफ सुरक्षा कवच का निर्माण होता है।
- इसका पाठ करने से साधक को हनुमान जी का आशीर्वाद प्राप्त होता है।

भगवान राम के नाम में ही इतनी शक्ति है कि व्यक्ति के जीवन में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होने लगते हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम राम के आदर्श सदैव हमारे लिए प्रेरणास्रोत का कार्य करते हैं। इसलिए जो व्यक्ति रामरक्षा स्तोत्र को जपता है तो उसके अंदर अच्छे गुणों का विकास होता है। वह व्यक्ति हमेशा ही सच्चे मार्ग पर चलता है तथा अपने सिद्धांतों पर कायम रहते हुए बुराइयों को पराजित करता है। उसका व्यक्तित्व समाज के लिए प्रेरणा का कार्य करता है। 38 श्लोकों का यह स्तोत्र बेहद ही शक्तिशाली है। कहा जाता है कि जो व्यक्ति श्रीराम के दिखाए गए मार्ग पर चलता है। उसे दैवीय शक्ति की आवश्यकता होती है। ऐसा इसलिए क्योंकि राम का मार्ग बेहद कठिन है। आज के युग में इस पर चलना आसान नहीं है। इसलिए राम रक्षा स्तोत्र से व्यक्ति को इस मार्ग पर चलने की शक्ति मिलती है।

Pioneer in VR
India's First VR Gaming Company

Visit Now >



एस्ट्रोसेज वर्ष पत्रिका

50%
off

आपका कुंडली आधारित
12 महीनों का भविष्यफल



कीमत
~~₹999~~ ₹499

अभी खरीदें



कीमत:
~~₹1105~~
₹650

जानें कब मिलेगी सफलता, कब चमकेगा भाग्य?

एस्ट्रोसेज महा कुंडली

100+
पृष्ठ

अभी खरीदें >



जानें दुनिया भर में प्रसिद्ध “इस्कॉन” मंदिर से जुड़े इन रोचक तथ्यों को !



कब और कैसे शुरू हुई कृष्ण भक्ति की विशाल संस्था “इस्कॉन”

इंटरनेशनल सोसाइटी फॉर कृष्णाकांशसनेस यानि इस्कॉन संस्था ना केवल इंडिया में बल्कि पूरी दुनिया में मशहूर है। विश्व विख्यात इस संस्था ने कृष्ण जी के प्रमुख मंत्र ‘हरे रामा-हरे रामा, रामा-रामा हरे हरे, हरे कृष्णा-हरे कृष्णा, कृष्णा-कृष्णा हरे हरे’ को पूरी दुनिया में प्रसिद्ध कर दिया। हिन्दू धर्म को मानने वाले भारतीय तो इन मंत्रों का जाप करते ही हैं, आज दुनिया के अन्य देशों में रहने वाले विदेशी नागरिक भी इस्कॉन संस्था का सदस्य बनकर इस मंत्र का जाप श्रद्धा पूर्वक करते नजर आते हैं। आज हम आपको बताने जा रहे हैं इस्कॉन मंदिर से जुड़ी प्रमुख तथ्यों के बारे में। आइये जानते हैं कब और कैसे हुई कृष्ण भक्ति के इस विशाल संस्था की शुरुआत।

अगर आप एस्ट्रोसेज की साइट पर जाना चाहते हैं तो यहाँ [क्लिक करें](#)

कब और किसने की इस्कॉन संस्था की स्थापना

इस्कॉन मंदिर और इस संस्था से जुड़े तमाम अनुयायियों ने इसे आज एक आंदोलन के रूप में तब्दील कर दिया है। इससे जुड़े सभी अनुयायी विश्व भर में सनातन हिन्दू धर्म के प्रचार के साथ ही गीता में दिए भगवान् श्री कृष्ण के प्रमुख उपदेशों का प्रचार करते हैं। बता दें कि इस्कॉन की स्थापना भारत में नहीं बल्कि 1966 में स्वामी प्रभुपादजी ने न्यूयॉर्क में की थी। उनका पूरा नाम श्री मूर्ति श्री अभयचरणारविन्द भवितवेदांत स्वामी प्रभुपादजी है। उनका जन्म भारत के कोलकाता में 1 सितंबर 1869 को हुआ था। उन्होंने 55 वर्ष की उम्र में पूरी दुनिया में हरे रामा हरे कृष्णा का प्रचार कर इंटरनेशनल सोसाइटी फॉर कृष्णाकांशसनेस की स्थापना की। 81 साल की उम्र में वर्ष 1977 में उनका देहांत हो गया।



कृष्ण जन्मोत्सव पर होती है विशेष तैयारी

कृष्ण भक्ति को समर्पित इस संस्था के अनुयायी विशेष रूप से जन्माष्टमी की खास तैयारी करते हैं। इस दिन यहाँ की रौनक देखते ही बनती है। बैंगलोर स्थित इस्कॉन मंदिर दुनिया का सबसे बड़ा इस्कॉन मंदिर है जिसे 1997 में बनवाया गया था। जन्माष्टमी के मौके पर यहाँ इस्कॉन के दुनिया भर के अनुयायी एकत्रित होते हैं और धूम धाम के साथ कृष्ण जन्मोत्सव मनाते हैं। इस संस्था की सबसे खास बात ये है, यहाँ विदेशी अनुयायियों की संख्या सबसे ज्यादा है। उन्होंने ना केवल कृष्ण भक्ति में खुद को पूरी तरह से डुबो लिया है बल्कि दुनिया भर में इसका प्रचार भी कर रहे हैं। बता दें कि दुनिया भर में स्थित सभी इस्कॉन मंदिर की विशेषता ये है की इन सबकी संरचना एक जैसी है। इसके साथ ही यहाँ कृष्ण जी की मूर्ति को खासतौर से सजाया जाता है और भजन कीर्तन का समय भी हर जगह एक ही है।

इस्कॉन के अनुयायियों के लिए इन नियमों का पालन करना महत्वपूर्ण माना जाता है



यदि आप अपना जीवन कृष्ण भक्ति में समर्पित करना चाहते हैं और इस्कॉन का सदस्य बनना चाहते हैं तो आपको लहसुन, प्याज, मांस और मछली जैसे तामसिक भोजन का सेवन त्यागना होगा। इसके साथ ही शराब और सिगरेट की आदत भी छोड़नी होगी। यदि आप किसी अनैतिक कामों में संलिप्त हैं तो उससे भी आपको दूर रहना होगा। इस्कॉन के अनुयायियों के लिए रोजाना शाम के वक्त बनाये एक घंटे गीता या अन्य किसी धार्मिक ग्रन्थ का पाठ करना अनिवार्य माना जाता है। इसके आलावा सदस्यों को अपनी यथा शक्ति अनुसार रुद्राक्ष की माला से हरे कृष्णा-हरे रामा का जाप करना अनिवार्य होता है।



Lab Certified Gemstones
Genuine Gemstones at best price

बहुत खास है शिव का त्रिलोकीनाथ मंदिर



इस मंदिर में दो धर्मों के लोग साथ में करते हैं पूजा

भारत में जितने धर्म नहीं हैं उससे ज्यादा यहाँ मंदिरों की संख्या है। अमूमन ऐसा देखा जाता है कि किसी मंदिर मस्जिद में केवल उसी धर्म के लोग पूजा पाठ के लिए आते हैं। आज हम आपको भारत के हिमाचल प्रदेश स्थित एक ऐसे मंदिर के बारे में बताने जा रहे हैं जहाँ दो अलग-अलग धर्म के लोग पूजा के लिए आते हैं। हिमाचल के लाहौल और स्पीति जिले के समीप स्थित त्रिलोकीनाथ गांव में ये खास मंदिर स्थित है। आइये जानते हैं कि क्या है इस मंदिर से जुड़ी विशेषता और किन दो धर्मों के लोग इस मंदिर में पूजा अर्चना के लिए आते हैं।

हिमाचल के इस मंदिर में शिव के त्रिलोक रूप की होती है पूजा

आपकी जानकारी के लिए बता दें कि हिमाचल प्रदेश के लाहौल और स्पीति जिले के समीप स्थित एक छोटे से कस्बे उदयपुर में त्रिलोकीनाथ नाम के गांव में चंद्रभागा नदी

के तट पर भगवान् शिव के त्रिलोक रूप का त्रिलोकीनाथ मंदिर स्थित है। इस मंदिर की खासियत ये है कि यहाँ दो धर्म समुदाय के लोग साथ में पूजा अर्चना के लिए आते हैं। आपको जानकर हैरानी होगी कि जहाँ एक तरफ हिन्दू धर्म को मानने वाले लोग इस मंदिर में शिव जी की पूजा अर्चना करते हैं वहीं दूसरी तरफ बौद्ध धर्म को मानने वाले उनकी पूजा बौद्ध आर्य अवलोकीतीश्वर के रूप में करते हैं। माना जाता है की पूरी दुनिया में त्रिलोकीनाथ मंदिर एक मात्र ऐसा मंदिर है जहाँ एक ही मूर्ती की पूजा दो अलग-अलग धर्म के लोग अलग रूप में करते हैं।

ऐसा है त्रिलोकीनाथ मंदिर का इतिहास

आपको बता दें कि प्राचीन हिन्दू मान्यताओं के अनुसार हिमाचल स्थित शिव के इस मंदिर का निर्माण महाभारत काल में पांडवों द्वारा करवाया गया था। वहीं दूसरी तरफ बौद्ध धर्म के लोगों की ऐसी मान्यता है कि इस मंदिर का निर्माण आठवीं शताब्दी में पद्मसंभव द्वारा करवाई गयी थी।

उन्होंने ही इस मंदिर का निर्माण कर पहली बार यहाँ पूजा पाठ किया था। हालाँकि यहाँ के स्थानीय लोगों का ऐसा मानना है कि इस मंदिर का निर्माण कुल्लू के राजा ने करवाया था और वो अपने साथ मंदिर में स्थित मूर्ती भी लेकर आये थे। बाद में किसी कारणवश जब वो कुल्लू छोड़कर जाने लगे तो उस मूर्ती को भी साथ ले जाने की कोशिश की। उस वक्त वो मूर्ती इतनी भाड़ी हो गयी की उसे ले जाना राजा के सामर्थ के बाहर था। शिव जी के इस मंदिर को हिन्दू धर्म के लोग कैलाश मानसरोवर के बाद दूसरा सबसे पवित्र स्थल मानते हैं।

भादो माह में यहाँ लगता है श्रद्धालुओं का ताँता

भादो माह की शुरुआत होते ही त्रिलोकीनाथ मंदिर में श्रद्धालुओं की संख्या भी दिन बां दिन बढ़ती जाती है। बता दें कि भादो मास में विशेष रूप से यहाँ तीन दिवसीय पोरी मेले का आयोजन किया जाता है। इस दौरान यहाँ दूर-दूर



से हिन्दू और बौद्ध दोनों धर्मों को मानने वाले लोग मेले में शामिल होने और भगवान् के दर्शन के लिए आते हैं। तीन दिवसीय इस त्यौहार में शामिल होने वाले दोनों धर्मों के लोगों को साथ में देखना बेहद रमणीय लगता है। इस त्यौहार की शुरुआत ढोल नगाड़ों के साथ होती है और इस दिन विशेष रूप से भगवान् त्रिलोक की मूर्ती का दूध और दही से अभिषेक किया जाता है। स्थानीय लोगों का ऐसा मानना है कि इस दिन भगवान् शिव खुद घोड़े पर सवार होकर भक्त जनों का हाल चाल जानने आते हैं।

**Know when your
Destiny will shine!**

**Brihat
Horoscope**

Buy Now >

Price @ Just ₹ 999/-

AstroSage
World's No. 1 Astrology Portal & App

ज्योतिषी से प्रश्न पूछें

हमारे विशेषज्ञ ज्योतिषी से लें परामर्श

- के.पी. सिस्टम
- लाल किताब
- नाड़ी ज्योतिष
- ताजिक ज्योतिष

अभी खरीदें >

संपर्क करें
+91-7827224358,
+91-9354263856
Email:- sales@ojassoft.com
www.astrosage.com

स्पेशल कीमत:- ₹299/-

राहुकाल का रहस्य

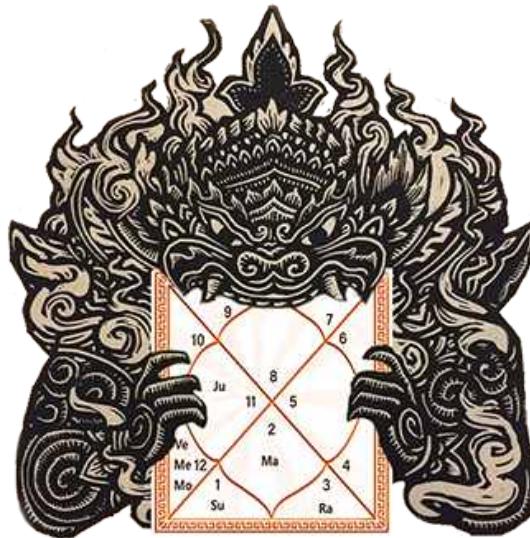
राहु काल को कई बार राहु कालम् या राहुकाल भी लिखा जाता है। जो लोग ज्योतिष के सिद्धान्तों में विश्वास करते हैं, वे इसे बहुत अधिक महत्व प्रदान करते हैं। विशेषतः दक्षिण भारत में लोगों का यह मत है कि दैनिक जीवन की गतिविधियों में राहु काल का विचार अत्यन्त आवश्यक है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि आखिरकार राहुकाल है क्या और इसका क्या उपयोग है? यदि नहीं, तो आइए जानते हैं इस रहस्यपूर्ण समयावधि के बारे में जिसे “राहु काल” के नाम से जाना जाता है।

राहु काल क्या है?

क्या आप जानते हैं कि वस्तुतः राहु काल है क्या? यदि आम भाषा में कहा जाए तो यह प्रतिदिन आने वाला वह काल-खण्ड है जो वैदिक ज्योतिष के अनुसार शुभ नहीं माना जाता है। इस काल पर राहु का स्वामित्व होता है। इस समय-अवधि में कोई भी महत्वपूर्ण कार्य न करने का विधान है। यदि इस समय में किसी काम को शुरू किया जाता है तो मान्यता है कि वह काम कभी सकारात्मक परिणाम नहीं देता है। यद्यपि वे गतिविधियाँ जो राहुकाल से पहले ही आरम्भ कर दी गई हों, उन्हें करते रहने से कोई समस्या उत्पन्न नहीं होती है।

राहुकाल की गणना कैसे करते हैं?

यहाँ हमने आपको राहु काल कैलक्युलेटर उपलब्ध कराया है, जिसके माध्यम से आप अपने शहर या गाँव के अनुसार राहुकाल का ठीक-ठीक समय ज्ञात कर सकते हैं। यदि आप राहु काल की गणना स्वयं करना चाहते हैं तो



निम्नलिखित प्रक्रिया को उपयोग में लाएं

- अपने क्षेत्र में उस दिन के सूर्योदय और सूर्यास्त का समय ज्ञात करें।
- अब इस समयावधि को 8 बराबर भागों में बाँट लें।
- सोमवार को दूसरा, मंगलवार को सातवाँ, बुधवार को पाँचवाँ, गुरुवार को छठा, शुक्रवार को चौथा, शनिवार को तीसरा और रविवार को आठवाँ हिस्सा राहु काल कहलाता है।

उदाहरण के तौर पर, मान लीजिए कि किसी क्षेत्र में हर रोज़ सूर्योदय का समय प्रातः 6 बजे और सूर्यास्त का समय शाम 6 बजे है। यदि हम ऊपर दी हुई प्रक्रिया का अनुसरण करें तो हमें प्रतिदिन निम्न समय पर राहुकाल प्राप्त होगा

सोम	प्रातः 7:30 -	प्रातः 9:00
मंगल	सांय 3:00 -	सायं 4:30
बुध	प्रातः 12:00 -	सायं 1:30
बृहस्पति	सायं 1:30 -	सायं 2:00
शुक्र	प्रातः 10:30 -	प्रातः 12:00
शनि	प्रातः 9:00 -	प्रातः 10:30
रवि	सायं 4:30 -	सायं 6:00

यह राहुकाल गणना करने की विधि को ठीक तरह से समझने के लिए एक उदाहरण मात्र है। इसे उपयोग में नहीं लिया जा सकता है, क्योंकि विभिन्न स्थानों में प्रतिदिन सूर्यास्त व सूर्योदय का समय भिन्न-भिन्न होता है।

राहु काल के दौरान क्या न करें?

कोई भी वह कार्य जिसे महत्वपूर्ण या शुभ माना जाता है, उसे राहु काल में न करना ही उचित समझा गया है। जो लोग इस सिद्धान्त में विश्वास रखते हैं वे इस दौरान नए कार्य का आरम्भ, विवाह, गृह-प्रवेश, कोई चीज खरीदना और व्यापार आदि नहीं करने की चेष्टा करते हैं। हालाँकि जो काम पहले शुरू हो चुके हों उनके राहु काल के दौरान जारी रहने से कोई हानि नहीं होती है।

अपने शहर के लिए राहुकाल का समय
जानने के लिए यहाँ क्लिक करें !

कीमत:
~~₹1105~~
₹650

100+
पृष्ठ

जानें कब मिलेगी सफलता, कब चमकेगा भाग्य?

एस्ट्रोसेज महा कुंडली

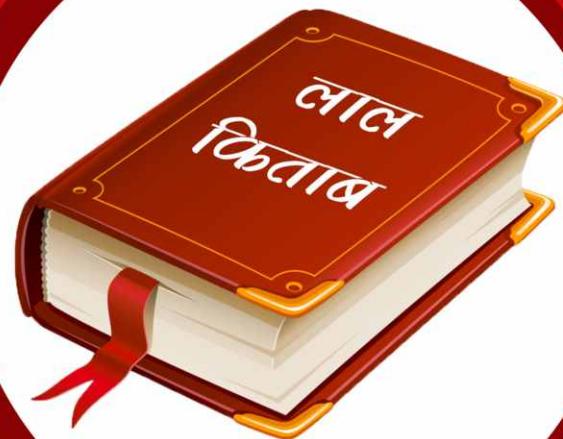
अभी खरीदें >

महा कुंडली

Lal Kitab
KP System
Varshphal
Kundli

जल्द आ रही है...

लाल किताब वर्षफल दिपोर्ट



देश के वो अनोखे मंदिर जो चमत्कारी रूप से एक रात में ही बनकर हुए थे तैयार।



जैसा सभी जानते हैं कि भारत देश विभिन्न-विभिन्न सभ्यताओं का देश है जहाँ की संस्कृति लगभग आज से हजारों साल पुरानी है, जिसका वर्णन कई पौराणिक ग्रंथों और शास्त्रों में हमें पढ़ने को मिलता है। इन्हीं का उदाहरण देते हैं कई प्राचीन एवं पौराणिक मंदिर। जहाँ सभ्यताओं का नमूना आपको कदम-कदम पर दिख जाएगा।

भारत में मौजूद हर मंदिर की कुछ न कुछ धार्मिक मान्यता आवश्यक होती हैं, जिनमें जहाँ कुछ मंदिर बेहद साधारण तो कुछ बेहद भव्य होते हैं। इन मंदिरों के निर्माण को लेकर भी कई तरह के किस्से-कहानियाँ सुनने को मिलते हैं। कुछ मंदिर तो आपको ऐसे मिल जाएंगे जिसकी भव्यता के चर्चे न केवल देश में बल्कि विदेशों में भी बहुत सुनने को मिलते हैं। इन मंदिरों की वास्तुकला को देखकर किसी का भी सिर घूम जाता है और हर कोई इसके निर्माण और उसकी नकाशी को लेकर सोच में पड़ जाता है कि इसे

बनाने में कितना समय लगा होगा।

परन्तु यदि हम आपको ये बताएं कि कुछ ऐसे भी मंदिर आज मौजूद हैं, जिन्हे बनाने में महज एक दिन का समय लगा था तो शायद आप इस बात पर विश्वास नहीं कर पाएंगे, लेकिन ये सच हैं। दोस्तों आज हम अपने इस लेख में आपको कुछ ऐसे भव्य मंदिरों के बारे में बताने जा रहे हैं जिन्हे बनाने में केवल एक दिन का समय लगा था। साथ ही हम उन मंदिरों से जुड़ी कुछ हैरान करने वाली कहानियाँ भी आपको बताएँगे।

चलिए आइए जानें एक रात में बनने वाले मंदिरों और उनसे जुड़े रहस्य...

1. कन्याकुमारी का आदि केशव पेरुमल मंदिर

दक्षिण भारत के प्रसिद्ध कन्याकुमारी में स्थित आदि केशव पेरुमल मंदिर आज से लगभग 4000 साल पुराना बताया जाता है। इस मंदिर में तीन पवित्र नदियों का संगम



होता है। इस मंदिर को लेकर कई पौराणिक कथाएँ सुनने को भी मिल जाती हैं। उन्हीं में से एक मान्यता के अनुसार, एक बार भगवान शिव तांडव नृत्य में मग्न थे। भगवान शिव के तांडव को देख वहाँ मौजूद उनके भूतगण उनपर हँसने लगे। जिसके चलते भगवान शिव इतने क्रोधित हो गए कि उन्होंने तुरंत उन्हें श्राप दे दिया।

जिसके बाद महादेव के उस श्राप से मुक्ति पाने के लिए सभी भूतगण ब्रह्माजी के पास मदद के लिए पहुंचे। तब ब्रह्माजी ने उन्हें कठोर तपस्या करने के लिए कहा। भूतों की उस तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान विष्णु ने उन्हें दर्शन दिए और इस दौरान उन्होंने तपस्या करने वाले स्थान पर एक सरोवर का निर्माण करवाया, जो आगे चलकर अनंतसर के नाम से विख्यात हुआ।

भगवान विष्णु द्वारा बनाई गई सरोवर में ही भूतगण ने स्नान करके अपने श्राप से मुक्ति पाई। इस दौरान माना जाता है कि भूतों ने भगवान विष्णुजी का आभार प्रकट करने के लिए एक ही रात में केशव पेरुमल मंदिर का निर्माण किया। इसलिए ही जहाँ ये मंदिर स्थिति है उस नगरी को भूतपुरी भी कहा जाता है क्योंकि यहीं वो स्थान था जहाँ भूतों ने भगवान विष्णु की तपस्या की थी।

2. मेरठ का भूतनाथ मंदिर

दिल्ली से सटे उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले के दतिया गांव में भगवान भूतनाथ का प्राचीन एवं बेहद रहस्यमय मंदिर है,



जिसके निर्माण को लेकर ये दावे किये जाते रहे हैं कि भूतों ने स्वयं इस मंदिर को महज एक ही रात में बनाया था। जिसके बाद भूतों द्वारा निर्मित इस मंदिर का नाम भूतनाथ मंदिर रखा गया। इस मंदिर की अगर बनावट की बात करें तो, जानकार हैरानी होगी कि मंदिर के निर्माण में आपको किसी भी तरह से सिमेंट और गाड़े का प्रयोग नहीं मिलेगा। लेकिन बावजूद इसके ये मंदिर हज़ारों साल पुराना बताया जाता है जो आज तक जस का तस खड़ा हुआ है।

हालांकि समय के साथ मंदिर के शिखर पर काई लगी हुई है लेकिन उसके अलावा ये प्राचीन मंदिर मज़बूती के साथ खड़ा नज़र आता है। इस मंदिर को लेकर यहाँ के गांववाले बताते हैं कि मंदिर के शिखर को छोड़कर आपको कही भी काई या कोई नुक्सान नज़र नहीं आएगा। क्योंकि मंदिर के शिखर को भूतों ने नहीं बनाया है। मान्यता अनुसार जब भूत एक रात में मंदिर बनाने का कार्य कर रहे थे तो मंदिर का शिखर बनने से पहले ही सूर्योदय हो गया था जिसके चलते भूतों को अपनी दुनिया में लौटना पड़ा था। इसके बाद शिखर बनाने का कार्य मनुष्यों ने किया, जिसके परिणामस्वरूप मंदिर के शिखर पर काई लग गई।

3. काठियावाड़ का नवलखा मंदिर

गुजरात के काठियावाड़ में एक नवलखा मंदिर देशभर में अपनी सम्मति को लेकर प्रसिद्ध है। जो आज से लगभग 250 से 300 साल

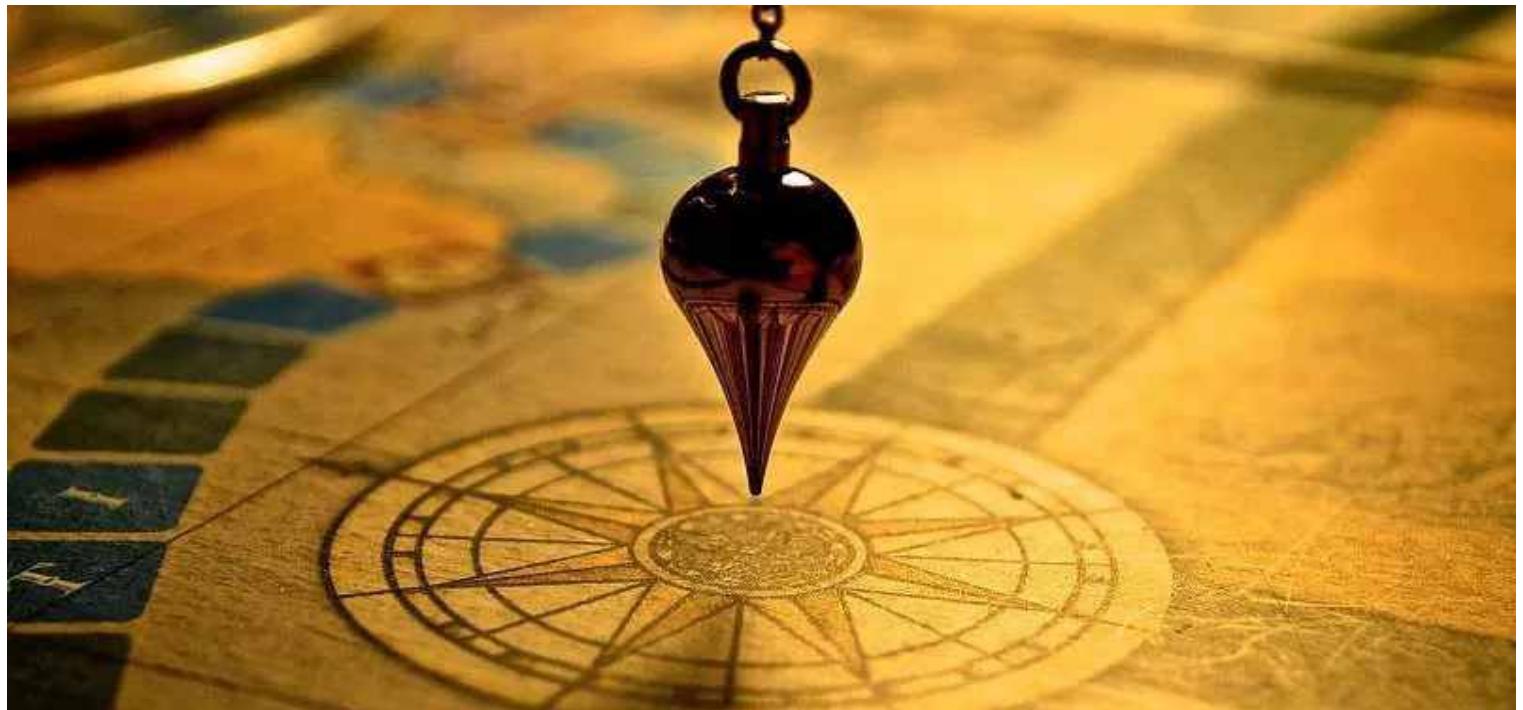


पुराना बताया जाता है। मान्यता अनुसार इस मंदिर का निर्माण बाबरा नाम के एक भूत ने केवल एक रात में खुद किया था। लेकिन इस मंदिर की भव्यता को देखकर किसी के लिए भी इस बात पर यकीन करना बेहद मुश्किल हो जाएगा कि यह मंदिर किसी भूत ने महज एक रात में बनाया है। काठियावाड़ का नवलखा मंदिर सोमनाथ के ज्योतिलिंग की तरह ही बहुत ऊँचा है। इस शिव मंदिर के चारों ओर आपको नग्न-अद्वनग्न नवलाख प्राचीन मूर्तियों एवं प्रतिमाओं के शिल्प नज़र आ जाएंगे।

डाउजिंग – खुशियों का खजाना, हर ताले की चाबी



दीप्ति जैन



मनुष्य परमात्मा की सबसे सुंदर रचना है। परमात्मा ने मनुष्य को उन शक्तियों के साथ भेजा है जिनकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। मनुष्य के मस्तिष्क की गहराई को आज तक कोई नहीं जान पाया है। हम अपनी इन शक्तियों का पूरी तरह प्रयोग भी नहीं कर पाए हैं।

आज हम अपनी उलझनों में इतने उलझ कर रह गए हैं कि हमें अपनी शक्तियों का एहसास भी नहीं होता। हमारी उलझनों का मूल कारण है जीवन में आ रही बाधाएँ। ये बाधाएँ हमें हमारे सुख से दूर रखती हैं। हमारी खुशियों में रोड़ा बनकर हमें भटकाती रहती हैं। अगर ये बाधाएँ दूर हो जाएँ तो हम फिर से सुखी हो जाएंगे। स्वास्थ्य, संपन्नता और संबंध ये खुशियों के तीन स्तम्भ हैं।

एक अस्वस्थ व्यक्ति कभी भी खुश नहीं रह सकता है।

शारीरिक व मानसिक पीड़ा दोनों ही कष्टदायक हैं। आर्थिक समस्या भी व्यक्ति के जीवन में दुःख का कारण है। अभाव में रहने वाला व्यक्ति पूर्ण प्रसन्नता प्राप्त नहीं कर पाता। संबंधों में खटास व बिछड़ाव भी हमें दुःखी बनाता है। अगर हम इन तीनों क्षेत्रों पर काम करें तो हम सदा-सदा के लिए प्रसन्न में हो जाएंगे।

आधुनिक वास्तु विज्ञान का मुख्य अंश 'डाउजिंग' एक वरदान से कम नहीं। डाउजिंग एक ऐसी प्राचीन वैज्ञानिक कला है जिसके द्वारा हम अपनी परेशानियों का मूल कारण जानकर उन समस्याओं को सही, उचित व संभव हल ढूँढ सकते हैं। इस विधा के द्वारा व्यक्ति की हर समस्या का समाधान संभव है।

आज हम अपने किए हुए कर्मों को ही तो भोग रहे हैं चाहे वे

डाउजिंग का रहस्य

तो किए हुए कर्मों को सुधारा जा सकता है।

‘डाउजिंग’ का शाब्दिक अर्थ है गहराई पर जाकर गोता खाना। डाउजिंग में ‘पैंडुलम’ नामक यंत्र का प्रयोग किया जाता है। एक लंबा धागा या चेन जिसके नीचे लटकी हुई भारी नोकदार लटकन को पैंडुलम कहते हैं। पैंडुलम डाउजिंग तकनीक से भूमि में दबा हुआ ख़ज़ाना, पानी का कुआँ, बास्ती सुरंग, रक्ख की खाने व अन्य खनिज पदार्थ की खोज सदियों से की जा रही है।

फ्रांस में इस पैंडुलम को चार्ट के साथ विकसित किया गया। वहाँ यह तकनीक डाक्टरों द्वारा बीमारियों के मूल कारण की खोज में प्रयोग हो रही है। यह विधा ‘रेडियेस्थीसिया’ के नाम से प्रचलित है। वहाँ यह तकनीक जन्म से पूर्व बच्चे का लिंग, जन्म-तिथि, एलर्जी व अन्य बीमारियों की खोज में प्रयोग होती है।

जब-जब मानव ज़िंदगी ख़तरे में दिखी, पैंडुलम डाउजिंग की सहायता ली गयी। वियतनाम युद्ध व द्वितीय विश्व युद्ध में इस तकनीक की मदद से सुरंग की खोज व जीवित बम की आशंका दूर की गई।

आज़ादी के बाद तत्कालीन प्रधानमन्त्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू जी ने इस तकनीक का राजस्थान में कुँए व पानी की खोज में प्रयोग किया। चार्ट की मदद से डाउजिंग कर, मनुष्य की समस्याओं का समाधान ढूँढ़ कर उनका जीवन सुखी बनाने का एक प्रयास किया जा रहा है। हमारी शंका हमारे दुःख का कारण है। प्रश्नों का उत्तर जान व्यक्ति प्रसन्नता प्राप्त कर सकता है।

जैसे हमारी समस्याओं के तीन मापदंड हैं, ठीक उसी तरह समाधान के भी तीन तरीके हैं वास्तु, ज्योतिष व पर्यावरण संतुलन। इन तीनों तरीकों का संतुलित प्रयोग कर हर समस्या का समाधान संभव है। डाउजिंग की मदद से हम तीनों ही क्षेत्र में संयोजित ढंग से काम करते हैं।

आधुनिक वास्तु विज्ञान में बताए हुए समाधान भी अन्य

विधाओं से भिन्न हैं। ये व्यक्ति को प्राकृतिक रूप से उपचार प्रदान करते हैं। प्राकृतिक उपाय करने से परेशानियाँ बार-बार वापस नहीं आतीं। उनका पूर्ण समाधान बहुत ही सुव्यवस्थित ढंग से हो जाता है और हमारा जीवन पुनः खुशियों से भर जाता है।

यह जानना बहुत आवश्यक है कि पैंडुलम किस तरह काम करता है। जैसे रेडियो अदृश्य किरणों को ग्रहण करता है, ठीक उसी प्रकार पैंडुलम व्यक्ति के अचेतन मन, जगह, विचार व वस्तु की अदृश्य सूक्ष्म कणों व ऊर्जा को प्राप्त कर चार्ट द्वारा उत्तर हम तक पहुँचाता है। दरअस्ल, पैंडुलम चार्ट में दिए हुए विकल्पों को चुनकर हमें हमारी शंकाओं से मुक्ति दिलाता है। हमें हमारे प्रश्नों के उत्तर देता है।

कुछ विशेषज्ञों का कहना है कि पैंडुलम ब्रह्मांडीय ऊर्जा से हमें जोड़कर हमारी तर्क बुद्धि में विश्लेषणी एवं रैखिक शक्ति को जोड़कर, हमारे प्रश्नों का सही उत्तर देता है।

इसको हम दूसरी तरह भी समझ सकते हैं, जैसे कि टेलीविजन का एंटीना अदृश्य किरणों को प्राप्त कर चित्रों में परिवर्तित करता है, ठीक उसी प्रकार पैंडुलम हमारे अवचेतन मन की किरणों से सही उत्तर प्राप्त कर हमें पैंडुलम चार्ट में उत्तर संकेतित करता है।

इस तरह प्रश्नों का सही उत्तर जान हम प्रसन्नचित्त बनकर सुखी जीवन जी सकते हैं। जहाँ प्रश्नों का अंत होता है, वहाँ से प्रसन्नता प्रारंभ होती है। हमारी शंका का समाधान ही सुखी जीवन की आधार है।



कैसे करवाता है राजकीय सेवा में नियुक्ति परम तेजस्वी सूर्य ग्रह



डॉ सुनील बरमोला

भारतीय ज्योतिष के अनुसार समस्त ग्रहों का राजा परम तेजस्वी सूर्य को माना जाता है। सूर्य की श्रेष्ठता व महत्व को देखते हुए प्राचीन आचार्यों ने सूर्य ग्रह को जगत-जीवात्माम की संज्ञा दी है। भारतीय वेद पुराणों और हिन्दु धर्म ग्रन्थों में निम्न आलेख मिलते हैं। दक्ष प्रजापति की दिति एवं अदिति नाम की दो कन्याओं का विवाह कश्यप मुनि के साथ हुआ और अदिति के गर्भ से सूर्य का जन्म प्रकट हुआ। जो हर व्यक्ति को प्रत्यक्ष रूप से पिण्ड ग्रहों के साथ आकाश मण्डल में दिखाई देता है।

ज्योतिष शास्त्र में सूर्य को शूरवीर, क्षत्रिय जाति का सुगठित और दीर्घकाल, कम बालों वाला, पित प्रकृति का वयस्क ग्रह माना गया है। सूर्य सभी ग्रहों का सूत्रधार, सोना, तांबा, धातु, पिता, प्रभाव, शारीरिक गठन, नैरोग्यता, सरकार, सत्ता, राज्य कृपा, श्री लक्ष्मी, धर्म एवं अधिकार युक्त कर्म का कारक ग्रह है। उदारता, इमानदारी, ख्याती तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व सूर्य का शुभ प्रभाव है। यानी यदि किसी व्यक्ति की जन्म-कुण्डली में सूर्य सबसे अधिक बलशाली स्थिति में हो, तो वह व्यक्ति शूरवीर यानी सत्य व न्याय के लिए लड़ने-मरने को तैयार रहने वाला सुगठित शरीर वाला और गेहूं जैसे पीले रंग की चमड़ी वाला होता है जिसमें आयुर्वेद के अनुसार पित्त प्रकृति की अधिकता होती है। साथ ही सूर्य से प्रभावित इस तरह के व्यक्ति के सिर में कम बाल होते हैं। इसलिए यदि किसी व्यक्ति के सिर के बाल 30-35 साल की काफी कम उम्र में काफी कम हो जाएं तो भारतीय फलित ज्योतिष की मान्यातानुसार उस व्यक्ति पर सूर्य का प्रभाव अन्य ग्रहों से अधिक होता है।

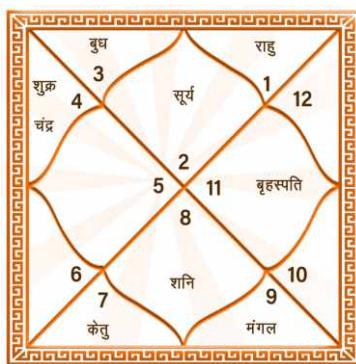
सूर्य से प्रभावित व्यक्ति काफी प्रभावशाली-ईमानदार होते हैं



व काफी गर्वित दिखाई देते हैं। लेकिन यदि व्यक्ति सूर्य के अशुभ प्रभाव से प्रभावित तो हो, परन्तु सूर्य शुभ स्थिति में न हो तो ऐसे व्यक्तियों के ये शुभ गुण समाप्त होकर दुर्गुण में बदल जाते हैं। यही व्यक्ति काफी कंजूस व बेर्इमान भी होते हैं। तथा देखने में काफी अनुदारवादी व अहंकारी प्रतीत होते हैं। सभी ग्रहों में सूर्य ग्रह को राजा की संज्ञा दी गई है इसलिए सूर्य प्रभावित व्यक्ति कभी किसी की गुलामी यानी नौकरी करना पसन्दी नहीं करता, बल्कि अपने स्वयं के व्यवसाय करने में ज्यादा उत्सुक होते हैं। अथवा यदि वे नौकरी करते भी हैं, तो उनकी नौकरी सम्भवतः सरकारी या सरकार से जुड़े क्षेत्रों में ही अधिक होती है और ये उच पद पर ही आसीन होते हैं। सूर्य से प्रभावित व्यक्ति चाहे किसी भी क्षेत्रों में हो पर उसका सरकार व सरकारी क्षेत्रों में उसका अच्छा प्रभाव, रुतबा व लेन-देन रहता है। इसके अलावा यदि किसी व्यक्ति के लिए सूर्य कमजोर हो, तो सूर्य ग्रह के कु-प्रभाव के कारण उसे हृदय रोग, अपच, सिर एवं नेत्र रोग, अधिक पित जन्य रोग, सरकारी क्षेत्रों से परेशानी, पिता के सुख में कमी जैसे अनेक कु-प्रभाओं से परेशानियाँ बनी रहती है।

सूर्य ग्रह की महिमा

उद्धारण - उत्तरप्रदेश के वाराणसी जिले में जन्मित ब्राह्मण कुल में शिशिर पाण्डेय जी का जन्म 12/06/1986 को प्रातः काल 05 बजे हुआ था जिस कारण इनकी जन्मकुंडली वृष लग्न व कन्या राशि की बनती है इनकी जन्मकुंडली के प्रथम भाव में सूर्य ग्रह विराजित हैं कहा जाता है कि जन्म कुंडली के प्रथम भाव में सूर्य शुभ फल देने वाला होता है. सूर्य को ग्रहों का राजा कहा गया है. पहला घर सूर्य का ही होता है, इसलिए सूर्य का इस घर में होना अत्यंत शुभ फलदायक



होता है। ऐसा जातक धार्मिक इमारतों या भवनों का निर्माण और सार्वजनिक उपयोग के लिए कुओं की खुदाई करवाता है। उसकी आजीविका का स्थाई स्रोत अधिकांशतः राजकीय सेवा में नियुक्ति व ईमानदारी से कमाये गये धन को प्राप्त करता है और एक उच्च पद को प्राप्त करता है प्रमाणित रूप से देखा जाय तो ऐसा मुझे माननीय शिशिर पाण्डेय जी की जन्मपत्रिका में देखने को मिला जो की उच्च पदासीन राजकीय सेवा में होने का बाद भी समाजसेवा में लगे रहते हैं। जैसे की पानी के श्रोत लगाना गरीबों को वस्त्र दान करना व हर समस्या का डट-कर सामना करना इससे प्रमाणित होता है की अखंड ज्योतिष शास्त्र एक मार्गदर्शक है जो व्यक्ति के भूत काल, वर्तमान काल को बतलाकर भविष्य के सुखों को जीने का मार्ग दर्शन करती है।



AstroSage Kundli

Download App Now



राशिफल, नवंबर 2019

मेष राशि

सारांश :- इस माह में साहस और पराक्रम के साथ किए गए कार्यों से अच्छी सफलता प्राप्त होने की संभावना बन रही है। आप उत्साहित व्यक्ति होने के साथ-साथ जिद्दी स्वभाव के भी होते हैं, जिसका सीधा असर आपके कामकाज के क्षेत्रों पर बुरा पड़ता है। ऐसे में इस माह आप जिस भी किसी कार्य को करें बेहद सोच-समझकर ही करें, ताकि आपको कामयाबी अच्छी मिले। यथा शीघ्र लाभ प्राप्ति के लिए जल्दबाजी में कोई कार्य न करें और केवल और केवल सोची समझी रणनीति के तहत ही कोई कार्य करें। जिससे समय के अनुसार आपको अच्छा लाभ प्राप्त हो सकें।



विस्तार से पढ़ने के लिए क्लिक करें - [मेष राशि](#)

वृष राशि

सारांश :- आपकी सोच सबसे अलग हो सकती है, जिससे आप किसी बड़े कार्य को अंजाम देने की कोशिश में लगे नज़र आएँगे। आपका कार्य सफल होने की संभावना है। जिस किसी कार्य को लगन और मेहनत के साथ करेंगे उस कार्य में आपको कामयाबी अच्छी मिल सकती है। ऐसे में अपने आप पर भरोसा करते हुए अपने कार्य को करने की कोशिश करें तथा अपने सगे-संबंधियों से सावधान रहते हुए उनसे सामान्य संबंध बनाए रखने का प्रयत्न करें। धन संचय करने में परेशानियां उत्पन्न हो सकती हैं तथा अचल संपत्ति को लेकर विवाद उत्पन्न हो सकता है।



विस्तार से पढ़ने के लिए क्लिक करें - [वृष राशि](#)

मिथुन राशि

सारांश :- आप खुले विचार के व्यक्ति होते हैं, साथ ही आप अपनी सोचने और समझने की प्रबल क्षमता के चलते हर कार्य को करने से पहले उसकी छानबीन ज़रूर करते हैं। आप अपने विचार से किसी भी कार्य को करने का प्रयत्न करने वाले एक अच्छे वक्ता होते हैं। जिन्हे अपने जीवनकाल में कुछ अच्छी उपलब्धि प्राप्त करने की इच्छा होती है और उसी के हिसाब से आप आगे बढ़ने का प्रयत्न करते हैं। इस माह में भी आपकी ये कार्यशैली आपको एक बेहतर दिशा में ले जा सकती हैं।



विस्तार से पढ़ने के लिए क्लिक करें - [मिथुन राशि](#)

कर्क राशि

सारांश :- इस माह में कोई लंबी योजनाओं को अंजाम देने की कोशिश आप कर सकते हैं। परंतु अनावश्यक सोच के कारण कुछ परेशानियां उत्पन्न हो सकती हैं। अतः अपने लक्ष्य का पीछा करने का प्रयास करते रहें। जिससे आपको समय के अनुसार अच्छी कामयाबी प्राप्त हो सकें। इस माह आपके द्वारा किए गए कार्यों से अच्छी सफलता प्राप्त हो सकती है। परंतु मानसिक अशांति तथा तनावपूर्ण स्थिति भी उत्पन्न हो सकती हैं। मन विचलित होने के कारण कार्य क्षेत्र में व्यवधान उत्पन्न हो सकता है तथा आप अपने लक्ष्य से भटक सकते हैं।



विस्तार से पढ़ने के लिए क्लिक करें - [कर्क राशि](#)

सिंह राशि

सारांश :- आप महत्वाकांक्षी व्यक्ति होते हैं। आप में अपने मन के अनुकूल कार्य करने की धारणा होती है। किसी भी कार्य को पूर्ण जिम्मेदारी के साथ करने वाले होते हैं। इसलिए इस माह आपको कामयाबी प्राप्त होने की संभावना अच्छी है। आप सदैव नेतृत्व करने वाले होते हैं तथा स्वाभिमानी होते हैं जिसे अपनी मंज़िल प्राप्त करने की अच्छी खासी लालसा होती है और उसी के अनुसार आप कार्य भी करते हैं। इस माह में आपके लिए धन-धान्य अचल संपत्ति प्राप्ति का योग अच्छा बन रहा है। आप समय के अनुसार जिस किसी कार्य को करेंगे उसमें कामयाबी मिलने की संभावना बन रही हैं। आपके सगे संबंधियों से संबंध भी अच्छे हो सकते हैं। धन संचय करने का प्रयास सफल हो सकता है।



विस्तार से पढ़ने के लिए क्लिक करें - [सिंह राशि](#)

कन्या राशि

सारांश :- ये देखा गया है कि आपमें सोचने और समझने के साथ-साथ निर्णय लेने की क्षमता प्रबल होती है। आप किसी भी कार्य को जिम्मेदारी पूर्वक करने वाले होते हैं। जो कभी-कभी अनावश्यक ही किसी पर शक लेता है। जिसके कारण आपकोके लिए कई तरह की परेशानियां उत्पन्न होने की संभावना रहती हैं। आप अपने कामकाज को लेकर भी सर्वांगीकृत रहते हैं जो कि आपके लिए नुकसानदायक हो सकता है। इसलिए किसी कार्य व्यवसाय में एक दूसरे पर भरोसा करना तथा पूर्ण भरोसा के साथ कार्य करना कामयाबी की ओर ले जाता है। ऐसे में आप इस माह में धन अचल संपत्ति प्राप्त कर पाएंगे।



विस्तार से पढ़ने के लिए क्लिक करें - [कन्या राशि](#)

तुला राशि

सारांश :- इस माह में आत्मविश्वास की कमी हो सकती है। जिस किसी कार्य को साहस और उत्साह के साथ करेंगे उस कार्य में व्यवधान उत्पन्न होने की संभावना बन सकती हैं। इसलिए इस माह किसी भी कार्य को समझदारी पूर्वक करना आपके लिए बेहतर हो सकता है। आप सदा ही अपना बैलेंस बनाकर चलने वाले व्यक्ति होते हैं, जो सदैव आगे पीछे का सोच-समझ ही किसी कार्य को पूरा करना की क्षमता रखते हैं। इसलिए आपको कामयाबी मिलने की संभावना अच्छी होती है। धन अचल संपत्ति को लेकर स्थितियाँ अनुकूल रहने वाली हैं परंतु अनावश्यक तनाव के कारण भाग दौड़ तथा परेशानियां बढ़ सकती हैं। अचल संपत्ति प्राप्ति में समझदारी रखें। धन संचय करने का प्रयास सफल हो सकता है।



विस्तार से पढ़ने के लिए क्लिक करें - [तुला राशि](#)

वृश्चिक राशि

सारांश :- आप साहसी तथा पराक्रमी व्यक्ति होते हैं। आपमें किसी भी कार्य को करने की क्षमता अच्छी पाई जाती है, इस कारण आप पूर्ण जिम्मेदारी के साथ अपने कार्यों को करने वाले होते हैं, तभी आपको कामयाबी अच्छी प्राप्त हो पाती है।



आप अपने जीवन में यश प्राप्त करने की धारणा से किसी भी कार्य को करते हैं परंतु जल्दबाजी में किया गया कार्य या लिया गया निर्णय आपके लिए नुकसानदायक हो सकता है। इसलिए इस माह भी किसी भी कार्य को सोच समझकर ही करें, जिससे आपको कामयाबी अच्छी प्राप्त हो। धन अचल संपत्ति प्राप्त करने का उद्देश्य इस माह के उत्तरार्ध में पूरा हो सकता है।

विस्तार से पढ़ने के लिए क्लिक करें - [वृश्चिक राशि](#)

धनु राशि

सारांश :- इस माह में आपके कार्य क्षेत्र में तनावपूर्ण स्थिति रहने वाली है। आपको कामकाज को लेकर भागदौड़ की स्थितियों से दो-चार होना पद सकता है। आप जिस किसी कार्य को लेकर गंभीर रहेंगे उस कार्य में आपको सफलता प्राप्त होने की संभावना रहेगी। जितना ज्यादा प्रयास करेंगे उतना ही आपको अच्छा लाभ प्राप्त हो सकता है। भाग्य के सहारे रहकर किसी कार्य को करना आपकी भूल हो सकती है। कर्म पर भरोसा ज्यादा करना पड़ेगा तभी आपको कामयाबी अच्छी प्राप्त हो सकती है। अनावश्यक कामकाज से संबंधित विवाद में उलझने की कोशिश ना करें। अन्यथा परेशानियां बढ़ सकती हैं।



विस्तार से पढ़ने के लिए क्लिक करें - **धनु राशि**

मकर राशि

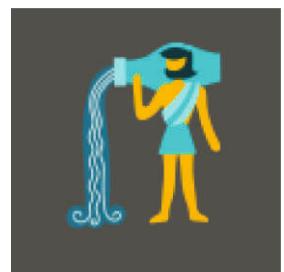
सारांश :- इस माह में आप खुद को कुछ परेशान सा महसूस कर सकते हैं। कामकाज को लेकर भाग दौड़ ज्यादा करनी पड़ सकती है। काम का बोझ पढ़ने से परेशानियां भी बढ़ सकती हैं। आर्थिक मामले में बेहतर लाभ प्राप्त होने के अवसर प्राप्त हो सकते हैं। परंतु इसके लिए मेहनत भी ज्यादा करनी पड़ेगी। आप अपने मनोबल को बढ़ाएं रखने का प्रयत्न करने के साथ काम को बेहतर दिशा देने का प्रयत्न करेंगे। इस माह में आपका भाग्य भी अच्छा साथ देगा परंतु भागदौड़ की स्थितियाँ ज्यादा बन सकती हैं। आपको इस माह में कुछ यात्रा ज्यादा करना पड़ सकता है। जिससे आपकी शारीरिक तथा मानसिक परेशानियां बढ़ सकती हैं। यदि आप व्यवसाय करते हैं तो व्यावसायिक दृष्टि से तनाव का माहौल बन सकता है।



विस्तार से पढ़ने के लिए क्लिक करें - **मकर राशि**

कुंभ राशि

सारांश :- आप आमतौर पर गंभीर प्रवृत्ति के व्यक्ति होते हैं। जो किसी भी कार्य को स्थिरता और गंभीरता पूर्वक करने का प्रयत्न करते हैं। जिससे आपके लिए कामयाबी प्राप्त होने की संभावना अच्छी बन जाती है। चूँकि इस माह शनि धनु राशि में विराजमान है इसलिए विश्वास के साथ किए गए कार्य से आप अच्छी सफलता प्राप्त कर पाएंगे। इस दौरान आप जिस किसी भी कार्य व्यवसाय में होंगे उस कार्य व्यवसाय से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होने का योग बन रहा है। इस माह में भाग्य आपका अच्छा साथ देगा तथा समय के अनुसार अच्छी सफलता प्राप्त होगी। इस माह में कुछ यात्रा करनी पड़ सकती है,



विस्तार से पढ़ने के लिए क्लिक करें - **कुंभ राशि**

मीन राशि

सारांश :- इस माह में आपके लिए बेवजह की परेशानियां बढ़ने की संभावना बन रही हैं। किसी भी कार्य को करने के लिए आत्मविश्वास की कमी हो सकती है। आप कनफ्यूजन में रहने के कारण ठोस निर्णय लेने में असफल रह सकते हैं इसलिए आपको स्थिरता और गंभीरता पूर्वक सोच विचार कर किसी कार्य को करना तथा ठोस निर्णय लेने का प्रयत्न करना आपके लिए सबसे कारगर रहेगा और इससे ही आपको कामयाबी अच्छी प्राप्त हो पाएंगी। इस माह में धन अचल संपत्ति प्राप्ति का योग अच्छा बन रहा है तथा सगे-संबंधियों से संबंध भी सामान्यतः अच्छे रहेंगे धन संचय करने का प्रयास सफल हो सकता है। इसलिए समय के अनुसार उसका लाभ लेना आप के लिए अच्छा हो सकता है। यदि आप नौकरी करते हैं तो इस माह में पद पोजीशन प्राप्त होने की संभावना अच्छी बन रही हैं।



विस्तार से पढ़ने के लिए क्लिक करें - **मीन राशि**

नाम के अक्षर से जानें भविष्यफल 2020



A हमारा यह राशिफल उन जातकों के लिए है जिनके नाम का पहला अक्षर अंग्रेजी के A अक्षर से शुरू होता है। चालिड्यन न्यूमरोलॉजी के आधार पर “A” लेटर पहले नंबर के स्थान पर आता है और 1 नंबर न्यूमरोलॉजी में सूर्य का होता है। इसका मतलब यह हुआ है कि “A” लेटर वाले लोगों को वर्ष 2020 में सूर्य के योग और प्रतियोग से भिन्न-भिन्न प्रकार के फल मिलेंगे। आइए बारी-बारी से जानते हैं वर्ष 2020 में कैसा रहेगा आपका जीवन।

करियर और व्यवसाय

आपको अपने काम में सबसे ज़रूरी होगा कि बॉस या सीनियर से बिल्कुल भी ना उलझें। अपने काम को वक़्त पर पूरा करें और जूनियर्स के साथ को-ऑपरेटिव नेचर रखें ताकि आपका सूर्य बलि अवस्था में बना रहे। साथ में आपको व्यर्थ के सुझाव देने से बचने की भी आवश्यकता है। आपको नौकरी में नई उपलब्धियाँ और बिज़नेस में नए प्रोजेक्ट्स मिलेंगे।

वैवाहिक जीवन

आपको अपने लाइफ पार्टनर के साथ पारदर्शिता रखना बहुत ज़रूरी है और आपको यह समझना भी ज़रूरी होगा कि आपके जीवनसाथी की भी अपनी मंशा और अभिलाषा है। पार्टनर से कुछ भी जबरन कराने से बचना होगा। प्यार और परवाह से आप आपने दाम्पत्य जीवन को सुखी और अच्छा बनाएंगे। आपके जीवन में संतान सुख की भी सम्भावना है...

विस्तार से पढ़ने के लिए [क्लिक करें](#)

B हमारा यह राशिफल उन जातकों के लिए है जिनके नाम का पहला अक्षर अंग्रेजी के B अक्षर से शुरू होता है। आइए जानते हैं राशिफल 2020 के अनुसार B नाम वाले लोगों के लिए वर्ष 2020 कैसा रहेगा। चालिड्यन न्यूमरोलॉजी के आधार पर “B” लेटर दूसरे नंबर के स्थान पर आता है और 2 नंबर अंक ज्योतिष में चंद्र ग्रह का होता है। इसका मतलब यह हुआ है कि “B” लेटर वाले लोगों के जीवन पर 2020 में चंद्र ग्रह का भिन्न-भिन्न रूप में प्रभाव पड़ेगा। चलिए तो बारी-बारी से डालते हैं उन प्रभावों पर एक नज़र...

करियर और व्यवसाय

आपको अपने काम और व्यवसाय में इमोशनल होने की बजाय प्रोफेशनलिज्म को महत्व देना होगा। आपको हर काम को दिमाग से करना होगा क्योंकि दिल से किया हुआ काम आपको किसी तरह का दुःख दे सकता है इसलिए एक दम प्रैक्टिकल होकर काम करें। नौकरी में मनचाही जगह पर स्थान परिवर्तन होने की संभावना है। आपको अपने बॉस से सराहना भी मिलेगी बस आपको इस सराहना के बाद भी अपने काम को उसी निष्ठा और तेज़ी से करना होगा। तभी आपको पूरे साल सफलता मिलेगी। पैसों के लेन देन से बचें और अपने काम से काम रखें। किसी से फ़िजूल में पर्सनल होने से आपको बचना होगा।

वैवाहिक जीवन

आपको अपने जीवनसाथी से हर तरह की मदद और सहायता मिलेगी...

विस्तार से पढ़ने के लिए [क्लिक करें](#)

C

हमारा यह राशिफल उन जातकों के लिए है जिनके नाम का पहला अक्षर अंग्रेजी के C अक्षर से शुरू होता है। चालिड्यन न्यूमरोलॉजी के आधार पर “C” लेटर तीसरे नंबर के स्थान पर आता है और 3 नंबर न्यूमरॉलजी में बृहस्पति (गुरु) का होता है। इसका मतलब यह हुआ हुआ कि “C” लेटर वाले लोगों के ऊपर 2020 में गुरु के योग और प्रतियोग का असर भिन्न-भिन्न रूप में दिखाई पड़ेगा। आइए जानते हैं वर्ष 2020 आपके लिए कैसा रहने वाला है।

करियर और व्यवसाय

आपको अपने काम और व्यवसाय में काफी ऊँचाइयाँ देखने को मिलेंगी। आपके कार्यक्षेत्र में आपको हर जगह सफलता मिलती जाएगी। नई जॉब के लिए बहुत सारे अवसर आपको प्राप्त होंगे और अपनी समझदारी से आप इन अवसरों का लाभ उठाने में सक्षम होंगे। आप अगर बिजनेस करते हैं तो आपको व्यापार के लिए अच्छे क्लाइंट्स मिलेंगे और मुनाफे में भी अच्छी बढ़ोतरी देखने को मिलेगी। काम के सिलसिले से की गई लम्बी दूरी की यात्रा से आपको लाभ मिलेगा जिससे आपके स्टेटस और रेपुटेशन में इजाफा होगा। आपको इस वर्ष सही तरीके से अपने कार्य को करने की जरूरत है।

वैवाहिक जीवन

आपको अपने पार्टनर से इस वर्ष काफी लाभ मिलेगा। क्योंकि इस वर्ष लाइफ पार्टनर की वजह से आप कई जगहों पर अपना स्वामित्व स्थापित कर पाने में सफल होंगे। आप दोनों के बीच जो भी मतभेद पैदा हुए थे पिछले साल वह सब धीरे-धीरे दूर होते नज़र आएंगे। आपके जीवन में एक सात्त्विकता आएगी जिस वजह से आपको यह एहसास होगा की आपकी जोड़ी सही इंसान से बनी है। आपको आपने वैवाहिक जीवन को और अच्छा बनाने के लिए जीवनसाथी का आदर सम्मान करना पड़ेगा...

विस्तार से पढ़ने के लिए [क्लिक करें](#)

D

हमारा यह राशिफल उन जातकों के लिए है जिनके नाम का पहला अक्षर अंग्रेजी के D अक्षर से शुरू होता है। चालिड्यन न्यूमरोलॉजी के आधार पर “D” लेटर चौथे नंबर के स्थान पर आता है और अंक ज्योतिष में 4 नंबर राहु का होता है, यानि इसका मतलब यह हुआ है कि “D” लेटर वाले लोगों के ऊपर 2020 में राहु ग्रह का सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव देखने को मिलेगा। आइए जानते हैं आपके लिए वर्ष 2020 कैसा रहेगा।

करियर और व्यवसाय

आपके लिए यह साल शानदार रहने वाला है। आपके लिए तरक्की के नये मार्ग खुलेंगे। जिस पर आपको आगे बढ़ते जाना है। आपको इस वर्ष बॉस से काफ़ी सपोर्ट मिलेगा। आपके असपास के लोग भी आपसे काफ़ी खुश रहेंगे और आपके मान-सम्मान में वृद्धि होगी। अगर आप अपने काम के सिलसिले से विदेश जाना चाहते हैं यह वर्ष सबसे उत्तम साबित होगा। यह यात्रा आपके लिए बहुत लाभकारी सिद्ध होगी। साथ ही अगर आप किसी तरह का साइड बिजनेस भी शुरू करना चाहते हैं तो आपके लिए यह वर्ष सोने पर सुहागा जैसा रहेगा। इस वर्ष आप अपनी इच्छा को पूरा कर पाने में सक्षम होंगे। यह वर्ष आपको बहुत संतुष्टि प्रदान करेगा जिससे आप अपने फ्यूचर के लिए अच्छी अच्छी योजनाएँ बना पाएंगे।

वैवाहिक जीवन

इस साल आपका वैवाहिक जीवन काफ़ी बेहतरीन रहने वाला है क्योंकि आपका साथी आप पर समर्पित रहेगा। आपकी हर आदत हर बात आपके साथी को पसंद आने वाली है पर इसके साथ आपका भी यह दायित्व बनता है की आप भी कुछ गलत कम ना करें। आपका जीवनसाथी आपको इस वर्ष कुछ नायाब तोहफा देगा जिसका आपको लंबे समय से इंतज़ार था। वैवाहिक जीवन के अच्छा होने से संतान के जीवन में खुशियाँ आएंगी...

विस्तार से पढ़ने के लिए [क्लिक करें](#)

नाम के अक्षर से जानें भविष्यफल

E

हमारा यह राशिफल उन जातकों के लिए है जिनके नाम का पहला अक्षर अंग्रेजी के E अक्षर से शुरू होता है। चालिड्यन न्यूमरोलॉजी के आधार पर “E” लेटर पाँच नंबर के स्थान पर आता है। अंक ज्योतिष में 5 नंबर बुध (Mercury) का होता है अर्थात इस वर्ष “E” लेटर वाले लोगों को बुध के योग और प्रतियोग से ही भिन्न भिन्न प्रकार के फल मिलेंगे। आइए उन फलों पर बारी-बारी से डालते हैं एक नज़र...

करियर और व्यवसाय

इस वर्ष आपके करियर में काफ़ी तेज़ी आने वाली है। अगर आप नौकरी में हैं तो नौकरी में तरक्की के अच्छे योग बनेंगे और अगर बिजनेस में हैं तो आपको व्यापार में अच्छे क्लाइंट्स मिलने की संभावना है। आपके लिए यह साल हर तरह से फायदेमंद साबित होगा। अगर आप किसी को ब्याज पर पैसा देना चाहते हैं तो आपके लिए अच्छा होगा। वहीं अगर कोई लोन लेना चाहते हो तो वो आसानी से मिल जाएगा। इस वर्ष आपके विदेश जाने की भी संभावना है जिस वजह से आपके स्टेट्स में इजाफा होगा। यदि पार्टनरशिप में नया काम करना चाह रहे हैं तो आपके लिए यह साल बेहतरीन रहने वाला है। बॉस से इस वर्ष आपको कुछ ज्यादा प्रशंसा मिलेगी इसलिए आपको अपने काम के प्रति लगाव और ईमानदारी रखना बहुत ज़रूरी है। कॉन्फिडेन्स रखें पर ओवर कॉन्फिडेन्स में कोई भी निर्णय ना लें।

वैवाहिक जीवन

इस वर्ष आपका वैवाहिक जीवन सामान्य रहेगा। आपको लाइफ पार्टनर पर किसी तरह का शक हो सकता है जो आपके रिश्ते को कमज़ोर कर सकता है इसलिए बिना जाने शक ना करें और खुलकर अपनी बात करें। जीवनसाथी के साथ लंबी दूरी की यात्रा पर जाना हो सकता है...

विस्तार से पढ़ने के लिए [क्लिक करें](#)

F

हमारा यह राशिफल उन जातकों के लिए है जिनके नाम का पहला अक्षर अंग्रेजी के F अक्षर से शुरू होता है। चालिड्यन न्यूमरोलॉजी के आधार पर “F” लेटर आठवें स्थान पर आता है। 8 नंबर न्यूमरोलॉजी में शनि का होता है। कहने का तात्पर्य यह हुआ कि “F” लेटर वाले लोगों के जीवन पर साल 2020 में शनि के योग प्रतियोग का असर भिन्न भिन्न रूप में पड़ सकता है। आइए जानते हैं F नाम वालों फलादेश 2020 क्या कहता है।

करियर और व्यवसाय

वर्ष 2020 आपके प्रोफेशनल लाइफ के लिए काफ़ी अच्छा रहेगा। मनचाहा प्रॉजेक्ट और स्टेट्स मिलने की संभावना है। अगर आप किसी विशेष जगह पर ट्रांसफर लेना चाहते हैं तो इस वर्ष आपकी यह मंशा भी पूरी हो जाएगी। कार्य स्थल पर महिला कर्मचारी आपके लिए लाभकारी सिद्ध होंगी। इसलिए उनके साथ अच्छे संबंधों को बनाकर चलें। इसके साथ आपको आपकी मनपसंद की कंपनी में जॉब मिलने की संभावना है। व्यापार में आपको काफ़ी फायदा होगा, नए-नए कॉन्ट्रैक्ट आएंगे। व्यापार के सिलसिले से विदेश यात्रा पर भी जाना पड़ सकता है। अपने कम को और बढ़ाने के लिए आपको इस वर्ष अच्छी फंडिंग भी मिल जाएगी इसलिए अपना प्रयास जारी रखें।

वैवाहिक जीवन

इस वर्ष आपका वैवाहिक जीवन खुशहाल बीतेगा। जीवनसाथी से प्यार मिलता रहेगा और वह आपके प्रति पूरी तरह से समर्पित रहेगा। साथ ही वह आपको पूरा सपोर्ट भी करेगा। जिसकी वजह से आपको इस वर्ष काफ़ी अच्छा महसूस होगा। संतान सुख मिलने के प्रबल योग हैं। आपके दांपत्य जीवन में खूबसूरती बढ़ेगी। अगर संतान पहले से है तो वह संतान भी आपको बहुत सुख देगी। दांपत्य जीवन के लिए यह साल काफ़ी लकी साबित होगा...

विस्तार से पढ़ने के लिए [क्लिक करें](#)

G

हमारा यह राशिफल उन जातकों के लिए है जिनके नाम का पहला अक्षर अंग्रेजी के G अक्षर से शुरू होता है। आज हम आपको बताएंगे कि राशिफल 2020 के अनुसार D नाम वाले लोगों के लिए वर्ष 2020 कैसा रहेगा। चालिड्यन न्यूमरोलॉजी के आधार पर “G” अक्षर तीसरे नंबर के स्थान पर आता है। 3 नंबर न्यूमरॉलजी में बृहस्पति का होता है। जिसका मतलब यह हुआ कि “G” लेटर वाले लोगों को वर्ष 2020 में बृहस्पति के योग और प्रतियोग से ही भिन्न-भिन्न तरह के फल मिलेंगे। आइये अब जानते हैं साल 2020 आपके लिए कैसा रहने वाला है।

करियर और व्यवसाय

आपके लिए यह वर्ष करियर के क्षेत्र में थोड़ा रुकावटों भरा रह सकता है। इस वर्ष में आपको अपने काम को सही टाइम पर पूरा करने से ही फायदा होगा अगर आप ऐसा नहीं करेंगे तो आपको नुकसान हो सकता है। नौकरी में अच्छे प्रोजेक्ट मिलने से आपका काम बढ़ सकता है, इस दौरान ऑफिस में आपकी काफी पूछ होगी। अगर आप बिजनेस करते हैं तो आपको अपने क्लाइंट्स से अच्छे फीडबैक मिलेंगे, जिसके बाद आपका बिजनेस और तेज़ी से आगे बढ़ेगा। इस साल कोई भी नया काम अपने नाम में शुरू करने से बचें। आप अपनी बीवी या माता जी के नाम पर नया काम शुरू कर सकते हैं। सरकारी नौकरी वालों को प्रमोशन मिल सकता है। इस साल आपके सीनियर्स और जूनियर्स दोनों ही आपका सहयोग करेंगे।

वैवाहिक जीवन

आपकी शादीशुदा जिंदगी इस वर्ष काफी सुखद रहने वाली है। आपका साथी भी आपको इस साल दिल से चाहेगा और हर काम में आपका हाथ बटाएगा। दांपत्य जीवन में हर गिला-शिकवा इस साल दूर हो जाएगा और आप अपने संगी के साथ खुलकर बात करोगे...

विस्तार से पढ़ने के लिए [क्लिक करें](#)

H

हमारा यह राशिफल उन जातकों के लिए है जिनके नाम का पहला अक्षर अंग्रेजी के H अक्षर से शुरू होता है। राशिफल 2020 के अनुसार H नाम वाले लोगों के लिए वर्ष 2020 कैसा रहेगा यह हम आज आपको बताएंगे। चालिड्यन न्यूमरोलॉजी के आधार पे “H” लेटर पांच नंबर के स्थान पर आता है। पांच नंबर न्यूमरॉलजी में बुध का होता है। इसका मतलब यह हुआ है कि “H” लेटर वाले लोगों के लिए 2020 में बुध के योग और प्रतियोग से ही भिन्न भिन्न तरह के फल मिलेंगे। आइये अब जानते हैं कि साल 2020 आपके लिए कैसा रहने वाला है।

करियर और व्यवसाय

आपके लिए करियर क्षेत्र इस साल काफी सरल और अच्छा रहने वाला है। यानि कि आपको नौकरी में या बिजनेस में ज्यादा दिक्षितों इस साल देखने को नहीं मिलेंगी। कोई नया प्रॉजेक्ट आपको सुदूर यात्रा करवा सकता है यह स्थान विदेश भी हो सकता है। आपके बिजनेस में आप किसी को पार्टनर बना सकते हैं और इसकी वजह से आपको बिजनेस में फायदा हो सकता है। किसी साथ के कर्मचारी के साथ अनबन की वजह से आप नौकरी बदलने का मन बना सकते हैं जॉब छोड़ने का यह फैसला आपके लिए मुश्किल होगा लेकिन बेहतर जॉब मिलने की पूरी संभावना है। कार्यक्षेत्र में अपनी अच्छी पकड़ बनाने के लिए आपको दिनचर्या को सुधारने की जरूरत है, समय पर ऑफिस आकर आप अपने वरिष्ठों को प्रसन्न कर सकते हैं। कोई महिला कर्मचारी कार्यक्षेत्र में इस साल आपकी मदद कर सकती है।

वैवाहिक जीवन

आपके लिए शादीशुदा जिंदगी इस साल अच्छी रहने वाली है क्योंकि आपके और आपके जीवनसाथी के बीच इस साल भावनाओं का खूब आदान-प्रदान होगा...

विस्तार से पढ़ने के लिए [क्लिक करें](#)

नाम के अक्षर से जानें भविष्यफल

हमारा यह राशिफल उन जातकों के लिए है जिनके नाम का पहला अक्षर अंग्रेजी के J अक्षर से शुरू होता है। हम जानते हैं कि राशिफल 2020 के अनुसार। नाम वाले लोगों के लिए वर्ष 2020 कैसा रहेगा। चाल्डियन न्यूमरोलॉजी के आधार पर “I” लेटर पहले नंबर के स्थान पर आता है। 1 नंबर न्यूमरोलॉजी में सूर्य का होता है। इसका मतलब यह हुआ है कि “I” लेटर वाले लोगों के लिए 2020 में सूर्य के योग और प्रतियोग से ही भिन्न-भिन्न तरह के फल मिलेंगे। तो जानते हैं कैसा रहेगा। नाम वालों के लिए साल 2020।

करियर और व्यवसाय

इस वर्ष आपके लिए करियर और व्यवसाय में उछाल देखने को मिलेगा। आपके संबंध समाज के गणमान्य लोगों से बनेंगे। राजनीति से जुड़े लोगों के साथ आपके अच्छे संबंध इस साल बन सकते हैं। सरकारी नौकरी मिलने का भी योग भी इस साल बन रहा है यह नौकरी आपकी कई परेशानियों को दूर कर देगी। कारोबारियों को इस साल अच्छी फंडिंग मिलेगी जिससे उनके कारोबार में काफी बढ़ोतरी होगी। प्राइवेट सेक्टर में काम करने वाले लोगों को इस साल विदेश जाने का मौका मिल सकता है। समाज में इस साल आपका रुतबा बढ़ेगा। कार्यक्षेत्र में अपने सीनियर या बॉस के साथ बहस न करें नहीं तो बुरे परिणाम मिल सकते हैं। याद रखें विनम्रता ही आपको समाज में अच्छी पहचान दिलाती है।

वैवाहिक जीवन

शादीशुदा जिंदगी में उतार चढ़ाव आ सकते हैं इसलिए इस साल बहुत सोच समझकर चलने की आपको जरूरत है। ऐसे कई मौके आएंगे जब अपने साथी के साथ आप बहस करेंगे और आपका धैर्य भी जवाब दे जाएगा। हालांकि आपको यहीं सलाह दी जाती है कि पहले तो बहस की स्थिति से बचें और यदि बहस हो ही गई तो ऐसी बात बोलने से बचें...

विस्तार से पढ़ने के लिए [क्लिक करें](#)

J

हमारा यह राशिफल उन जातकों के लिए है जिनके नाम का पहला अक्षर अंग्रेजी के J अक्षर से शुरू होता है। हम आपको बताएंगे कि राशिफल 2020 के अनुसार J नाम वाले लोगों के लिए वर्ष 2020 कैसा रहेगा। चाल्डियन न्यूमरोलॉजी के आधार पे “J” लेटर पहले नंबर के स्थान पर आता है। 1 नंबर न्यूमरोलॉजी में सूर्य का होता है। जिसका मतलब यह हुआ है कि “J” लेटर वाले लोगों को साल 2020 में सूर्य के योग और प्रतियोग से ही अलग-अलग तरह के फल मिलेंगे। तो आईये जानते हैं कैसा रहेगा “J” अक्षर वाले लोगों के लिए साल 2020।

करियर और व्यवसाय

इस वर्ष कार्यक्षेत्र में तरक्की के आपको कई अवसर प्राप्त होंगे। आपको इन अवसरों को भुनाने के लिए अपने दिमाग को खुला रखना होगा। इस वर्ष आपका बॉस या सीनियर आपका नाम विदेश से जुड़े किसी प्रॉजेक्ट में दे सकता है जिसकी वजह से आपकी विदेश यात्रा संभव है। इस साल आप अपने काम से अपना नाम बना पाने में सक्षम होंगे। अपने सहकर्मियों के साथ झूठ बोलने से इस दौरान बचें क्योंकि झूठ पकड़े जाने पर आपकी किरकिरी हो सकती है। कुछ लोगों के लिए नयी जॉब के अवसर भी इस दौरान बनेंगे। जून के बाद जॉब चेंज करने के लिए अच्छा समय है। आप चाहे नौकरी पेशा हों या व्यापारी इस साल आपको अपने गुस्से पर काबू रखने की जरूरत है नहीं तो आपके बने बनाये काम बिगड़ सकते हैं।

वैवाहिक जीवन

इस साल आपके दांपत्य जीवन में काफी खुशहाली रहने वाली है। यानि कि इस साल वैवाहिक जीवन में आपको काफी सुकून मिलेगा। आपका पार्टनर आपकी बात को दिल से सुनेगा और मानेगा भी। अगर जीवनसाथी के साथ कोई मनमुटाव की स्थिति बनी हुई थी...

विस्तार से पढ़ने के लिए [क्लिक करें](#)



हमारा यह राशिफल उन जातकों के लिए है जिनके नाम का पहला अक्षर अंग्रेजी के K अक्षर से शुरू होता है। हम आपको बताएंगे कि राशिफल 2020 के अनुसार K नाम वाले लोगों के लिए वर्ष 2020 कैसा रहेगा। चालिंयन न्यूमरोलॉजी के आधार पर “K” लेटर दूसरे नंबर के स्थान पर आता है। 2 नंबर न्यूमरोलॉजी में चंद्र का होता है। इसका मतलब यह हुआ है कि “K” लेटर वाले लोगों के लिए 2020 में चंद्र के योग और प्रतियोग से ही भिन्न-भिन्न तरह के फल मिलेंगे। तो आईये जानते हैं कैसा रहने वाला है साल 2020 “K” अक्षर के लोगों के लिए।



हमारा यह राशिफल उन जातकों के लिए है जिनके नाम का पहला अक्षर अंग्रेजी के L अक्षर से शुरू होता है। हम आपको बताएंगे कि राशिफल 2020 के अनुसार L नाम वाले लोगों के लिए वर्ष 2020 कैसा रहेगा। चालिंयन न्यूमरोलॉजी के आधार पे “L” लेटर तीसरे नंबर के स्थान पर आता है 3 नंबर न्यूमरोलॉजी में बृहस्पति का होता है। जिसका मतलब यह हुआ है कि “L” लेटर वाले लोगों के लिए 2020 में गुरु के योग और प्रतियोग से ही भिन्न-भिन्न तरह के फल मिलेंगे। तो जानते हैं 2020 में क्या कहते हैं आपके सितारे।

करियर और व्यवसाय

आपके लिए यह वर्ष काफी बदलाव भरा रहेगा। आपको इस वर्ष महिलाओं का सहयोग प्राप्त होगा जिसके चलते कार्यक्षेत्र में आपको अच्छे फल मिलेंगे। यदि आप किसी दूसरी कंपनी में इंटरव्यू देकर आए थे तो आपको सकारात्मक परिणाम इस साल मिल सकते हैं। कारोबारियों के कारोबार में इजाफा होगा और आपको अच्छे क्लाइंट मिलेंगे। इस वर्ष यदि आप कोई नया काम शुरू करना चाहते हैं तो अपनी माता या जीवनसाथी के नाम पर शुरू करें। इससे आपको मुनाफा होगा। इस साल आपको नी जॉब के कई ऑफर मिल सकते हैं। सैलरी भी बढ़ेगी जिससे आर्थिक रूप से मजबूत होंगे। कार्यक्षेत्र में हद से ज्यादा किसी पर भी भरोसा करना आपके लिए धातक हो सकता है।

वैवाहिक जीवन

आपको इस वर्ष आपके वैवाहिक जीवन में काफी बदलाव देखने को मिलेंगे। आपके पार्टनर का मूड इस साल बात-बात पर बदलता रहेगा जिसके कारण आपके संबंधों में हलचल देखी जा सकती है। इस वर्ष आपके साथी के करियर में ट्रांसफर के भी चांस बन रहे हैं जिसकी वजह से आपको मानसिक पीड़ा का सामना करना पड़ सकता है...

विस्तार से पढ़ने के लिए [क्लिक करें](#)

करियर और व्यवसाय

इस साल करियर और कारोबार दोनों ही क्षेत्रों में आपको सफलता मिल सकती है। इस साल आप अपनी मेहनत और तीव्र बुद्धि के दम पर अच्छे अवसरों का खूब फायदा उठा पाएंगे। नौकरी के क्षेत्र में भी आप अच्छे फलों की प्राप्ति करेंगे। आपका बॉस आपके काम से खुश रहेगा इसलिए आपको इस साल प्रमोशन मिलने की भी संभावना है। कारोबारियों को भी कारोबार में इस साल मुनाफा होगा। हालांकि इस साल आपको फिजूलखर्ची से बचना चाहिए। नौकरी पेशा लोगों के सहकर्मी इस साल उनका पूरा साथ देंगे।

वैवाहिक जीवन

इस साल आपको दांपत्य जीवन में हर्ष और उल्लास देखेने को मिलेगा। जीवन की सारी मुश्किलें आपको दूर जाती दिखेंगी जिसके कारण आप बहुत खुश होंगे। आपका जीवनसाथी आपको लेकर थोड़ा पोसेसिव हो सकता है लेकिन आप उनके व्यवहार को जानते हुए उनके साथ डिल कर सकते हैं। इस साल आप अपने साथी के साथ घूमने फिरने भी जा सकते हैं...

विस्तार से पढ़ने के लिए [क्लिक करें](#)

नाम के अक्षर से जानें भविष्यफल

M

हमारा यह राशिफल उन जातकों के लिए है जिनके नाम का पहला अक्षर अंग्रेजी के M अक्षर से शुरू होता है। हम आपको बताएंगे कि राशिफल 2020 के अनुसार M अक्षर से शुरू होने वाले नाम वाले लोगों के लिए वर्ष 2020 कैसा रहेगा।

चाल्डियन न्यूमरोलॉजी के आधार पर “M” लेटर चौथे नंबर के स्थान पे आता है। 4 नंबर न्यूमरोलॉजी में राहु का होता है। जिसका मतलब यह हुआ है कि “M” लेटर वाले लोगों के लिए 2020 में राहु के योग और प्रतियोग से ही भिन्न-भिन्न तरह के फल मिलेंगे।

करियर और व्यवसाय

आपको अपने काम और व्यवसाय में काफी उथल-पुथल देखने को मिलेगी। आपके कार्यक्षेत्र में आपको हर जगह कोई न कोई रुकावट या कमी देखने को इस साल मिल सकती है। आपके लिए नई जॉब के बहुत सारे अवसर भी इस साल खुल सकते हैं। हालांकि इन अवसरों में आपके असफल होने की भी संभावना है। कारोबारियों को व्यापार के लिए इस साल अच्छे क्लाइंट मिल सकते हैं लेकिन इनके साथ डील करने के लिए आपको अच्छी योजना बनानी होगी। विदेश यात्रा से आपके कार्य में काफी बढ़ोत्तरी होगी जिससे आपके स्टेटस में भी अच्छा खासा इजाफा देखने को मिलेगा। आपको इस वर्ष कोई भी शार्टकट अपनाने से बचना होगा अन्यथा आपको काफी नुकसान उठाना पड़ सकता है।

वैवाहिक जीवन

आपको अपने पार्टनर से इस वर्ष कभी बहुत ज्यादा प्यार मिलेगा तो कभी आपको उनके गुस्से का शिकार भी होना पड़ सकता है। इसलिए आपको धैर्य रखने की बहुत ज़रूरत है। आपको अपनी हर बात को अपने साथी से शेयर करना चाहिए नहीं तो इस साल आपके वैवाहिक जीवन में दिक्षितें आ सकती हैं...

विस्तार से पढ़ने के लिए [क्लिक करें](#)

N

हमारा यह राशिफल उन जातकों के लिए है जिनके नाम का पहला अक्षर अंग्रेजी के N अक्षर से शुरू होता है। हम जानते हैं कि राशिफल 2020 के अनुसार N नाम वाले लोगों के लिए वर्ष 2020 कैसा रहेगा।

चाल्डियन न्यूमरोलॉजी के आधार पर “N” लेटर पांचवे नंबर के स्थान पर आता है। और 5 नंबर न्यूमरोलॉजी में बुध का होता है जिसका मतलब यह हुआ है कि “N” लेटर वाले लोगों के लिए 2020 में बुध के योग और प्रतियोग से ही भिन्न-भिन्न तरह के फल मिलेंगे।

आइए चलते हैं और जानते हैं आपके आने वाले वर्ष में कैसा रहेगा आपका जीवन

करियर और व्यवसाय

इस साल आपको अपने काम और व्यवसाय में काफी तेज़ी देखने को मिलेगी। यह इसलिए की बुध ग्रह एक तेज़ चलने वाला ग्रह है। आपके कार्यक्षेत्र में जो धीमी गति पीछे कुछ समय से चल रही है वह अब तेज़ रफ़्तार पकड़ लेगी। आपके लिए नई जॉब के लिए कॉल्स भी इस साल आ सकते हैं। आपको अपने कार्यस्थल पर लोगों का अच्छा साथ मिलेगा। आप अपने विचारों और योजनाओं को अच्छी तरह से लोगों के बीच रख पाएंगे। आपको अपने प्रमोशन से पहले कई ऑफिसियल दूर करने पड़ेंगे। इस साल फायदा आपको हर मासले में होगा।

वैवाहिक जीवन

आपके लिए अपने पार्टनर से इस वर्ष ढेर सारी बातें शेयर करना अच्छा और लाभकारी रहेगा। आपके जीवन में संतान सुख के अच्छे योग हैं और अगर संतान है तो आपकी संतान को किसी तरह की उपलब्धि मिलने के पूरे आसार हैं जिस से आपका सर गर्व से ऊँचा हो जायेगा...

विस्तार से पढ़ने के लिए [क्लिक करें](#)



हमारा यह राशिफल उन जातकों के लिए है जिनके नाम का पहला अक्षर अंग्रेजी के O अक्षर से शुरू होता है। हम आपको वार्षिक राशिफल 2020 के अनुसार O नाम वाले लोगों के लिए वर्ष 2020 कैसा रहेगा इसके बारे में विस्तृत तरीके से बताएंगे।

चाल्डियन न्यूमरोलॉजी के आधार पे “O” लेटर सातवें नंबर के स्थान पे आता है। और 7 नंबर न्यूमरॉलजी में केतु का होता है। जिसका मतलब यह हुआ है की “O” लेटर वाले लोगों के लिए 2020 में केतु के योग और प्रतियोग से ही भिन्न भिन्न तरह के फल मिलेंगे। आइए जानते हैं आने वाले वर्ष 2020 में कैसा रहेगा आपका जीवन

करियर और व्यवसाय

आपके लिए इस वर्ष करियर में काफी दिक्षतें आने वाली हैं इसलिए इस चीज़ के लिए तैयार रहें। आपकी नौकरी में या तो कोई प्रॉजेक्ट ख़त्म हो जाएगा जिसकी वजह से दूसरी नौकरी ढूँढ़नी पड़ेगी या फिर आपका कोई मतभेद कर्मचारियों से हो जाएगा जिसकी वजह से नौकरी को छोड़ना पड़ेगा। यानि कि आपको इस वर्ष बहुत ध्यान से चलना होगा। आपका साथी जो आपका काफी करीब है वही आपकी चुगली करेगा जिसकी वजह से आपके बॉस को आप पर भरोसा कम हो जाएगा और दिक्षतें शुरू हो जाएँगी। इसलिए बहुत ध्यान से अपने राज़ों को शेयर करें। इस वर्ष यदि ऑफिस की तरफ से विदेश जाने का प्लान बना रहे थे तो किसी वजह से यह ट्रिप कैंसल हो सकती है। हालांकि इस वर्ष किसी तरह का ऐसा मौका आएगा जिसकी वजह से आप अपना काम शुरू करेंगे और जीवन में आगे बढ़ेंगे। बिजनेस करने वाले लोगों को इस वर्ष उधार लेकर कोई भी काम नहीं करना चाहिए, अगर आप ऐसा करते हैं तो किसी बड़ी परेशानी में पड़ सकते हैं। पार्टनरशिप में बिजनेस करते हैं...

विस्तार से पढ़ने के लिए [क्लिक करें](#)



हमारा यह राशिफल उन जातकों के लिए है जिनके नाम का पहला अक्षर अंग्रेजी के P अक्षर से शुरू होता है। तो आईये हम आपको बताते हैं कि राशिफल 2020 के अनुसार P नाम वाले लोगों के लिए वर्ष 2020 कैसा रहेगा।

चाल्डियन न्यूमरोलॉजी के आधार पर “P” लेटर आठवें नंबर के स्थान पर आता है। और 8 नंबर न्यूमरॉलजी में शनि का होता है। इसका मतलब यह हुआ है कि “P” लेटर वाले लोगों के लिए 2020 में शनि के योग और प्रतियोग से ही भिन्न भिन्न तरह के फल मिलेंगे। आइए जानते हैं आपके आने वाले वर्ष में कैसा रहेगा आपका जीवन

करियर और व्यवसाय

आपको अपने काम और व्यवसाय में काफी अड़चने देखने को मिलेंगी। आपके कार्यक्षेत्र में आपको हर जगह कोई न कोई देरी देखने को मिलती जाएगी। आपके लिए ज़रूरी होगा कि आप अपने साथियों के साथ मिलजुल कर काम करें। किसी जूनियर को ज्यादा काम के लिए मज़बूर न करें। अपने सीनियर से ज्यादा से ज्यादा प्रोजेक्ट की बातें शेयर करें ताकि बाद में कोई बात आप पर न आये। ऑफिस के काम के लिए सफर फायदेमंद रहेगा इसलिए सफर के लिए तैयार रहें। हो सके तो ऑफिस में काम करने वाले सफाई कर्मचारी को किसी तरह की मदद ज़रूर दें इस से शनि देव आप पर विशेष कृपा बरसाएँगे।

वैवाहिक जीवन

आपको अपने पार्टनर से इस वर्ष अच्छी बॉन्डिंग बनाने का पूरा मौका मिलेगा। इस साल आपको अपने इन लॉज़ से कुछ दिक्षत हो सकती हैं पर आपकी वह दिक्षत आपका पार्टनर संभाल लेगा जिस से आपको आपने पार्टनर पर प्यार आएगा...

विस्तार से पढ़ने के लिए [क्लिक करें](#)

नाम के अक्षर से जानें भविष्यफल

Q

हमारा यह राशिफल उन जातकों के लिए है जिनके नाम का पहला अक्षर अंग्रेजी के Q अक्षर से शुरू होता है। राशिफल 2020 के अनुसार Q नाम वाले लोगों के लिए वर्ष 2020 कैसा रहेगा यह हम आज आपको विस्तार से बताएंगे।

चाल्डियन न्यूमरोलॉजी के आधार पर “Q” लेटर पहले नंबर के स्थान पर आता है। और 1 नंबर न्यूमरॉलजी में सूर्य का होता है। जिसका मतलब यह हुआ है कि “Q” लेटर वाले लोगों के लिए 2020 में सूर्य के योग और प्रतियोग से ही भिन्न-भिन्न तरह के फल मिलेंगे। आइए अब जानते हैं आपके आने वाले वर्ष में कैसा रहेगा आपका जीवन

करियर और व्यवसाय

आपके लिए यह साल काफी तेज़ रहने वाला है करियर के मामले में। इस वर्ष आपको मान चाही पोस्ट या कहलो ओहदा मिलेगा। आपके ऑफीस में आपके काम को सरया जाएगा जिसकी वजह से भी आपको रेप्युटेशन में बढ़ोत्तरी मिलेगी। किसी से कर्मी की वजह से आपको नया प्रॉजेक्ट मिल जाएगा जो की आपके आगे की तरकी के लिए बहुत माहत्त्वपूरण होगा। आपका बॉस आपके काम पर इस वर्ष नज़र गाड़ा के रखेगा इसलिए आपको आपने काम को समय से पूरा करना होगा। ऐसा करने से आपकी इमेज और अच्छी होगी बॉस के सामने। व्यापार में आपको इस वर्ष अच्छी डील्स आसानी से मिलेंगी यानी की आपको जयदा भाग दौड़ नहीं करनी पड़ेगी। आपके लिए मुनाफ़ा लेना बहुत है आसान होगा और आपको इस वर्ष विदेश से भी कुछ अच्छे कांट्रैक्ट मिलेंगे। आपके लिए इस वर्ष किसी तरह का लोन लेना भी अच्छा रहेगा क्यूंकि इस पैसे से आपको बिज़नेस बढ़ने में मदद मिलेगी और आपको आगे छलके तरकी मिलेगी।

वैवाहिक जीवन

आपके लिए दांपत्य जीवन थोड़ा उथल-पुथल भरा यह साल रह सकता है...

विस्तार से पढ़ने के लिए [क्लिक करें](#)

R

हमारा यह राशिफल उन जातकों के लिए है जिनके नाम का पहला अक्षर अंग्रेजी के R अक्षर से शुरू होता है। हम जानते हैं कि राशिफल 2020 के अनुसार R नाम वाले लोगों के लिए वर्ष 2020 कैसा रहेगा।

चाल्डियन न्यूमरोलॉजी के आधार पे “R” लेटर दूसरे नंबर के स्थान पर आता है। 2 नंबर न्यूमरॉलजी में चंद्र का होता है। जिसका मतलब यह हुआ है कि “R” लेटर वाले लोगों के लिए 2020 में चंद्र के योग और प्रतियोग से ही भिन्न-भिन्न तरह के फल मिलेंगे। आइए जानते हैं आपके आने वाले वर्ष में कैसा रहेगा आपका जीवन

करियर और व्यवसाय

इस साल आपको काम और कारोबार दोनों ही क्षेत्रों में अच्छे फल मिलने के आसार हैं। इस साल आपको कार्यक्षेत्र में मनचाहे परिणाम पाने के लिए बहुत ज्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। इस साल आपको अपने साथ काम करने वाली सभी महिला कर्मचारियों से थोड़ा तरीके से पेश आने की ज़रूरत होगी। अगर आप महिलाओं की इज्जत नहीं करेंगे तो आपकी छवि समाज में खराब हो सकती है। जो लोग काम में कामचोरी करते हैं उन्हें इस साल इसके बुरे परिणाम प्राप्त हो सकते हैं। अगर आप इस साल अपने सीनियर्स के साथ अच्छा व्यवहार करते हैं और अपने बॉस के द्वारा बताए गये कामों को समय पर पूरा करते हैं तो इस साल आपको अच्छे फल प्राप्त हो सकते हैं और जो लो अपनी पसंद की जगह पर ट्रांसफर चाहते हैं उनका ट्रांसफर भी इस साल हो सकता है।

वैवाहिक जीवन

आपको अपने पार्टनर से इस वर्ष थोड़ा करीबी बढ़ाने की ज़रूरत है। ऐसा इसलिए है कि आपके पार्टनर को इस साल ऐसा महसूस हो सकता है। कि आप उनकी परवाह नहीं करते हैं...

विस्तार से पढ़ने के लिए [क्लिक करें](#)



हमारा यह राशिफल उन जातकों के लिए है जिनके नाम का पहला अक्षर अंग्रेजी के S अक्षर से शुरू होता है। हम जानते हैं कि राशिफल 2020 के अनुसार S नाम वाले लोगों के लिए वर्ष 2020 कैसा रहेगा। चाल्डियन न्यूमरोलॉजी के आधार पर “S” लेटर तीसरे नंबर के स्थान पर आता है। 3 नंबर न्यूमरोलॉजी में बृहस्पति का होता है। इसका मतलब यह हुआ है कि “S” लेटर वाले लोगों को 2020 में बृहस्पति के योग और प्रतियोग से ही भिन्न-भिन्न तरह के फल मिलेंगे। आइये अब हम आपको बताते हैं कि आपके लिए साल 2020 कैसा रहने वाला है।



हमारा यह राशिफल उन जातकों के लिए है जिनके नाम का पहला अक्षर अंग्रेजी के T अक्षर से शुरू होता है। हम आज आपको बताएंगे कि राशिफल 2020 के अनुसार T नाम वाले लोगों के लिए वर्ष 2020 कैसा रहेगा। चाल्डियन न्यूमरोलॉजी के आधार पे “T” लेटर चौथे नंबर के स्थान पे आता है। 4 नंबर न्यूमरोलॉजी में राहु का होता है। इसका मतलब यह हुआ है कि “T” लेटर वाले लोगों के लिए 2020 में राहु के योग और प्रतियोग से ही भिन्न-भिन्न तरह के फल मिलेंगे। आइये अब हम आपको बताते हैं कि आपके लिए साल 2020 कैसा रहने वाला है।

करियर और व्यवसाय

आपको अपने काम और व्यवसाय में काफी बढ़ोत्तरी इस साल देखने को मिलेगी। यह इसलिए होगा क्योंकि गुरु ग्रह ग्रोथ और सक्सेस देने वाला ग्रह माना जाता है। आपके कार्य क्षेत्र में आपको साल की शुरुआत से ही ग्रोथ दिखनी शुरू हो जायेगी। आप अगर अपना व्यवसाय शुरू करना चाह रहे हैं तो नौकरी के साथ-साथ आप वह आराम से शुरू कर सकते हैं। आपके लिए विदेशी प्रोजेक्ट लेने और देने के लिए भी बहुत लाभकारी समय है। काम में जो दिक्षतें आपको पिछले साल आयी थीं वो इस साल दूर हो जाएंगी। कार्यक्षेत्र में आपको नरमी से पेश आना सीखना होगा। इस साल जुलाई का महीना नयी जॉब के लिहाज से आपके लिए अच्छा रहेगा।

वैवाहिक जीवन

आपका दांपत्य जीवन इस वर्ष काफी अच्छा रहेगा। आपको आपके पार्टनर से इस वर्ष विशेष प्यार और सहयोग मिलेगा। इस वर्ष हर जटिल लगने वाले मसले भी सुलझ जाएंगे। इस साल आप दोनों के बीच एक अलग सी बॉन्डिंग बन जाएगी जो शायद आपको ज़िन्दगी में पहली बार महसूस हो...

[विस्तार से पढ़ने के लिए क्लिक करें](#)

करियर और व्यवसाय

आपको अपने काम और व्यवसाय में काफी अनचाही रुकावटें और दिक्षतें देखने को मिलेंगी पर यह दिक्षतें आपकी मेहनत और परिश्रम के आगे टिकने वाली नहीं हैं। यह इसलिए होगा क्योंकि राहु ग्रह एक छाया ग्रह है और इस ग्रह के प्रभाव मेहनत के आगे फीके पड़ जाते हैं। इस वर्ष आपको बहुराष्ट्रीय कंपनियों से या फिर विदेशी प्रोजेक्ट्स से विशेष लाभ होगा क्योंकि राहु विदेश और बड़ी-बड़ी कम्पनियों का कारक ग्रह है। आपको बिज़नेस में भी काफी फायदा मिलने की उमीद है पर ध्यान रहे कि आप किसी को ज्यादा बड़ी रकम उधार न दें वरना आपको फायदे का लुत्फ उठाने का मौका नहीं मिलेगा। नए व्यवसाय शुरू करने के लिए भी अच्छा वक़्त है। आपको किसी भी तरह की लापरवाही से बचना होगा वरना धन की हानि निश्चित है। सूजबूझ से किया गया काम आपको लाभ देगा।

वैवाहिक जीवन

आपका दांपत्य जीवन इस वर्ष सामान्य रहेगा। आपको आपके पार्टनर से इस वर्ष कुछ ख़ास शिकायतें नहीं रहेंगी। आप अपने पार्टनर की खुशी के लिए इस वर्ष काफी पैसा खर्च करोगे...

[विस्तार से पढ़ने के लिए क्लिक करें](#)

नाम के अक्षर से जानें भविष्यफल



हमारा यह राशिफल उन जातकों के लिए है जिनके नाम का पहला अक्षर अंग्रेजी के U अक्षर से शुरू होता है। आज हम आपको बताएंगे कि राशिफल के अनुसार U नाम वाले लोगों के लिए वर्ष 2020 कैसा रहेगा।

चालिंयन न्यूमरोलॉजी के आधार पर “U” अक्षर छठे नंबर के स्थान पर आता है। 6 नंबर न्यूमरोलॉजी में शुक्र का होता है। जिसका मतलब यह हुआ है कि “U” लेटर वाले लोगों के लिए 2020 में शुक्र के योग और प्रतियोग से ही भिन्न-भिन्न तरह के फल मिलेंगे।

करियर और व्यवसाय

प्रोफेशनल लाइफ इस वर्ष थोड़ी हल्की गति से चल सकती है पर इसके बावजूद भी आपको प्रगति मिलती जाएगी। यानि कि आपको सफलता थोड़ा रुक के मिलेगी इसलिए धैर्य रखना बहुत ज़रूरी होगा। नौकरी में तबादले की बात चल सकती है जिसकी वजह से आपके मन में अशांति रह सकती है पर घबरायें नहीं क्योंकि फैसला आपके हक में ही होने वाला है। बिजनेस में आपके क्लाइंट्स आपकी पेमेंट्स देने में देरी कर सकते हैं जिसकी वजह से आपकी इनवेस्टमेंट्स पे फर्क पड़ेगा और आपको मुनाफ़ा कमाने में दिक्षित होगी। इसलिए आपके लिए ज़रूरी है कि आप नकद पैसे लेकर ही आप कोई काम करें। विदेश जाने के प्रोग्राम अचानक से स्थगित या कैंसल हो सकते हैं। आपका पार्टनर आपकी खुफिया बातें आपके विरोधी को बता सकता है इसलिए उन्हें हर बात बताना जायज नहीं है।

वैवाहिक जीवन

शादीशुदा जिंदगी में आपको संभलकर चलना होगा। आपको इस वर्ष अपने रिश्ते में कुछ कमी लगेगी जिसकी वजह से आपके दिल और दिमाग में एक अलग सी बेचैनी रहने वाली है।

विस्तार से पढ़ने के लिए [क्लिक करें](#)



हमारा यह राशिफल उन जातकों के लिए है जिनके नाम का पहला अक्षर अंग्रेजी के V अक्षर से शुरू होता है। आज हम आपको बताते हैं कि राशिफल 2020 के अनुसार V नाम वाले लोगों के लिए वर्ष 2020 कैसा रहेगा। चालिंयन न्यूमरोलॉजी के आधार पर “V” लेटर छठे नंबर के स्थान पर आता है। और 6 नंबर न्यूमरोलॉजी में शुक्र का होता है। इसका मतलब यह हुआ है कि “V” लेटर वाले लोगों को साल 2020 में शुक्र के योग और प्रतियोग से ही भिन्न-भिन्न तरह के फल प्राप्त होंगे। तो आईये जानते हैं कैसा रहेगा साल 2020 आपके लिए।

करियर और व्यवसाय

यह वर्ष आपके लिए काफ़ी क्रियेटिव रहने वाला है यानि कि इस वर्ष आप कुछ अलग ज़रूर करेंगे। इस वर्ष अगर आप कोई ऐसा काम करना चाहते हैं जो कि किसी महिला की सहायता से पूरा होना है तो आपको सफलता ज़रूर मिलेगी। अगर आप नौकरी करते हैं तो महिला का सहयोग आपको अच्छे फल दिला सकता है जिससे आपका रुतबा कार्यक्षेत्र में बढ़ेगा। आपके लिए विदेश से किसी काम का ऑफर भी इस साल आ सकता है इसलिए आपको इस चीज़ के लिए तैयार रहना है। अगर आप इस साल अपने बॉस या सीनियर्स के साथ किसी तरह की बहस में न पड़े तो आपको प्रमोशन मिल सकता है।

वैवाहिक जीवन

आपके जीवन में इस साल प्यार की अधिकता रह सकती है। हो सकता है कि आपका जीवनसाथी इस वर्ष आप पर खूब प्यार बरसाए। इस साल आप अपने जीवनसाथी को और आपका जीवनसाथी आपको रिस्पैक्ट देगा। अगर आपका विवाह हालही में हुआ है तो आपका जीवन साथी किसी तरह की खुशखबरी आपको इस वक्त सुना सकता है।

विस्तार से पढ़ने के लिए [क्लिक करें](#)



हमारा यह राशिफल उन जातकों के लिए है जिनके नाम का पहला अक्षर अंग्रेजी के W,X,Y,Z अक्षर से शुरू होता है। आज हम आपको बताएंगे कि राशिफल 2020 के अनुसार WXYZ नाम वाले लोगों के लिए वर्ष 2020 कैसा रहने वाला है।

करियर और व्यवसाय

आपके लिए यह साल बहुत मनमोहक रहेगा यानी कि आपको आपके करियर में काफी उछाल मिलेगा। आपके लिए विदेश से कोई जॉब की कॉल आ सकती है जिसका आपको बेसब्री से इंतजार था। आपके लिए बिजनेस में भी अच्छे अवसर दिख रहे हैं इस साल आप विदेशों से अच्छे संपर्क बनाएंगे और इन संपर्कों से आपको फायदा भी मिलेगा। आपको इस वर्ष पार्टनरशिप के बिजनेस में भी तरक्की मिलेगी। यदि इस साल आप पार्टनरशिप में बिजनेस शुरू करते हैं तो मुनाफा होने की पूरी संभावना नजर आ रही है।

वैवाहिक जीवन

आपके लिए शादीशुदा जीवन भी अच्छा रहेगा आपका जीवनसाथी इस दौरान आपका पूरा ख्याल रखेगा। अपने साथी का प्यार देखकर आपको भी बहुत संतुष्टि मिलेगी। उनका केयरिंग नेचर आपको उनके और करीब ले जाएगा। ससुराल पक्ष आपसे बहुत खुश रहेगा जिसकी वजह से आपका पार्टनर भी आपको दोगुना खुश रखेगा। साल के अंत में आपका किसी लंबी दूरी की यात्रा पर जाना हो सकता है यह यात्रा आपके लिए सुखद रहेगी। आपके जीवन में किसी मेहमान की दस्तक भी इस साल हो सकती है। इस साल आपको अपने संगी को दिल से इज्जत देनी चाहिए।

शिक्षा

शिक्षा आपके लिए काफी फयदेमंद रहने वाली है। इस वर्ष

आप अपना और अपने परिवार वालों का खूब नाम करेंगे। आपको इस वर्ष स्कॉलरशिप भी मिल सकती है। आप किसी ऐसी परीक्षा को पास कर लेंगे जो आप कई समय से नहीं कर पा रहे थे। सरकारी नौकरी के लिए की गयी तैयारी भी आपको खूब रास आने वाली है आप मन लगाकर पढ़ेंगे इसलिए आपको अच्छे परिणाम भी अवश्य मिलेंगे। एजुकेशन लोन भी आपका इस वर्ष अप्रूव हो जाएगा पर आपको यह सफलता अप्रैल के बाद ही मिलने वाली है इसलिए संयम बनाए रखें।

प्रेम जीवन

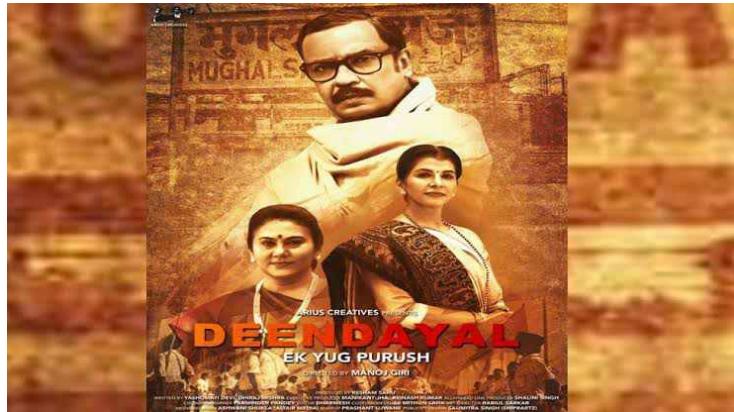
आपके लिए लव लाइफ काफी अच्छी और सिंपल रहने वाली है। आपका साथी आप पर भरोसा और विश्वाश रखेगा जिसकी वजह से आपको अपने रिश्ते पर गर्व महसूस होगा। आपका साथी शायद कुछ समय के लिए आपसे दूर हो जाए पर याद रखें यह दूरी काम की वजह से होगी इसलिए आपको ज्यादा परेशान नहीं होना चाहिए। इस साल आप अपने पार्टनर के नाम पर कुछ निवेश कर सकते हैं और इससे भविष्य में आपको फायदा मिल सकता है। इस साल आपका साथी आपको किसी परेशानी से उभार लाएगा जिसकी वजह से आप खुद को खुश किस्मत समझोगे और अपने साथी को और भी ज्यादा प्यार करने लग जाओगे। एक दूसरे से भावनाएं शेयर करना आप दोनों के लिए ही फायदेमंद रहेगा।

आर्थिक जीवन

आर्थिक जीवन में इस वर्ष आप खूब मुनाफा कमाने वाले हैं। शेयर बजार या फिर लॉटरी से संबंधित कार्यों में भी आपका भाग्य चमकेगा जिसकी वजह से आपको खूब धन लाभ होगा। किसी विवादित संपत्ति के बिक जाने के कारण आपको धन लाभ होगा और यह लाभ आपके बैंक बैलेंस को और भी बढ़ा देगा। आपकी नौकरी में भी आपको अच्छे फल मिलने की पूरी उम्मीद है...

विस्तार से पढ़ने के लिए [क्लिक करें](#)

ज्योतिष विशुद्ध ज्ञान है : इमरान हसनी



पान सिंह तोमर और पीएम नरेंद्र मोदी जैसी मशहूर बायोपिक में काम कर चुके एक्टर इमरान हसनी की तीसरी बायोपिक 'दीनदयाल - एक युग पुरुष' ५ नवंबर को रिलीज के लिए तैयार है. इस फिल्म में इमरान हसनी लीड रोल यानी पडित दीनदयाल उपाध्याय का किरदार निभाते दिखेंगे।

इमरान फिल्म को लेकर उत्साहित हैं तो बॉक्स ऑफिस नतीजों को लेकर थोड़ा चिंतित भी। क्योंकि कई बार बेहतरीन से बेहतरीन फिल्में टिकट खिड़की पर कई वजह से दर्शक नहीं खींच पाती। तो क्या फिल्मों की सफलता पूरी तरह भाग्य पर निर्भर है? इमरान कहते हैं- 'सिर्फ भाग्य पर नहीं, लेकिन भाग्य एक बड़ी वजह तो है ही।'

सॉप्टवेयर प्रोफेशनल रहे इमरान अब बॉलीवुड में सक्रिय कलाकार हैं। और सबसे बड़ी बात यह कि उनके पास धार्मिक मसलों से लेकर राजनीतिक मसलों पर अपनी राय है। ज्योतिष के विषय में पूछने पर वह कहते हैं "धर्म बहुत वृहद है जिसे तोड़ने मरोड़ने की गुंजाइश रहती है। गुमराह करने वाले धर्म के ठेकेदार यही करते हैं और एस्ट्रोलॉजी के साथ भी उन्होंने यही किया है। असल में ज्योतिष के कई

प्रकार हैं मसलन भारतीय ज्योतिष, वेस्टर्न ज्योतिष वगैरह। इस्लाम में इसे इल्म-ए-जफर और इल्म-ए-नुजुम कहते हैं। ये किसी तरह से शिर्क नहीं माना जा सकता। इस्लाम कहता है ज्यादा से ज्यादा इल्म हासिल करो। एस्ट्रोलॉजी तो विशुद्ध रूप से इल्म है।"

इमरान ज्ञान और इल्म का सम्मान करते हैं और आगे कहते हैं कि इल्म हासिल करना अच्छी बात है पर किसी चीज पर पूरी तरह निर्भर हो जाना कर्तई सही नहीं वो ज्योतिष ही क्यों न हो। मार्गदर्शन जरूर लेना चाहिए पर डिपेंड होना सही नहीं होता।

ज्योतिष और इसके इस्तेमाल से जुड़ी बड़ी दिलचस्प बात साझा करते हुए इमरान हसनी ने एस्ट्रोसेज मैगजीन से कहा कि, "आमतौर पर किसी से मिलिए और पूछिए कि ज्योतिष मानते हैं तो जवाब आता है - नहीं। लेकिन उस इंसान को अपनी राशि जरूर पता होती है। कई बार तो इस तरह से इंकार करने वाले लोगों की उंगलियां रक्त वाली अंगुठियों से भरी भी रहती हैं। अंगुठियों की ओर इशारा कर दो तो कुछ झेंप से जाते हैं और सारा ठीकरा मां पर फोड़ देते हैं, कि मां ने कहा पहन लो सो पहन लिया। इनका इगो इन्हें सोशली ज्योतिष की पॉवर एक्सेप्ट करने से रोकता है पर अपनी मां को अंधविश्वासी कहलावाने से इन्हें कोई परहेज नहीं होता। दरअसल ये डरते हैं कि समाज इन्हें कमजोर न समझ ले।"

ऐसे लोगों को इमरान सलाह देते हैं कि ज्योतिष को कमजोरी न समझें बल्कि इसे ताकत बनाएं।

बायोपिक में बेहतरीन परफॉर्मेंस देने के पीछे का मूलमंत्र क्या है पूछने पर इमरान कहते हैं कि काम वो करना चाहिए जो आपको खुशी और सुकून दे। सबसे बड़ा सुकून है अपने आप को जानना। खुद को जानने के क्रम में हम खुदा के करीब होते जाते हैं। खुदा के करीब होने के लिए सही रास्ता धर्म नहीं बल्कि आध्यात्म है। आध्यात्म में वो आनंद है



जो आपको मजहब की दीवारों के परे ले जाता है। इमरान आगे कहते हैं, “इस्लाम तो यहां तक कहता है कि आप खाना तब तक नहीं खा सकते हैं जबतक आपका पड़ोसी भूखा है, चाहे वो किसी भी धर्म का क्यों न हो। सभी धर्मों का सिखाया आध्यात्म तक ही जाता है पर जब तक अंडरलाइन कर हमें बता न दिया जाए तब तक हम समझ नहीं पाते।”

इमरान हसनी ऐसे कलाकार हैं जो अपनी एकिटंग और विचारों से कई मिथ तोड़ते दिखते आए हैं। पीएम नरेंद्र मोदी की शूटिंग के दौरान उन्होंने प्रधानमंत्री की सराहना करते हुए बताया था कि गुजरात दंगों के बाद नरेंद्र मोदी ने मुस्लिम समुदाय के हित के लिए बहुत कुछ किया पर पर ढिंढोरा नहीं पीटा। इमरान की अब जो बायोपिक आ रही है उसमें वो बीजेपी के संस्थापक का किरदार निभाते दिखेंगे। फिल्मों के सेलेक्शन की बेबाक शैली इमरान के विचारों में भी दिखती है। इमरान को पुनर्जन्म में विश्वास है। वो मानते हैं कि इस्लाम में पुर्नजन्म का जिक्र नहीं है इसका मतलब ये नहीं इस्लाम पुनर्जन्म को खारिज करता है। खारिज करना और जिक्र न होना दो अलग बातें हैं।

इमरान हसनी जयपुर के रहने वाले हैं और अपनी आने वाली बायोपिक को लेकर बेहद एक्साइटेड हैं। द डर्टी पिक्चर, स्लमडॉग मिलिनेयर, डी डे जैसी हिट फिल्मों का हिस्सा रह चुके इमरान को एस्ट्रोसेज पत्रिका की ओर से देर सारी शुभकामनाएं।

प्रस्तुति - ज्योति ठाकुर

AstroSage
India's No. 1 Astrology Portal & App

ज्योतिषी से प्रश्न पूछें

- के.पी. सिस्टम
- नाड़ी ज्योतिष
- लाल किताब
- ताजिक ज्योतिष

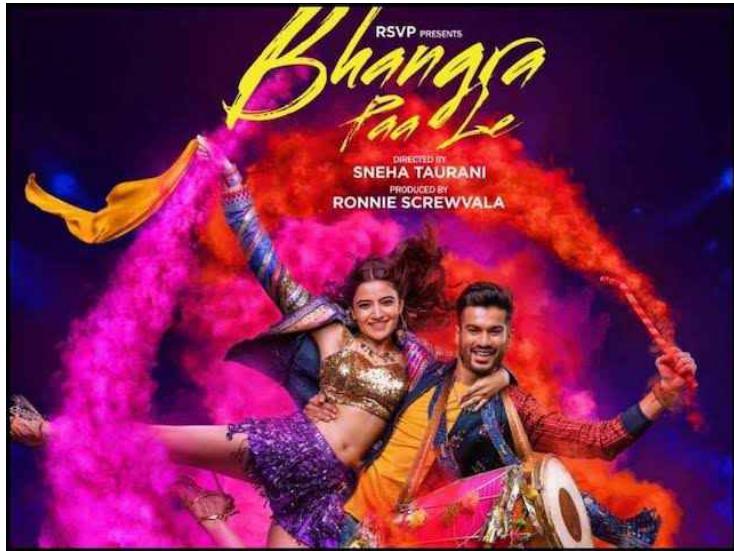
अभी खरीदें »

संपर्क करें

+91-7827224358, +91-9354263856

Email:- sales@ojassoft.com
www.astrosage.com

भांगड़ा पा ले



रिलीज़ की तारीख - 01 नवंबर 2019

रिलीज़ का समय- सुबह 9 बजे

रिलीज़ की जगह- मुंबई

‘भांगड़ा पा ले’ फिल्म के नाम अनुसार कुंडली

1. अवकहड़ा चक्र के अनुसार, ‘भांगड़ा पा ले’ फिल्म का नाम मूल नक्षत्र के तीसरे चरण के अंतर्गत आता है, और इस नक्षत्र का ये चरण धनु राशि के अंतर्गत आता है, जिसका स्वामी ग्रह गुरु बृहस्पति होता है। वहीं दूसरी ओर मूल नक्षत्र का स्वामी ग्रह केतु है (केवल विशेषतरी दशा प्रणाली में)

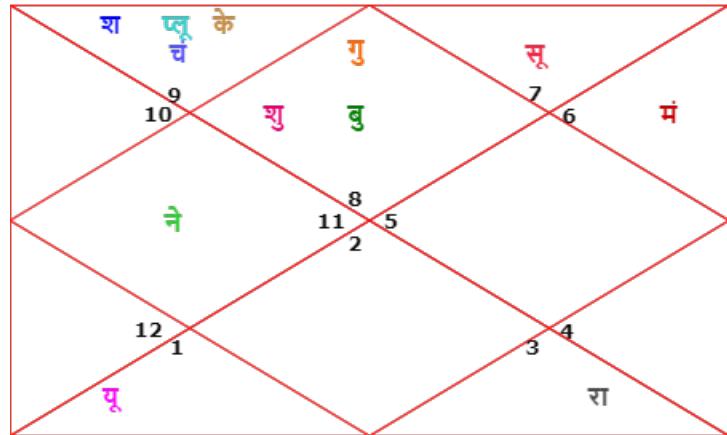
2. ऊपर दी गई कुंडली को समझें तो उसमें धनु राशि दूसरे भाव में मौजूद है। यह भाव 7 वें भाव से 8 वें स्थान पर आता है, जिससे आमतौर से लोकप्रियता, प्रसिद्धि, नाम

का पता चलता है और फिल्म की बात करें तो ये भाव ‘हिट’ का बोध करता है।

3. कुंडली के अनुसार, धनु का दूसरे भाव में होना वहाँ मौजूद शनि, केतु और चंद्र के साथ युति का निर्माण कर रहा है।

4. ज्योतिष की माने तो शनि और केतु ऐसे ग्रह होते हैं जो सिनेमाई कला या भौतिकवादी विकास या सफलता का कभी समर्थन नहीं करते हैं। इसके साथ ही चंद्रमा जो पानी से संबंधित ग्रह होता है उसका अग्नि चिह्न (धनु) में होना बहुत अच्छा संकेत नहीं देता है। जिससे ये घर कमज़ोर एवं पीड़ित नज़र आ रहा है।

5. चलिए अब गणना करते हैं गुरु बृहस्पति की शक्ति की, जो धनु राशि का स्वामी ग्रह होता है। उपरोक्त कुंडली में बृहस्पति पहले यानी लग्न भाव में मौजूद है, जो फिल्म के लिहाज से तो अच्छा संकेत है, परन्तु वृश्चिक राशि में होना बृहस्पति के लिए अच्छा नहीं देखा जा रहा है।



6. वैदिक ज्योतिष में गुरु बृहस्पति कुछ ग्रहों से शत्रुता का भाव रखता है, जिसमें से शुक्र भी एक ग्रह है। वहीं बुध के भी बृहस्पति से अच्छे संबंध नहीं देखें जाते हैं। इस कारण बृहस्पति का इस भाव में अपने शत्रु ग्रहों के साथ होना उसे निर्बल एवं पीड़ित करेगा।

7. ग्रहों-नक्षत्रों की ये युति फिल्म के विरुद्ध जा सकती है।

8. इसलिए, यह फिल्म निर्माता के लिए 'भांगड़ा पा ले' फिल्म एक सफल मिशन नहीं होगी और फिल्म रिलीज उनके लिए एक कठिन समय होगा।

9. नोट: जब बृहस्पति सप्तम भाव को दृष्टि देता है (अगर वृषभ या कन्या राशि वहां मौजूद हो) तब ये सातवें घर कारकत्व को बर्बाद कर देगा, जिसका अर्थ है 'हिट' नहीं होने देगा।

ऊपर दी भविष्यवाणी केवल और केवल ग्रहों-नक्षत्रों की स्थिति के आधार पर की गई है। इसलिए इसमें परिवर्तन की गुंजाईश अधिक है।

**Know when your
Destiny will shine!**

**Brihat
Horoscope**

Buy Now >

Price @ Just ₹ 999/-

ज्योतिष सीखें भाग-2

सभी 'पापी' बुरे नहीं



पुर्नीत पाण्डे

पिछली बार (ज्योतिष सीखें भाग-1) हमने राशि, ग्रह, एवं राशि स्वामियों के बारे में जाना। वह अत्यन्त ही महत्वपूर्ण सूचना थी और उसे कण्ठस्थ करने की कोशिश करें। इस बार हम ग्रह एवं राशियों के कुछ वर्गीकरण को जानेंगे जो कि फलित ज्योतिष के लिए अत्यन्त ही महत्वपूर्ण हैं। पहला वर्गीकरण शुभ ग्रह और पाप ग्रह का इस प्रकार है -

शुभ ग्रह: चन्द्रमा, बुध, शुक्र, गुरु हैं

पापी ग्रह: सूर्य, मंगल, शनि, राहु, केतु हैं

साधारणत चन्द्र एवं बुध को सदैव ही शुभ नहीं गिना जाता। पूर्ण चन्द्र अर्थात् पूर्णिमा के पास का चन्द्र शुभ एवं अमावस्या के पास का चन्द्र शुभ नहीं गिना जाता। इसी प्रकार बुध अगर शुभ ग्रह के साथ हो तो शुभ होता है और यदि पापी ग्रह के साथ हो तो पापी हो जाता है।

यह ध्यान रखने वाली बात है कि सभी पापी ग्रह सदैव ही बुरा फल नहीं देते। न ही सभी शुभ ग्रह सदैव ही शुभ फल देते हैं। अच्छा या बुरा फल कई अन्य बातों जैसे ग्रह का स्वामित्व, ग्रह की राशि स्थिति, दृष्टियों इत्यादि पर भी निर्भर करता है जिसकी चर्चा हम आगे करेंगे।

जैसा कि ऊपर कहा गया एक ग्रह का अच्छा या बुरा फल कई अन्य बातों पर निर्भर करता है और उनमें से एक है ग्रह की राशि में स्थिति। कोई भी ग्रह सामान्यत अपनी उच्च राशि, मित्र राशि, एवं खुद की राशि में अच्छा फल देते हैं। इसके विपरीत ग्रह अपनी नीच राशि और शत्रु राशि में बुरा फल देते हैं।

ग्रहों की उच्चादि राशि स्थिति इस प्रकार है

ग्रह	उच्च राशि	नीच राशि	स्वग्रह राशि
1. सूर्य	मेष	तुला	सिंह
2. चन्द्रमा	वृषभ	वृश्चिक	कर्क
3. मंगल	मकर	कर्क	मेष, वृश्चिक
4. बुध	कन्या	मीन	मिथुन, कन्या
5. गुरु	कर्क	मकर	धनु, मीन
6. शुक्र	मीन	कन्या	वृषभ, तुला
7. शनि	तुला	मेष	मकर, कुम्भ
8. राहु	धनु	मिथुन	
9. केतु	मिथुन	धनु	

ऊपर की तालिका में कुछ ध्यान देने वाले बिन्दु इस प्रकार हैं -

1. ग्रह की उच्च राशि और नीच राशि एक दूसरे से सप्तम होती हैं। उदाहरणार्थ सूर्य मेष में उच्च का होता है जो कि राशि चक्र की पहली राशि है और तुला में नीच होता है जो कि राशि चक्र की सातवीं राशि है।

2 सूर्य और चन्द्र सिर्फ एक राशि के स्वामी हैं। राहु एवं केतु किसी भी राशि के स्वामी नहीं हैं। अन्य ग्रह दो-दो राशियों के स्वामी हैं।

3 राहु एवं केतु की अपनी कोई राशि नहीं होती। राहु-केतु की उच्च एवं नीच राशियां भी सभी ज्योतिषी प्रयोग नहीं करते हैं।

ज्योतिषी से प्रश्न पूछें



- के.पी. सिस्टम
- लाल किताब
- नाड़ी ज्योतिष
- ताजिक ज्योतिष

अभी पूछें »

स्पेशल कीमत:-

₹299/-

संपर्क करें

+91-7827224358 ,

+91-9354263856

Email:- sales@ojassoft.com

www.astrosage.com